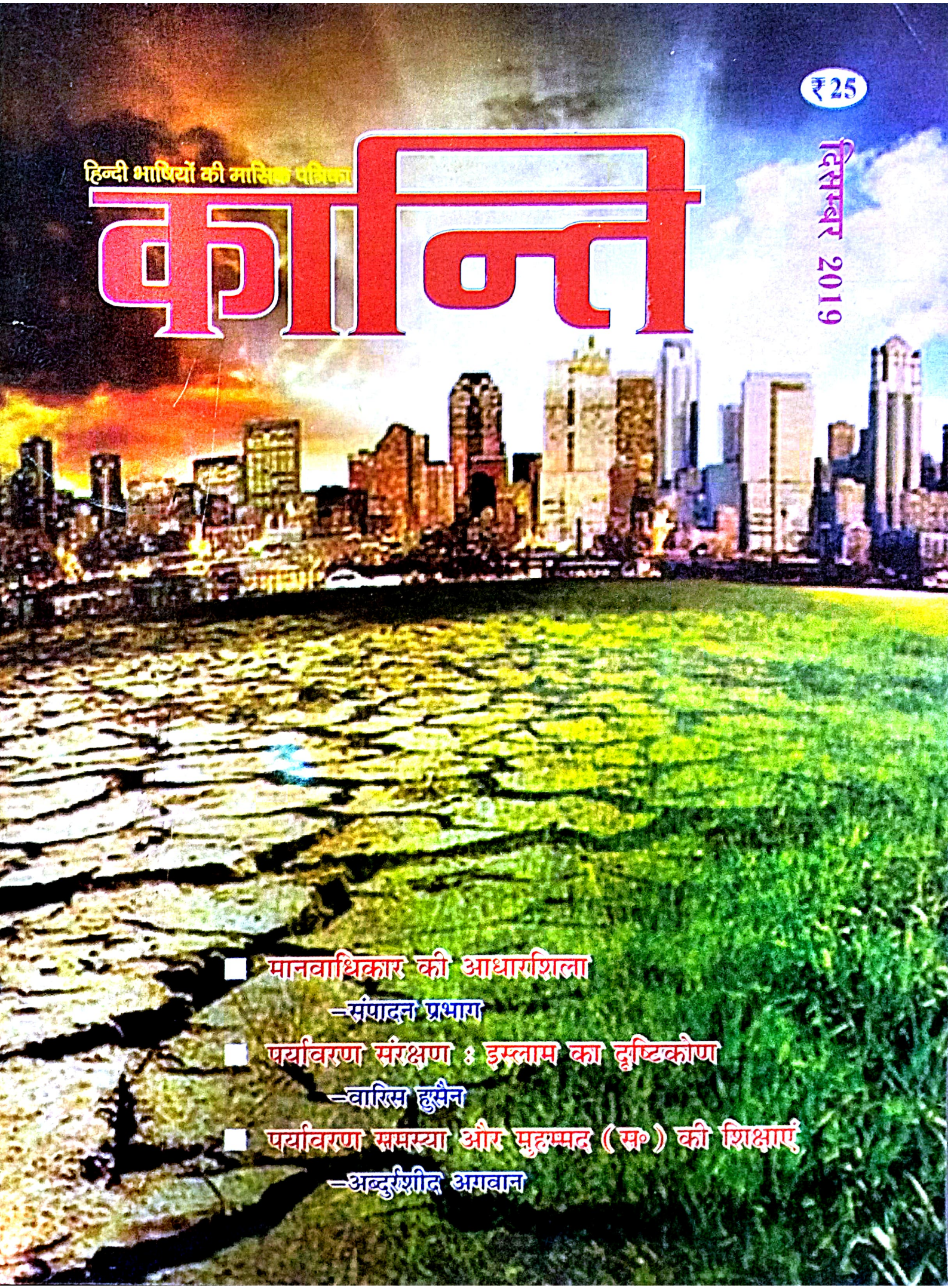
₹ 25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
क्रान्ति
दिसम्बर 2019
मानवाधिकार की आधारशिला
–संपादन प्रभाग
पर्यावरण संरक्षण : इस्लाम का दृष्टिकोण
–वारिस हुसैन
पर्यावरण समस्या और मुहम्मद (स॰) की शिक्षाएं
–अब्दुर्रशीद अगवान

# ADAM'S HOME ENGLISH MISSION SCHOOL

Noornagar,Near Waris Colony Mango,Jamshedpur

ESTD 1989



Providing :Value based Education,
Personalised Care and Individual Attention,
Experrienced,Dedicated, and Committed Staff.

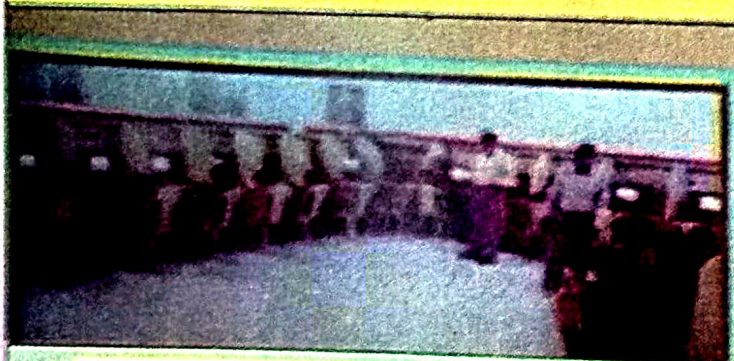



No Objection Certificate (NOC) granted by Govt.Of Jharkhand for affiliation to ICSE board New Delhi

**Choudhary Hasibur Rahman**
Secretary
Mob.:9934176679

**Prof. Susanna Hansdak**
Director
Mob.:9431154812

Run & Managed By:
Noorun Nisa Education & Welfare Society(Regd.)
Ph:0657 6419169

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

वर्ष 29 अंक 06 दिसम्बर 2019

ऐ नबी, हमने तो तुमको दुनिया वालों के लिए दयालुता बनाकर भेजा है। उनसे कहो, "मेरे पास जो प्रकाशना आती है वह यह है कि तुम्हारा पुन्य प्रभु सिर्फ़ एक पुन्य है, फिर क्या तुम आज्ञाकारी होते हो ?"

–क़ुरआन

**संपादक**

**डॉ० मुहम्मद अहमद**

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी–314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी–314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

**सहयोग राशि**

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

**वैचारिकी**

# सफलता का मार्ग

ईरान के नगर शीराज़ में था एक ज्ञानी महान ।
एक दिन उसके घर आये कुछ युवा मेहमान ।
ज्ञानी से वे लगे पूछने सफल जीवन का राज़ ।
करना था उन सबको भी अब गृहहस्ती का आग़ाज़,
परिचय लेकर बोले ज्ञानी आप सबका धन्यवाद,
आज रात का भोजन करें सब यहीं हमारे साथ ।
रात हुई तो ज्ञानी के घर मित्र पुनः वे आये,
आदर और सम्मान से उनको ज्ञानी घर में लाए ।
खाना था तैयार वहां सब बैठे चारों ओर,
और उनके लिए बीच में खाना था स्वादिष्ट ।
गज़-गज़ भर के चम्मच सबको देकर हाथों हाथ,
बोले ज्ञानी पहले खा लें, फिर होती है बात ।
लम्बा चम्मच देख के लेकिन युवक हरेक घबराया,
कोशिश तो की सभी ने लेकिन चमचा मुंह तक न आया ।
भूखे रह गये युवक वे सारे कोई खा नहीं पाया,
पर खाने की सुगंध ने उनकी भूख को और बढ़ाया ।
अब ज्ञानी ने अपने हाथ में चम्मच एक उठाया,
उठा-उठाकर खाना उनसे एक युवक को खिलाया ।
यह देखकर हरेक युवक ने अपना चम्मच उठाया,
और सभी ने सामने बैठे मित्र को खाना खिलाया ।
कोई भूखा रहा नहीं अब सबने खाना खाया,
एक दूजे की मदद से यूं मित्रों ने लाभ उठाया ।
यूं ज्ञानी ने सफल जीवन का उनको राज बताया,
सफल हुआ वह, जिसने है औरों को सफल बनाया ।
मार्ग हमारी सफलता का औरों की सफलता से है आया,
रहिमन का भी यही विचार था, दोहे में फ़रमाया ।

"यों रहीम सुख होत हैं उपकारी के संग ।
बांटन वारे को लगे जों मेहंदी के रंग ।।"

● मुशर्रफ़ अली



## कहां क्या है ?


| | | |
|---|---|---|
| सफलता का मार्ग (वैचारिकी) | –मुशर्रफ़ अली | 3 |
| क़ुरआन ज्योति | | 5 |
| हदीस मंजरी | | 6 |
| पालनहार को पहचानना ज़रूरी (संपादकीय) | | 7 |
| जनभावनाओं का आकर्षक प्रतिबिंब (आपके पत्र) | | 9 |
| इस जीवन के बाद क्या? (आस्था) | –मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी | 11 |
| मनुष्य का दायित्व (इस्लामी जीवन) | –मुहम्मद इक़बाल मुल्ला | 15 |
| मानवाधिकार की आधारशिला पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) का विदायी अभिभाषण | –संपादन प्रभाग | 17 |
| हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) : पर्यावरण विशेषज्ञ | –मुशर्रफ़ अली | 21 |
| क़ैदियों के संतोष से गार्ड प्रभावित (चेतना) | | 25 |
| पर्यावरण संरक्षण : इस्लाम का दृष्टिकोण (विशेष आयोजन) | –वारिस हुसैन | 26-27 |
| वर्तमान पर्यावरण समस्या और मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाएं | –अब्दुर्रशीद अगवान | 31 |
| पर्यावरण और हमारा दायित्व (संकलित) | | 35 |
| अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा (नेकी के सिपाही) | –अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा | 37 |
| इस्लाम का इतिहास (अतीत) | | 41 |
| सोशल मीडिया : नियमों एवं निजता के मध्य संतुलन होना चाहिएच | –जुनैद अली | 43 |
| रक्षक (कहानी) | –अबरार मुहसिन | 45 |
| वाइल्ड ब्रूक : जंगल के बीच अल्हड़ नदी (बालवीथी) | | 49 |

# क़ुरआन ज्योति

**( 12 ) तो ऐ पैग़म्बर ! कहीं ऐसा न हो कि तुम उन चीज़ों में से किसी चीज़ का ( वर्णन करने से ) छोड़ दो जो तुम्हारी ओर वह्य की जा रही हैं और इस बात पर दिल तंग हो कि वे कहेंगे, "इस व्यक्ति पर कोई ख़ज़ाना क्यों न उतारा गया ?" या यह कि "इसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न आया ?" तुम तो केवल चेतावनी देने वाले हो, आगे हर चीज़ का हवालेदार अल्लाह है ।[13]**

**–क़ुरआन, 11:12**

13. इस कथन का अर्थ समझने के लिए उन परिस्थितियों को दृष्टि में रखना चाहिए जिनमें यह कहा गया है कि 'मक्का एक ऐसे क़बीले की राजधानी है जो तमाम अरब पर अपनी धार्मिक सत्ता, अपने धन व व्यापार और अपने राजनीति दबदबे के कारण छाया हुआ है । ठीक इस स्थिति में जबकि ये लोग अपनी पराकाष्ठा पर हैं, इस आबादी का एक व्यक्ति उठता है और एलानिया कहता है कि जिस धर्म के तुम गुरु हो, वह पूर्ण रूप से पथभ्रष्टता है । रहन-सहन की जिस व्यवस्था के तुम सरदार हो, वह अपनी जड़ तक गली और सड़ी हुई व्यवस्था है । अल्लाह का अज़ाब तुम पर टूट पड़ने के लिए तुला खड़ा है और तुम्हारे लिए उससे बचने की कोई शक्ल इसके सिवा नहीं है कि सत्य धर्म और उस मंगलकारी व्यवस्था को ग्रहण कर लो जो मैं अल्लाह की ओर से तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर रहा हूं । उस व्यक्ति के साथ उसका पवित्र आचरण और उसकी उचित बातों के सिवा कोई ऐसी असाधारण वस्तु नहीं है जिससे आम लोग उसे अल्लाह की ओर से भेजा हुआ समझें और आसपास की परिस्थितियों में भी धर्म व नैतिकता और सभ्यता की गहरी बुनियादी ख़राबियों के सिवा कोई ऐसी प्रत्यक्ष निशानी नहीं है जो अज़ाब के आने की निशानदेही करती हो । बल्कि इसके विपरीत तमाम खुली निशानियां यही प्रकट कर रही हैं कि इन लोगों पर अल्लाह की (और उनके विश्वास के अनुसार देवताओं की) बड़ी कृपा है और जो कुछ वे कर रहे हैं, ठीक ही कर रहे हैं । ऐसी परिस्थितियों में यह बात कहने का परिणाम यह होता है और इसके सिवा कुछ हो भी नहीं सकता कि कुछ बहुत ही सही दिमाग़ वाले और सच्चाई तक पहुंचने वाले लोगों के सिवा बस्ती के सब लोग उसके पीछे पड़ जाते हैं । कोई अत्याचार व अन्याय करके उसको दबाना चाहता है, कोई झूठे आरोपों और ओछी आपत्तियों से उसकी हवा उखाड़ने की कोशिश करता है, कोई पक्षपात के कारण मुंह फेर लेने में उसकी हिम्मत तोड़ता है और कोई हंसी उड़ाकर, आवाज़ें और फब्तियां कसकर और ठठ्ठे लगाकर उसकी बातों को हवा में उड़ा देने का यत्न करता है । यह स्वागत जो कई साल तक उस व्यक्ति की दावत का होता रहता है, जैसा कुछ दिल तोड़ने वाला और निराश करने वाला हो सकता है, स्पष्ट है । बस यही स्थिति है जिसमें अल्लाह अपने पैग़म्बर की हिम्मत बंधाने के लिए ज़ोर देकर कहता है कि अच्छी परिस्थितियों में फूल जाना और बुरी परिस्थितियों में निराश हो जाना छिछोरे लोगों का काम है । हमारी दृष्टि में मूल्यवान मनुष्य वह है जो नेक हो और नेकी के रास्ते पर धैर्य, जमाव और साहस के साथ

(शेष पृष्ठ 16 पर)

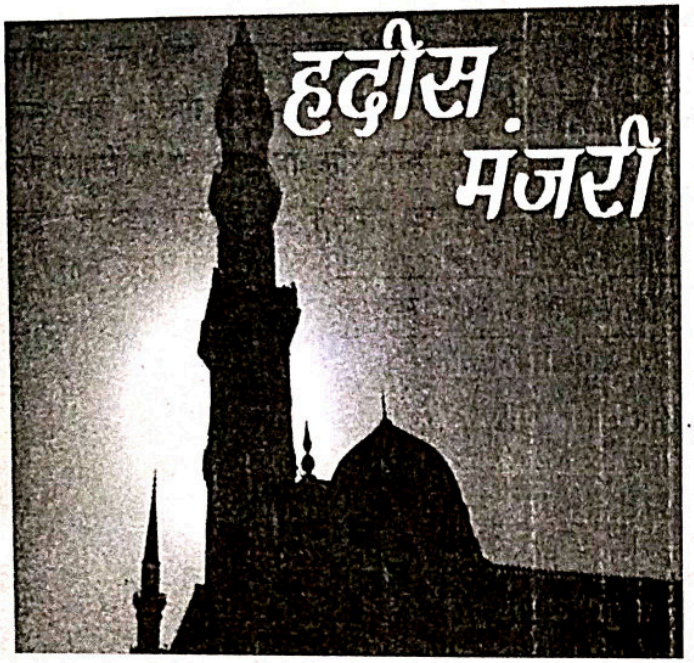


# स्त्रियों के विषय में वसीयत

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो क्योंकि स्त्री पसली से पैदा की गयी है । और पसली का सबसे टेढ़ा भाग उसका ऊपरी भाग होता है । अगर तुम उसे सीधा करने की कोशिश करोगे, तो उसे तोड़कर रख दोगे और अगर उसे छोड़ दोगे तो वह बराबर टेढ़ी ही रहेगी । अत: औरतों के साथ अच्छा व्यवहार किया करो ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अम्र बिन अल-अहवस अल-जोसमी (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने 'हज्जतुलविदा' (आप सल्ल॰ के अन्तिम हज) के अवसर पर नबी (सल्ल॰) को सुना । आपने अल्लाह तआला की स्तुति और तारीफ़ की और नसीहत की । इसके बाद आपने कहा : "सावधान ! स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो क्योंकि वे तुम्हारे पास क़ैद हैं । (स्त्री-संभोग) के सिवा तुम उनके किसी चीज़ के मालिक नहीं हो, किन्तु यह कि वे स्पष्ट अशोभनीय कर्म करें । और अगर वे ऐसा करें, तो उन्हें अपने बिस्तरों में तन्हा छोड़ दो और उन्हें मारो, ऐसी मार जो बहुत कष्टदायक न हो । फिर अगर वे तुम्हारी बात मान लें तो उनके विरुद्ध कोई राह न ढूंढो । जान लो कि तुम्हारी स्त्रियों पर तुम्हारा हक़ है और तुम पर स्त्रियों का हक़ भी है । तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि वे तुम्हारे बिस्तर पर किसी ऐसे व्यक्ति को न बिठाएं जिसे तुम पसन्द नहीं करते और न तुम्हारे घरों में किसी ऐसे व्यक्ति को आने की अनुमति दें जिसे तुम नापसन्द करते हो । जान लो कि तुम पर उनका यह हक़ भी है कि तुम उनके कपड़े और खाने के मामले में उनके साथ अच्छी रीति अपनाओ ।"

–तिरमिज़ी

● हज़रत मुआविया बिन हैदह (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल, हममें से किसी की स्त्री का उस पर क्या हक़ है ? आपने कहा : "यह कि जब तुम खाओ, तो उसे भी खिलाओ और जब तुम कपड़े पहनो, तो उसे भी पहनाओ और उसके मुंह पर न मारो और न उससे यह कहो कि अल्लाह तुझे अच्छाई से वंचित रखे और न उसे अलग करो किन्तु इस तरह कि वह घर ही में रहे ।"

–अबू दाऊद

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "मोमिनों में ईमान की दृष्टि से सबसे पूर्ण वह है जो उनमें अख़्लाक़ की दुष्टि से सबसे अच्छा हो । और तुममें सबसे अच्छा वह है जो अपनी स्त्रियों के प्रति अच्छा हो ।"

–अबू दाऊद

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "दुनिया एक सुख-सामग्री है और उसकी बेहतरीन सुख-सामग्री नेक स्त्री है ।"

–मुस्लिम

('रियाजुस्सालिहीन' से)

**इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें**

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

# पालनहार को पहचानना ज़रूरी

अल्लाह की प्रसन्नता और लोक-परलोक की सफलता प्राप्त करना प्रत्येक मानव को अभीष्ट होना चाहिए । यह उसी एक जीवन-प्रणाली के द्वारा हो सकती है जो मानव-जाति के संगठन को अस्त-व्यस्त नहीं करती और जो उसके विचार व व्यवहार को द्वंद्वात्मक संघर्ष में ग्रस्त नहीं करती और जो अंततः मानव-प्रकृति और जगत-प्रकृति से नहीं टकराती । यही इस्लामी जीवन प्रणाली है । ईश्वर की ओर से अवतरित प्रत्येक धर्म मानव के लिए धारणा एवं आस्था संबंधी आधार प्रस्तुत करता है, जिस पर उसके आत्मिक एवं व्यावहारिक जीवन की स्थापना होती है । ईश्वरीय धर्म मानव को उसके पालनकर्ता प्रभु की ओर वापस बुलाने और उसके जीवन-व्यवस्था को एक विशिष्ट प्रणाली में परिणत करने आता है ताकि वह लोगों की अन्तरात्मा और उनके व्यवहार, उनकी आन्तरिक अनुभूति और कार्यकलाप एवं उसकी गतिविधि तथा प्राकृतिक नियमों के बीच एकरूपता और एकरसता पैदा करे । ईश्वर की ओर से अवतरित प्रत्येक धर्म इसलिए आता है कि वह व्यावहारिक जगत में कार्यान्वित हो और लोग जीवन के समस्त कार्यकलापों में उसका अनुपालन करें । वह इसलिए नहीं आता कि वह लोगों की अन्तरात्मा में मात्र चेतना व अनुभूति बनकर रहे और न उसके आने का उद्देश्य यह होता है कि केवल नैतिक क्षेत्र में आत्मा को संवारे, वह इसलिए भी नहीं आता कि उपासना-गृहों और मस्जिदों में केवल उपासना-पद्धति बनकर रह जाए और न उसका अवतरण केवल निजी मामलों के लिए होता है, जो मानव-जीवन का केवल एक पहलू है । कुरआन में है : "और हमने जो रसूल भी भेजा इसीलिए भेजा कि ईश्वर की अनुज्ञा से उसके आदेशों का पालन किया जाए ।" (कुरआन, 4:64)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) उसी इस्लाम को लेकर आये जो दूसरे पैग़म्बर लाए थे । आपने भी अपने से पहले की आसमानी शरीअतों (ईश्वरीय धर्म-विधानों) का खंडन नहीं किया, बल्कि उनकी पुष्टि और उनका संरक्षण किया, क्योंकि आपकी रिसालत अन्तिम और सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए है । वह मानव की भलाई और मार्ग-जीवन की घोषणा और उन आधारों की पूर्ण व्याख्या करती है जिन पर मानव-जीवन की उस व्यवस्था की स्थापना होती है जो लोगों को अज्ञान से निकालकर ईश-भक्ति और ईश-विधान की ओर ले जाती है और उनके हृदयों को ईश-भय की ओर प्रेरित करती है । कुरआन में है–"और हमने तुम्हारी ओर यह किताब हक़ के साथ उतारी है, अपने से पहले की किताब की पुष्टि करने वाली है, और उसकी संरक्षक है, तो तुम लोगों के बीच उनके अनुसार फ़ैसला करो जो ईश्वर ने उतारा है, और जो सत्य तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़कर उनकी इच्छाओं का अनुपालन न करना । हमने तुममें से प्रत्येक के लिए एक धर्म-विधान और एक कर्म-पथ निश्चित किया । और यदि ईश्वर चाहता तो तुम सबको एक गिरोह बना देता । परन्तु उसने ऐसा नहीं किया ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारी परीक्षा ले । तो भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो । तुम सबको ईश्वर की ओर लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जिसमें तुम विभेद करते रहे हो । और यह कि तुम उनके बीच उनके अनुसार फ़ैसला करो जो ईश्वर ने उतारा है, और इनकी इच्छाओं का पालन न करो, और उनसे सजग रहो कि कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ ईश्वर ने तुम्हारी ओर भेजा है उसके किसी आदेश से वे तुम्हें बहका दें । फिर यदि वे मुंह मोड़ें, तो जान लो कि ईश्वर ही उन्हें उनके कुछ गुनाहों के कारण, संकट में डालना चाहता है । और बहुत से लोग अवज्ञाकारी हैं । क्या वे अज्ञान (कुफ़्र) का फ़ैसला चाहते हैं ? विश्वास रखने वालों के लिए ईश्वर से अच्छा फ़ैसला करने वाला कौन है" (कुरआन, 5:48)। प्रत्येक धर्म जो ईश्वर की ओर से आया, उसका उद्देश्य लोगों को एक ईश्वर की प्रभुता और एक ईश्वरीय प्रणाली की ओर ले जाना था । इसी तौर पर निरंतर रसूल आते रहे, जिनके बीच धर्म-विधान के कुछ आंशिक ब्योरों में विभेद पाया जाता है, परन्तु मूल व्यवस्था एवं धारणा और मूल एवं मुख्य लक्ष्य में वे सब के सब एकमत रहे और यह लक्ष्य था–लोगों को बन्दों की दासता से निकालकर ईश्वर और केवल ईश्वर का दास बनाना और अन्य नाशवान प्रभुओं और स्वामियों का इस प्रकार निषेध करना कि दासता और प्रभुता केवल ईश्वर ही के लिए रहे । आइए, हम सब अपने रब (पालनकर्ता-प्रभु) को पहचानें और उसका रंग धारण करें ।

हज़रत अबू अय्यूब
ख़ालिद बिन ज़ैद अल-अंसारी (रज़ि॰)
से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुझे वह काम बताइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे और दोज़ख़ से दूर रखे ? इस पर नबी (सल्ल॰) ने कहा : "अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराओ, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और नाते-रिश्ते को जोड़े रखो।"
(बुख़ारी, मुस्लिम)

---

*A Well Wisher*

**CONTINENTEL**
**LEATHER**
**KOLKATA**

# जनभावनाओं का आकर्षक प्रतिबिंब

जनभावनाओं का आकर्षक प्रतिबिंब मासिक 'कान्ति' का नवीनांक अक्तूबर 2019 मिला । बड़ी ख़ुशी हुई । आभार ।

'कान्ति' में वैचारिक धरातल पर दिनोंदिन सराहनीय परिवर्तन होता जा रहा है । पिछले अंक की भांति प्रस्तुत अंक में भी आपका संपादकीय 'परिवार नियोजन का सच' बहुत विचारणीय तथ्यपूर्ण और सारगर्भित है । मैं स्वयं इसके सख़्त ख़िलाफ़ हूं । प्रकृति द्वारा मानवता को प्रदान की गयी वंशवृद्धि की इस नेमत में सरकार अथवा प्रशासन द्वारा अनुचित हस्तक्षेप करना किसी सीमा तक भी न्यायोचित नहीं कहा जा सकता । मगर 1975 में कांग्रेस की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी द्वारा देश में आपात स्थिति घोषित करके निरीह भारतीय जनता पर बलपूर्वक परिवार नियोजन थोपना भीषण अत्याचार से कम नहीं कहा जा सकता । जिसका स्वयं मैं भुक्तभोगी हूं । मगर इससे पहले ही मेरी सात संतान अस्तित्व में आ चुकी थी । अर्थात पांच पुत्र और दो पुत्रियां, जिन्होंने मुझे ग्यारह पोते-पोतियों का दादा और सात दोहते-दोहतियों का नाना बनने का गौरव प्रदान किया है । इसकी मुझे स्वाभाविक प्रसन्नता है ।

इसी प्रकार 'बढ़ती जनसंख्या-वरदान या अभिशाप' भी संपादन प्रभाग द्वारा तर्कपूर्ण और तथ्यों पर आधारित आलेख विशेष विचारणीय है । कहा जाता है कि मनुष्य ज़न्म लेते समय अपने दोनों हाथों की बन्द मुट्ठी में अपना भाग्य स्वयं लेकर आता है । विश्व में कई है जो जनसंख्या के अकाल का कष्ट भोग रहे हैं ।

मां के चाहे जितने पुत्र हो जाएं वे हमेशा कम ही रहते हैं । शायद इसी सोच का परिणाम है कि वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारत की सम्मिलित जनसंख्या जिनमें वर्तमान पाकिस्तान और बंगलादेश की आबादी भी संयुक्त रूप से सम्मिलित थी, केवल छत्तीस करोड़ थी, जो अब बढ़कर एक अरब तीस करोड़ हो चुकी है । यह स्थिति तो तब है जब बलपूर्वक किये गये परिवार नियोजन के दुष्प्रभाव से अब संतति की संख्या एक या दो तक सीमित होकर रह गयी है । संतान अपने मां-बाप की शक्ति होती है, जो प्राकृतिक वरदान के रूप में उन्हें मिलती है । इसे नियंत्रित करके सीमित रखना एक मानवीय अपराध है, जिसे प्रत्येक संभव उपाय करके रोका जाना चाहिए ।

इस समय मैं अपने निजी जीवन की ढलती वृद्धावस्था के इस संध्याकाल में पहुंचकर 86 वर्षीय वरिष्ठ व्यक्तित्व का धनी हूं । मैंने अपनी इसी लंबी जीवन यात्रा का सचित्र विवरण एक पुस्तक 'भविष्य दर्पण' के रूप में लिखा है, संभावना है कि निकट भविष्य में ही यह जागरूक और जिज्ञासु पाठकों को उपलब्ध हो सकेगी । विश्वास है आपके द्वारा 'कान्ति' यथापूर्व मुझे नियमित रूप से भेजी जाती रहेगी ।

**पंडित बी॰एन॰ मुदगिल**
रोहतक (हरियाणा)

## 'मां' ने आखें नम कर दीं

कान्ति का सितम्बर 2019 अंक बहुत अच्छा लगा । पहले ही पन्ने पर छपी वैचारिकी–"घबराहट कैसी" ख़ुदा पर यक़ीन बढ़ाने वाली रचना है । दुनिया की चकाचौंध ने आजकल ज़्यादातर लोगों का ख़ुदा के होने और ख़ुदा की ओर से होने के यक़ीन को कमज़ोर कर दिया है । कई लोगों का ख़ुदा पर यक़ीन बहुत गिर गया है । इस रचना में दिल को झकझोरने की क्षमता है ।

बाक़ी लेख भी अच्छे हैं ख़ासकर पेज नम्बर 26 पर छपा 2014 का सऊदी अरब में मां के क़ब्ज़े का मुक़दमा का वर्णन सटीक है, जिसने आंखें नम कर दीं ।

पेज नम्बर 15 पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) द्वारा हज्जतुल विदा के मौक़े पर अराफ़ात के मैदान में दिया गया भाषण प्रकाशित करके आप ने अच्छा काम किया है ।

इस अंक में छपे लगभग सभी लेखों में जो आंकड़े (डाटा) लिये गये हैं उनके सोर्स बताए गये होते तो विश्वसनीयता में और इज़ाफ़ा होता । उम्मीद है कि भविष्य में इस पर और ध्यान दिया जाएगा ।

कुल मिलाकर ये अंक अच्छा रहा । संपादक और उनकी पूरी टीम का अभिनंदन ।

**–एम॰ आई॰ शेख़**
लातूर (महाराष्ट्र)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के पास आया और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), लोगों में कौन सबसे ज़्यादा मेरे अच्छे व्यवहार और सहचरता का हक़दार है ? आप (सल्ल॰) ने कहा : "तेरी मां ।" उसने कहा : फिर कौन ? आप (सल्ल॰) ने कहा : " तेरी मां ।" उसने कहा : फिर कौन ? आप (सल्ल॰) ने कहा : तेरी मां ।" उसने कहा : फिर कौन ? आपने कहा : "तेरा बाप ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

*A Well Wisher*

**ROYAL INDUSTRIES**

**GOA**

# इस जीवन के बाद क्या?

◆ मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी

हमारा देश, एक धर्म प्रधान देश है । यहां प्राचीनकाल से ही धर्म अपने विभिन्न रूपों (Denominations) में मौजूद रहा है । दूसरे शब्दों में, धार्मिकता इस समाज की उभरी हुई विशेषता रही है । इसने देश के जन-मानस को काफ़ी प्रभावित किया है । इस प्रकार यह स्वर्यसिद्ध वास्तविकता है कि धार्मिक मूल्यों की मानव-जीवन को सदैव आवश्यकता रही है, लेकिन इस तथ्य को भी नहीं भूलना चाहिए कि समाज में धार्मिक मानसिकता और धार्मिक विचारधाराओं की मात्र मौजूदगी ही काफ़ी नहीं है, बल्कि उनकी मौलिकता का प्रश्न प्रमुख होता है । धार्मिक मूल्य जितने मौलिक होंगे, उतने ही प्रभावकारी भी होंगे और इन्सान की नैतिकता और उसके शील-स्वभाव व चरित्र को उत्तम बनाएंगे ।

भारतीय समाज विभिन्न गंभीर समस्याओं से दो-चार रहा है । आज इन समस्याओं में और वृद्धि होती जा रही है । इसका प्रमुख कारण मौलिक धार्मिक मूल्यों का ह्रास और भौतिकवादी संस्कृति का खुला आक्रमण है । कुछ अति स्वार्थी लोगों ने अपने घृणित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आमजन में विभिन्न प्रकार की कृत्रिम समस्याएं पैदा कर दी हैं, जो भयावह रूप धारण कर रही हैं । इन्होंने लोगों के मन-मस्तिष्क को इतना प्रभावित कर डाला है कि उनके जीवन में स्वेच्छाचार, कुमार्गगमन और स्वच्छंदता का फैलाव हो रहा है, जिसके नतीजे में लोगों में ईश्वर के प्रति जैसी निष्ठा और भक्ति व बन्दगी होनी चाहिए, उसका अभाव हो गया है । यह बाहरी दिखावों तक सीमित हो गयी है और मनुष्य विभिन्न प्रकार की संकीर्णताओं का शिकार होता जा रहा है । वह भौतिकता की चलती-फिरती मशीन बन चुका है । उसकी सारी गतिविधियां दुनिया की प्राप्ति और भौतिकवाद तक सीमित हो गयी हैं । वह सही या ग़लत ढंग से हर हाल में दुनिया कमा लेना चाहता है । उसमें पारलौकिक जीवन की कल्पना नहीं पायी जाती और न ही वह दायित्व-बोध उसमें पाया जाता है, जो इन्सान का अपने पैदा करने वाले के प्रति होना चाहिए । पारलौकिक जीवन की जो कल्पना कहीं दिखती भी है वह अवास्तविक कृत्रिम एवं काल्पनिक होने के कारण प्रभावोत्पादक नहीं बन पाती ।

**पारलौकिक जीवन को नकारने के दुष्परिणाम**

इस जीवन के पश्चात के जीवन की धारणा को नज़रअंदाज़ करने से अनेक प्रकार के चारित्रिक विकार इन्सान में जन्म लेते हैं । उसका व्यक्तित्व संकुचित और विकृत हो जाता है । वह मूल्य, मर्यादा और नैतिकता की परवाह नहीं करता । अत: वह सामान्यत: नेकी और भलाई के कामों के लिए आमादा नहीं होता । उसका हर काम व्यक्तिगत लाभ-हानि पर केन्द्रित हो जाता है । उसे बुराई, बदकारी और भ्रष्ट तौर-तरीक़े अपनाने में कोई संकोच नहीं होता । इस प्रकार समाज विभिन्न प्रकार की बुराइयों, समस्याओं और विकारों से पट जाता है । वर्तमान समाज की यह दुर्दशा हमारे सामने है ।

आज इन्सानों की एक बड़ी संख्या अपने कर्मों के प्रति लापरवाह और दायित्वहीन हो गयी है । वह इस वास्तविकता से अपरिचित है कि इस जीवन के पश्चात आने वाले जीवन में उसको अपने सारे कर्मों का हिसाब जगत के स्वामी सर्वशक्तिमान ईश्वर को देना पड़ेगा । यदि उसके कर्म अच्छे हुए, तो उसे पुरस्कार मिलेगा और वह स्वर्ग (जन्नत) का पात्र होगा और यदि वह इस दुनिया से बुराइयां समेटकर ले गया, तो दंडित होगा और नरक (जहन्नम) का भागी बनेगा । पारलौकिक जीवन की मौलिक धारणा न केवल इन्सान का मार्गदर्शन करती है, उसमें अच्छे आचरण और चरित्र पैदा करती है, बल्कि यह सृष्टि-रचना के उद्देश्य, वास्तविक न्याय और ईश्वर की तत्वदर्शिता का तक़ाज़ा भी यही है कि हर कर्म का यथोचित परिणाम अवश्य मिले ।

जब इन्सान अपने पैदा करने वाले के प्रति ही कृतज्ञ नहीं होगा, उसके प्रति अपने कर्मों के सिलसिले में जवाबदेही से बेख़बर एवं असावधान होगा, तो स्पष्ट है कि

वह नेकी, भलाई और कल्याण के कामों से दूर हो जाएगा और वह जो भी कर्म करेगा उससे दूसरों के लिए कष्टकर और अलाभकारी होगा ! साथ ही स्वयं के लिए भी दुखदाई, हानिकारक और अमंगलकारी होगा ।

### मानव-जीवन के विकार

परलोक के जीवन की सही, मौलिक, वास्तविक और सुदृढ़ धारणा के अभाव के कारण इन्सान का जीवन अनेकानेक समस्याओं और विकारों से ग्रस्त हो जाता है । जब इन्सान के दिल में यह भावना नहीं रहती कि उसे अपने कर्मों के बारे में सर्वशक्तिमान प्रभु के समक्ष जवाबदेह होना है, उसमें अपने कर्मों और आचार-विचार के सिलसिले में ईशभय नहीं पाया जाता, तो वह स्वच्छंद और आज़ाद होकर जो जी में आता है, करता है । वह वैध-अवैध, उचित-अनुचित और मर्यादित-अमर्यादित की वह परवाह नहीं करता, यहां तक कि उसे इन्सानी जान व माल के साथ खिलवाड़ करने में भी कोई संकोच नहीं होता ।

ईशपरायणता और परलोकवाद व कर्म-फल की सही धारणा के अभाव के कारण वह अपने कुत्सित स्वार्थ में अंधा होकर बेगुनाह और निर्दोष लोगों एवं नवजात बच्चियों की हत्याएं तक कर डालता है उनके माल-असबाब को लूट लेता और बर्बाद कर डालता है । महिलाओं और बच्चियों को अपनी हवस का शिकार बनाता है और उन पर तरह-तरह के जुल्म ढाकर अपनी निष्ठुरता का प्रदर्शन करता है । वह लोगों का हक़ मारता है । शराब, सूद (ब्याज), अश्लीलता, नग्नता और बेहयाई के कारोबार फैलाकर लोगों की शारीरिक और मानसिक क्षमताएं कुंठित करता है और उन्हें ग़लत दिशा देता है । अपने से कमज़ोर लोगों का शोषण करता और करवाता है । उनका मान-मर्दन करके अपने अहं को तुष्ट करता और खुश होता है । उनके साथ न्यायपूर्ण व उचित व्यवहार नहीं करता ।

इस प्रकार उन्हें दलित दमित बने रहने के लिए बाध्य करता है । उनके दर्द, दुख और चीख़-पुकार और बेबसी की हालत पर वह तरस नहीं खाता और न ही सहानुभूति जताता है । इस प्रकार हिंसा, उपद्रव, अत्याचार, अनाचार और अन्याय का क्रम चलता रहता है । इन सबको उचित साबित करने और विरोध-आपत्ति को किसी हद तक नकारात्मक बनाने के लिए यह अफ़सोसनाक बात भी कही जाती है कि यह सब नियति है और पूर्वकर्मों की यह सज़ा मिल रही है। फिर समाज कितना अकल्याणकारी और अमानवीय हो जाता है !

### पारलौकिक जीवन को मानने के फ़ायदे

इसके विपरीत परलोक को मौलिक रूप में मानने से इन्सान का चरित्र निखरता और संवरता है, वह भले और नेक काम करता है, किसी का हक़ नहीं मारता और न किसी पर जुल्म-ज़्यादती करता है । वह सबका हित, लाभ और कल्याण चाहता है और जो अपने लिए पसन्द करता है, वही दूसरों के लिए भी पसन्द करता है । वह वर्तमान जीवन की भौतिक सुख-सामग्री का लालसी नहीं बनता, और न ही दुनिया को अपना सब कुछ समझता है । उसकी दृष्टि व्यापक हो जाती है । अत: वह सामयिक और तात्कालिक फ़ायदों को ही सब कुछ न मानकर इस जीवन के बाद के जीवन की स्थायी सुख-शान्ति, खुशी और सफलता का अभिलाषी होता है । इसके लिए वह भले और नेक काम करता है, बुराई, अत्याचार, अनाचार, अन्याय और अश्लीलता से दूर रहता है ।

परलोक पर विश्वास रखने वाले इन्सान में साहस और उत्साह विकसित होता है । उसके नज़दीक निराशा और कायरता नहीं फटकती । उसका ईश्वर पर पूरा विश्वास होता है । वह परलोक की सफलता और उसकी स्थायी खुशी प्राप्त करने के लिए दुनिया के संकटों और उसकी समस्याओं का सहजता एवं सुगमता के साथ मुक़ाबला करता है । वह इस जीवन की समस्याओं में इतना नहीं उलझता कि कर्तव्य-पथ से डिगने लगे, बल्कि वह हर परेशानी और हर परिस्थिति का उत्साहपूर्वक सामना करता है । वह हिम्मत नहीं हारता ।

दुनिया की असफलताएं उसे हताश नहीं करतीं, वह समस्याओं से घबराकर, हताश व निराश होकर, ज़िन्दगी से निराश होकर आत्महत्या नहीं करता, बल्कि वह सत्यनिष्ठ होकर अपने कर्तव्यों के पालन में लगा रहता है, क्योंकि उसे विश्वास होता है कि ये प्रतिकूल परिस्थितियां, इस सांसारिक जीवन की भांति इसी जीवन तक समयबद्ध, अस्थायी व सीमित हैं । सत्यनिष्ठ जीवन के आनन्दमय व स्थायी फल और शाश्वत परिणाम तो परलोक (स्वर्ग) में मिलेंगे ही ।

उसे भली-भांति मालूम है कि पारलौकिक जीवन की सफलता इस पर निर्भर करती है कि दुनिया में बिगाड़ के बदले बनाव पैदा करे, अशान्ति और अत्याचार की जगह

शान्ति और सलामती का वातावरण बनाए एवं दुनिया को बुराइयों एवं विकारों से मुक्त करने में मुख्य भूमिका निभाए। निर्धन, कमज़ोर और असहायजनों के काम आये, उनकी सहायता करे, चाहे वे किसी भी धर्म, मत और जाति से संबंध रखते हों। परलोक पर सच्चा ईमान रखने वाला इन्सान प्रत्येक अत्याचार, विकार और अनाचार को समाप्त करने हेतु प्रयासरत रहता है। साथ ही नेकी और भलाई के कामों में अग्रसर रहता है। इसके लिए वह आवश्यकता पड़ने पर अपनी जान और माल की कुरबानी भी दे सकता है। इस प्रकार सद्गुणों और सद्विचारों पर आधारित जो समाज बनेगा, वह सहज रूप से बुराइयों और जुल्म-ज़्यादती से मुक्त होगा। उसके लोगों में एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति, दया और सहयोग की भावना होगी, बल्कि वे दूसरों की आवश्यकतापूर्ति को अपने पर प्राथमिकता देंगे। उनमें घमंड, दंभ और अहंकार नहीं होगा। उसके लोगों में ईशभय होगा, जिसके कारण दूसरे सभी अनुचित भय और डर दिलों से निकल जाएंगे। इस प्रकार वे निर्भीक होकर ईश्वरीय मार्ग पर चलते जाएंगे। यह सब इसलिए होगा, क्योंकि वे समझते हैं कि परलोक का जीवन ईश्वर के हाथ में है। इस प्रकार इन्सान अंधकार से प्रकाश में आ जाता है और नेकियों व भलाइयों के कामों में लगे रहकर अपने लोक-परलोक को सफल बना लेता है।

**इस्लाम में पारलौकिक जीवन की धारणा**

इस्लाम में परलोक (आख़िरत) की धारणा उसके आधार-स्तंभों में से एक है। परलोक का इस लोक (दुनिया) से गहरा संबंध है। परलोक इस दुनिया का विकसित रूप है। हमें यहां जो कमी दिखायी देती है, वह वहां पूरी कर दी जाएगी। जो चीज़ें यहां छिपी हुई हैं, वहां वे छिपी न रहेंगी। इन्सान को दुनिया में अपने अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा पुरस्कार या दंड नहीं मिल सकता। इन्सान के भले-बुरे कर्मों के प्रभाव उसके जीवन के साथ समाप्त नहीं हो जाते, बल्कि सदियों तक उसके कर्मों का भला या बुरा प्रभाव पड़ता रहता है।

एक व्यक्ति ने मानवता को शिक्षित और संस्कारित किया, तो उसका प्रभाव दीर्घकाल तक होगा। इसी तरह एक व्यक्ति ने मानवता को ग़लत दिशा दी और अत्याचार किया, तो उसका कुप्रभाव भी दीर्घकाल तक बना रह सकता है। अतः अच्छे कर्मों के मूल्यांकन और बुरे कर्मों की बुराई को आंकने के लिए आवश्यक है कि कर्मों के सभी प्रभावों को देखा जाए और उनके प्रमाण जुटाए जाएं और अपराधियों को उन सारे लोगों के सामने दंड का आदेश सुनाया जाए, जिनको उनके कर्मों के कारण किसी प्रकार का नुक़सान पहुंचा हो। ऐसा पूर्ण न्याय इसी संसार और इसी सीमित व नश्वर जीवन में मिलना संभव नहीं है, अतः ऐसे पूर्ण व निष्पक्ष न्याय के लिए भी परलोक की आवश्यकता है।

इस्लाम की धारणा है कि इन्सान का यह जीवन उसकी परीक्षा की घड़ी है। यह नश्वर जगत है, जिसका एक दिन विनाश होना निश्चित है। शाश्वत जीवन तो परलोक का जीवन (आख़िरत) है। यदि इन्सान एकेश्वरवाद (तौहीद), ईशदूतत्व (रिसालत), पारलौकिक जीवन (आख़िरत) आदि मौलिक धारणाओं को मानता है और जीवन में ईश्वरीय आदेशों का पालन करता है, नेकी और भलाई के कामों में लगा रहता है, तो उसके लिए परलोक में अच्छा बदला है, उसे जन्नत प्राप्त होगी, जहां उसे शाश्वत जीवन मिलेगा, जो सुख, शान्ति और समृद्धि से परिपूर्ण होगा। इसके विपरीत बुरे कर्म करने वाले नरक (जहन्नम) की यातना से दो-चार होंगे। वास्तविकता यह है कि इन्सान का जैसा कुछ प्रयास होगा, जैसा कुछ उसका चरित्र और कर्म होगा, वह अपना प्रतिफल लाकर रहेगा।

परलोक में इन्सान अपने कर्म को छिपा न सकेगा। उसका किया-धरा सब सामने आएगा। उस दिन इन्सान के कान, आंखें, खालें, जुबान और हाथ- पांव तक उसके कर्मों के गवाह होंगे। ईश्वरीय न्यायालय में अपराधी स्वयं अपने अपराध स्वीकार करेंगे और उन्हें अपने किये पर पछतावा होगा। वे चाहेंगे कि उन्हें दुनिया में फिर भेज दिया जाए और वे अच्छे कर्म करके आएं। लेकिन इसका अवसर ही नहीं रहेगा, क्योंकि परीक्षाकाल (सांसारिक जीवन) सदा के लिए समाप्त हो चुका होगा, और पारलौकिक जीवन की ईश्वरीय न्यायालय में कोई भी उनकी सहायता नहीं कर सकेगा। कोई रिश्ते-नाते काम न आएंगे। कोई दोस्त किसी के काम न आएगा। वे भी किसी की कुछ भी सहायता न कर सकेंगे, जिन्हें दुनिया में ईश्वर का साझी ठहराया गया था और उनसे तरह-तरह की उम्मीदें बांधी थीं। कोई किसी का बोझ न उठाएगा। हरेक को अपनी ही चिन्ता होगी। उस

(शेष पृष्ठ 16 पर)

# قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

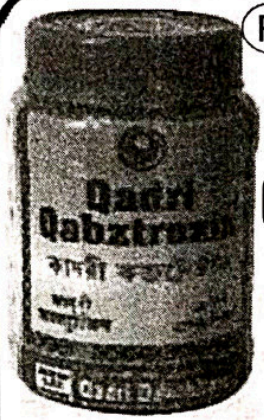


گیسٹک کے درد میں

## قادری قبض ٹروجن

بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے




گھٹیا کے درد میں؟

## زعفرانی تیل

کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گھٹیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

## پشٹک چورن

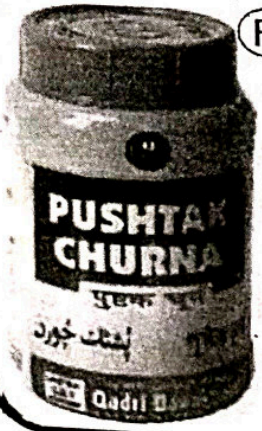


جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

## ذیابطیش سی

شوگر کی کامیاب دوا




مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

# Qadri Dawakhana™

An ISO 9001:2008 Certified Company

B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018
Ph. No. 2469-3173-2489-3539
www.qadridawakhana.com • E-mail : qadridawakhana80@yahoo.co.in

# मनुष्य का दायित्व

◆ मुहम्मद इक़बाल मुल्ला

मनुष्य का यह बहुत ही अहम दायित्व है कि वह अपने पैदा करने वाले के मार्गदर्शन (धर्म) को तलाश करे । उसे अपनी ओर से कोई नया धर्म या नया रास्ता बनाने की ज़रूरत नहीं है । अतीत में इन्सान ने यह कोशिश की है और सैकड़ों धर्म खोज निकाले हैं । धर्म की यह बहुलता, इस कोशिश की नाकामी का प्रमाण है ।

इन्सान के अन्दर नैतिक शक्ति होनी चाहिए । अगर उसके बाप-दादा तक सत्य की रोशनी नहीं पहुंच सकी तो सत्य जहां से भी मिले, सोच-विचार और बुद्धि और विवेक की बुनियाद पर उसे क़बूल कर ले । इसमें किसी भी प्रकार की रुकावट पैदा न होने दे । आमतौर पर लोग समझते हैं कि बाप-दादा के तरीक़े और धार्मिक विचारधाराओं को नहीं छोड़ना चाहिए । उनका यह भी ख़याल है कि दूसरी धार्मिक विचारधाराओं को, चाहे वे कितने ही सच और उचित हों स्वीकार नहीं करना चाहिए । इस रवैये पर विचार करने की ज़रूरत है । अगर हमारे बाप-दादा सत्य-मार्ग के राही थे तो उस रास्ते पर चलते रहने और उनकी धार्मिक विचारधाराओं को स्वीकार करने में कोई ग़लत बात नहीं है, लेकिन अगर किसी कारण उन्हें सत्य नहीं मिल सका, या वे उससे अनभिज्ञ रहे और फिर भी हम अपने बाप-दादाओं के रास्ते पर ही चलें तो क्या होगा ? इन्सान अस्ल में ईश्वर का दास है । बाप-दादा या किसी और का दास नहीं है । इसके लिए तो एक ही रास्ता सही है और वह यह है कि एक ईश्वर की पूरी बन्दगी और आज्ञापालन करे । ख़ुद को बिना किसी शर्त के ईश्वर के हवाले कर दे । इसी को ईश्वर पर ईमान या एकेश्वरवाद कहते हैं ।

एक अहम सच्चाई यह है कि ईश्वर पर आस्था का मतलब केवल उसको मान लेना नहीं है, बल्कि ईश्वर की सही अवधारणा सामने होनी चाहिए, उसके सारे गुण और उसकी अपेक्षाएं मालूम होनी चाहिएं । इसी तरह उसकी पसन्दीदा ज़िन्दगी के तरीक़े को जानना और मानना ज़रूरी है । ये सारी बातें ईश्वर ने हर व्यक्ति को सीधे तौर पर नहीं बतायी हैं, बल्कि इसकी एक समुचित व्यवस्था की है । वह ईशदूतों (पैग़म्बरों) का सिलसिला है, जो आदम (अलैहि॰) से शुरू होकर आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) पर ख़त्म हुआ । इसलिए तमाम पैग़म्बरों को मानना और मुहम्मद (सल्ल॰) को आख़िरी पैग़म्बर स्वीकार करना ज़रूरी है । किसी एक पैग़म्बर का इन्कार सभी पैग़म्बरों के इन्कार के समान है, क्योंकि सभी पैग़म्बर ईश्वर के भेंजे हुए थे । पैग़म्बर का इन्कार अंततः ईश्वर ही का इन्कार है ।

सत्य सामने आ जाने के बाद ज़िद और हठधर्मी, पक्षपात, नफ़रत या स्वार्थपरता और केवल बाप-दादा के अनुकरण के लिए उसे झुठला देना बहुत बड़ी नाकामी है । इस तरह इन्सान परलोक की ज़िन्दगी में नरक की यातना का ख़तरा मोल लेता है ।

ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि और चेतना प्रदान की है । इसी के साथ उसे इरादा और अमल की आज़ादी और अधिकार भी दिया गया है । वह दूसरे प्राणियों की तरह विवश नहीं है । मनुष्य को ये योग्यताएं और विशेष क्षमताएं सिर्फ़ दुनिया की ज़रूरतों को पूरा करने और इच्छाओं की पूर्ति के लिए नहीं दी गयी हैं । इस तरह तो वह केवल जानवर बनकर रह जाएगा । जिस स्रष्टा ने ज़िन्दगी जैसा बहुमूल्य अनुग्रह और विशेष योग्यताएं उसे प्रदान की हैं, उसकी ख़ुशी को पाना, उसकी मर्ज़ी और पसन्दीदा ज़िन्दगी के तरीक़े को (अपनी आज़ादी और स्वच्छंदता से मुक्त होकर) अपनाना मनुष्य की ज़िम्मेदारी है । इतना ही नहीं, ऐसे दोस्त, मेहरबान और उपकारी ईश्वर की नाराज़ी से बचने की कोशिश करना ज़रूरी है । उसके साथ ग़द्दारी और बेवफ़ाई न करना ही मनुष्य की सबसे बड़ी और अहम ज़िम्मेदारी है ।

मनुष्य यह मालूम करने की कोशिश तो करे कि आख़िर ईश्वर ने उसे ज़िन्दगी और विभिन्न योग्यताएं और क्षमताएं किस लिए प्रदान की हैं ? मान लीजिए कि किसी आदमी ने दुनिया में ख़ुदा की दी हुई सलाहियतों के बल पर बड़े-बड़े कारनामे अंजाम दिये, लेकिन उसने अपने स्रष्टा के बताए हुए ज़िन्दगी के मक़सद को पूरा नहीं किया, तो यह

उसकी सबसे बड़ी नाकामी होगी । मौत के बाद इस कोताही की क्षतिपूर्ति का कोई मौक़ा उसे नहीं मिलेगा । ऐसी स्थिति में क्या यह हर व्यक्ति की अहम और बुनियादी ज़िम्मेदारी नहीं है कि अपनी मौत आने से पहले ज़िन्दगी के वास्तविक उद्देश्य को मालूम करे और उसे इस दुनिया में पूरा करने की कोशिश करे, ताकि दुनिया में सुख व शान्ति की ज़िन्दगी बसर कर सके और मौत के बाद ख़ुदा की ख़ुशी पाकर जन्नत के शाश्वत आनन्द का हक़दार बन सके ।

ईश्वर के बारे में यह बदगुमानी नहीं की जा सकती कि उसने इन्सानों को पैदा किया, उन्हें ज़िन्दगी प्रदान की और

(पृष्ठ 13 का शेष)

दिन प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष उसके कर्मों का लेखा-जोखा पेश किया जाएगा । क़ुरआन स्पष्ट रूप से कहता है कि इन्सान के कर्मों की निगरानी अल्लाह के आदेश से हो रही है । ईश्वरीय न्यायालय में हरेक के बारे में जो फ़ैसला होगा वह अत्यंत न्यायानुकूल होगा । किसी पर ज़्यादती न होगी । उस दिन किसी का कोई हक़ मारा नहीं जाएगा । हरेक को वैसा ही बदला मिलेगा, जैसा उसने काम किये होंगे । उस दिन न्याय की तराज़ू बड़ी होगी । जिसकी नेकी के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होगा और स्वर्ग में जाएगा और जिसके पलड़े हल्के होंगे, वह नरक (जहन्नम) में जाएगा ।

इन्सान अपना अहित और नुक़सान नहीं चाहता । उसके मूल स्वभाव में है कि वह ईश्वर का आज्ञाकारी बने, संमार्ग पर चले, लेकिन जब वह इस स्वभाव को अपनी मनेच्छाओं, कुत्सित स्वार्थों और बाह्य प्रभावों के अधीन कर लेता है, तो वह अपने अहित और नुक़सान की ओर सहज ही बढ़ता चला जाता है । उसका जीवन मौलिक गुणों, नैतिक व धार्मिक मूल्यों और मर्यादाओं से धीरे-धीरे ख़ाली हो जाता है और तरह-तरह की बुराइयां और विकृतियां इनकी जगह ले लेती हैं ।

आज इन्सान के जीवन और समाज में जो बुराइयां और विकृतियां पायी जाती हैं, जिनका उल्लेख इस आलेख के शुरू में किया गया है, उनका बड़ा कारण ईशभय और पारलौकिक जीवन की सही धारणा के प्रति बेपरवाही, असावधानी और निश्चेष्टता है । आइए, हम अपने जीवन में धर्म की मौलिक धारणाओं को अपनाकर उसे सुधारें-संवारें । इस प्रकार लोक-परलोक में सफलता व सम्मान के साथ-साथ वर्तमान में भी हमारा, हमारे समाज और देश का नव-निर्माण भी होगा और मानवता का मान-सम्मान भी बढ़ेगा ।

बुद्धि और चेतना के ख़ास अनुग्रह और योग्यताएं दे दीं, लेकिन उन्हें ज़िन्दगी का कोई उद्देश्य नहीं बताया और दुनिया में यूं ही मनमानी ज़िन्दगी बसर करने के लिए आज़ाद और बेलगाम छोड़ दिया । फिर मौत के बाद उनका हिसाब भी न लेगा । एक और पहलू से ग़ौर करें । मनुष्य बुद्धि और विवेक से काम ले तो क्या यह बात ठीक मालूम होती है कि हिसाब का ऐसा दिन नहीं आएगा, जब इन्सान मरने के बाद दोबारा ज़िन्दगी पाकर अल्लाह के सामने हाज़िर हो और उससे नेमतों और अधिकारों के बारे में बेलाग पूछताछ हो । ईश्वर हिसाब-किताब ले । कामयाब होने वालों को अपनी ख़ुशी और इनाम प्रदान करे और नाकाम होने वालों को कठोर सज़ा दे । बुद्धि तो कहती है कि ऐसा ज़रूर ही होना चाहिए । अगर ऐसा नहीं होता है तो यह अल्लाह की रहमत, इन्साफ़ और हिकमत के ख़िलाफ़ होगा । बुद्धि का यह फ़ैसला बिल्कुल ठीक है ।

इन्सान की भलाई इसमें है कि दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी नेमतों और संसाधनों को ईश्वर की मेहरबानी और कृपा समझे, उनका सम्मान करे । ईश्वर का शुक्रगुज़ार बन्दा बनकर उसकी पूरी ग़ुलामी और बन्दगी अपनाए । उसके आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिये से जो हिदायत और मार्गदर्शन इन्सानों को दिया गया है, उस पर ईमान लाए और मुहम्मद (सल्ल०) की पूरी पैरवी अपनाए । दुनिया की भलाई और परलोक में सफलता का यह एकमात्र रास्ता है ।

## क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

चलने वाला हो । इसलिए जिस पक्षपात से, जिस विमुखता से, जिस उपहास से और जिन अज्ञानपूर्ण आपत्तियों से तुम्हारा मुक़ाबला किया जा रहा है उनके कारण तुम्हारे क़दमों में तनिक भर भी डगमगाहट न आने पाये । जो तथ्य तुम पर वह्य के ज़रिये खोला गया है, उसके बयान करने और एलान करने में और उसकी ओर बुलाने में तुम्हें कदापि कोई झिझक न हो । तुम्हारे दिल में इस विचार का कभी गुज़र तक न हो कि अमुक बात कैसे कहूं जबकि लोग सुनते ही उसकी खिल्ली उड़ाने लगते हैं और अमुक वास्तविकता को कैसे व्यक्त करूं जबकि किसी को उसका सुनना तक गवारा नहीं है । कोई माने या न माने, तुम जिसे सच पाते हो उसे बिना कुछ घटाये-बढ़ाये और निर्भय होकर बयान किये जाओ, आगे सब मामले अल्लाह के सुपुर्द हैं ।

# मानवाधिकार की आधारशिला पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) का विदायी अभिभाषण

● संपादन प्रभाग

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ईश्वर की ओर से, सत्य धर्म को उसके पूर्ण और अन्तिम रूप में स्थापित करने के जिस मिशन पर नियुक्त किये गये थे वह 21 वर्ष (23 चांद्र वर्ष) में पूरा हो गया और ईशवाणी अवतरित हुई–

''...आज मैंने तुम्हारे दीन (इस्लामी जीवन व्यवस्था की पूर्ण रूप-रेखा) को तुम्हारे लिए पूर्ण कर दिया है और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे दीन की हैसियत से क़बूल कर लिया है...।'' (क़ुरआन, 5:3)

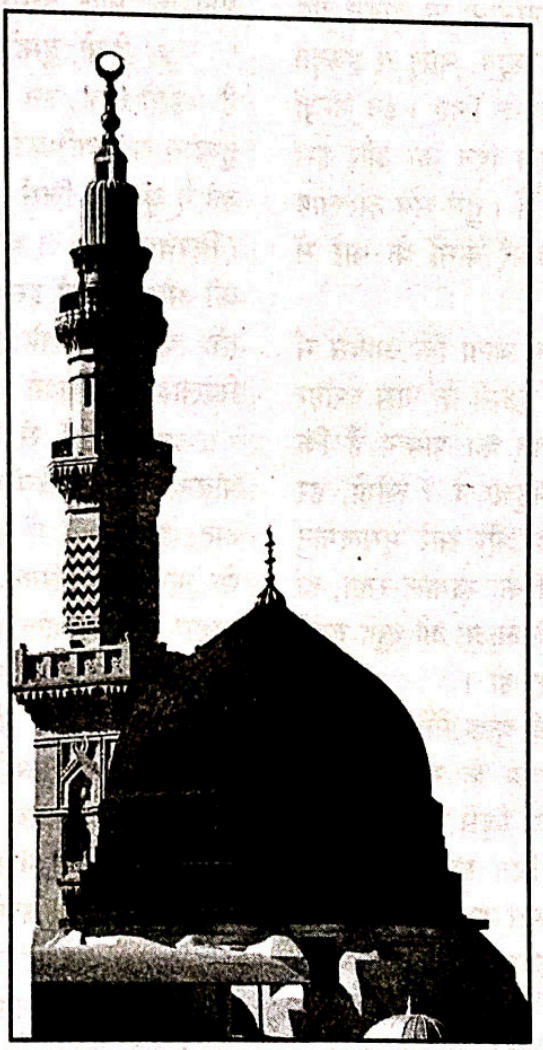

आप (सल्ल॰) ने हज के दौरान 'अरफ़ात' के मैदान में 9 मार्च 632 ई॰ को एक भाषण दिया जो मानव-इतिहास के सफ़र में एक 'मील का पत्थर' (Milestone) बन गया। इसे निस्संदेह 'मानवाधिकार की आधारशिला' का नाम दिया जा सकता है। उस समय इस्लाम के लगभग सवा लाख अनुगामी लोग वहां उपस्थित थे। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ऐसे लोगों को नियुक्त कर दिया गया था जो आपके वचन-वाक्यों को सुनकर ऊंची आवाज़ में शब्दतः दोहरा देते। इस प्रकार सारे श्रोताओं ने आपका पूरा भाषण सुना।

**भाषण**

आपने पहले ईश्वर की प्रशंसा, स्तुति और गुणगान किया, मन-मस्तिष्क की बुरी उकसाहटों और बुरे कामों से अल्लाह की शरण चाहिए। इस्लाम के मूलाधार 'विशुद्ध एकेश्वरवाद' की गवाही दी और फ़रमाया–

✍ ऐ लोगो ! अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है, वह एक ही है, कोई उसका साझी नहीं है। अल्लाह ने अपना वचन पूरा किया, उसने अपने बन्दे (रसूल॰) की सहायता की और अकेला ही अधर्म की सारी शक्ति को पराजित किया।

✍ लोगो मेरी बात सुनो, मैं नहीं समझता कि अब कभी हम इस तरह एकत्र हो सकेंगे और संभवतः इस वर्ष के बाद मैं हज न कर सकूंगा।

✍ लोगो, अल्लाह फ़रमाता है कि, इन्सानो, हमने तुम सबको एक ही पुरुष व स्त्री से पैदा किया है और तुम्हें गिरोहों और क़बीलों में बांट दिया गया कि तुम अलग-अलग पहचाने जा सको। अल्लाह की दृष्टि में तुममें सबसे अच्छा और आदर वाला वह है जो अल्लाह से ज़्यादा डरने वाला है। किसी अरबी को किसी ग़ैर-अरबी पर, किसी ग़ैर-अरबी को किसी अरबी पर कोई प्रतिष्ठा हासिल नहीं है। न काला गोरे से उत्तम है न गोरा काले से। हां आदर और प्रतिष्ठा का कोई मापदंड है तो वह ईशपरायणता है।

✍ सारे मनुष्य आदम की संतान हैं और आदम मिट्टी से बनाए गये। अब प्रतिष्ठा एवं उत्तमता के सारे दावे, ख़ून एवं माल की सारी मांगें और शत्रुता के सारे बदले मेरे पांव

तले रौंदे जा चुके हैं । बस, काबा का प्रबंध और हाजियों को पानी पिलाने की सेवा का क्रम जारी रहेगा । कुरैश के लोगो ! ऐसा न हो कि अल्लाह के समक्ष तुम इस तरह आओ कि तुम्हारी गरदनों पर तो दुनिया का बोझ हो और दूसरे लोग परलोक का सामान लेकर आएं, और अगर ऐसा हुआ तो मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आ सकूंगा ।

✍ कुरैश के लोगो, अल्लाह ने तुम्हारे झूठे घमंड को ख़त्म कर डाला, और बाप-दादा के कारनामों पर तुम्हारे गर्व की कोई गुंजाइश नहीं । लोगो, तुम्हारे ख़ून, माल व इज़्ज़त एक-दूसरे पर हराम कर दी गयीं हमेशा के लिए । इन चीज़ों का महत्व ऐसा ही है जैसा तुम्हारे इस दिन का और इस मुबारक महीने का, विशेषत: इस शहर में । तुम सब अल्लाह के सामने जाओगे और वह तुमसे तुम्हारे कर्मों के बारे में पूछेगा ।

✍ देखो, कहीं मेरे बाद भटक न जाना कि आपस में एक-दूसरे का ख़ून बहाने लगो । अगर किसी के पास धरोहर (अमानत) रखी जाए तो वह इस बात का पाबन्द है कि अमानत रखवाने वाले को अमानत पहुंचा दे । लोगो, हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और सारे मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं । अपने ग़ुलामों का ख़याल रखो, हां ग़ुलामों का ख़याल रखो । इन्हें वही खिलाओ जो ख़ुद खाते हो, वैसा ही पहनाओ जैसा तुम पहनते हो ।

✍ जाहिलियत (अज्ञान) का सब कुछ मैंने अपने पैरों से कुचल दिया । जाहिलियत के समय के ख़ून के सारे बदले ख़त्म कर दिये गये । पहला बदला जिसे मैं क्षमा करता हूं मेरे अपने परिवार का है । रबीअ-बिन-हारिस के दूध-पीते बेटे का ख़ून जिसे बनू-हजील ने मार डाला था, मैं क्षमा करता हूं । जाहिलियत के समय के ब्याज (सूद) अब कोई महत्व नहीं रखते, पहला सूद, जिसे मैं निरस्त कराता हूं, अब्बास-बिन-अब्दुल मुत्तलिब के परिवार का सूद है ।

✍ लोगो, अल्लाह ने हर हक़दार को उसका हक़ दे दिया, अब कोई किसी उत्तराधिकारी (वारिस) के हक़ में वसीयत न करे ।

✍ बच्चा उसी के तरफ़ मंसूब किया जाएगा जिसके बिस्तर पर पैदा हुआ । जिस पर हरामकारी साबित हो उसकी सज़ा पत्थर है, सारे कर्मों का हिसाब-किताब अल्लाह के यहां होगा ।

✍ जो कोई अपना वंश (नसब) परिवर्तन करे या कोई ग़ुलाम अपने मालिक के बदले किसी और को मालिक ज़ाहिर करे उस पर ख़ुदा की फिटकार ।

✍ क़र्ज़ अदा कर दिया जाए, मांगी हुई वस्तु वापस करनी चाहिए, उपहार का बदला देना चाहिए और जो कोई किसी की ज़मानत ले वह दंड (तावान) अदा करे ।

✍ किसी के लिए यह जायज़ नहीं कि वह अपने भाई से कुछ ले, सिवा उसके जिस पर उसका भाई राज़ी हो और ख़ुशी-ख़ुशी दे । स्वयं पर एवं दूसरों पर अत्याचार न करो ।

✍ औरत के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह अपने पति का माल उसकी अनुमति के बिना किसी को दे ।

✍ देखो, तुम्हारे ऊपर तुम्हारी पत्नियों के कुछ अधिकार हैं । इसी तरह, उन पर तुम्हारे कुछ अधिकार हैं । औरतों पर तुम्हारा यह अधिकार है कि वे अपने पास किसी ऐसे व्यक्ति को न बुलाएं, जिसे तुम पसन्द नहीं करते और कोई ख़यानत (विश्वासघात) न करे, और अगर वह ऐसा करे तो अल्लाह की ओर से तुम्हें इसकी अनुमति है कि उन्हें हल्का शारीरिक दंड दो, और वह बाज़ आ जाएं तो उन्हें अच्छी तरह खिलाओ, पहनाओ ।

✍ औरतों से सद्व्यवहार करो क्योंकि वह तुम्हारी पाबन्द हैं और स्वयं वह अपने लिए कुछ नहीं कर सकतीं । अत: इनके बारे में अल्लाह से डरो कि तुमने इन्हें अल्लाह के नाम पर हासिल किया है और उसी के नाम पर वह तुम्हारे लिए हलाल हुईं । लोगो, मेरी बात समझ लो, मैंने तुम्हें अल्लाह का संदेश पहुंचा दिया ।

✍ मैं तुम्हारे बीच एक ऐसी चीज़ छोड़ जाता हूं कि तुम कभी नहीं भटकोगे, यदि उस पर क़ायम रहे, और वह अल्लाह की किताब (क़ुरआन) है और हां देखो, धर्म के (दीनी) मामलात में सीमा के आगे न बढ़ना कि तुमसे पहले के लोग इन्हीं कारणों से नष्ट कर दिये गये ।

✍ शैतान को अब इस बात की कोई उम्मीद नहीं रह गयी है कि अब उसकी इस शहर में इबादत की जाएगी किन्तु यह संभव है कि ऐसे मामलात में जिन्हें तुम कम महत्व देते हो, उसकी बात मान ली जाए और वह इस पर राज़ी है, इसलिए तुम उससे अपने धर्म (दीन) व विश्वास (ईमान) की रक्षा करना ।

✍ लोगो, अपने रब की इबादत करो, पांच वक़्त की नमाज़ अदा करो, पूरे महीने के रोज़े रखो, अपने धन की ज़कात ख़ुशदिली के साथ देते रहो । अल्लाह के घर (काबा) का हज करो और अपने सरदार का आज्ञापालन करो तो अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।

✍ अब अपराधी स्वयं अपने अपराध का ज़िम्मेदार

होगा और अब न बाप के बदले बेटा पकड़ा जाएगा न बेटे का बदला बाप से लिया जाएगा ।

✍ सुनो, जो लोग यहां मौजूद हैं, उन्हें चाहिए कि ये आदेश और ये बातें उन लोगों को बताएं जो यहां नहीं हैं, हो सकता है कि कोई अनुपस्थित व्यक्ति तुमसे ज़्यादा इन बातों को समझने और सुरक्षित रखने वाला हो । और लोगो, तुम से मेरे बारे में अल्लाह के यहां पूछा जाएगा, बताओ तुम क्या जवाब दोगे ? लोगों ने जवाब दिया कि हम इस बात की गवाही देंगे कि आप (सल्ल॰) ने अमानत (दीन का संदेश) पहुंचा दिया और रिसालत (ईशदूतत्व) का हक़ अदा कर दिया, और हमें सत्य और भलाई का रास्ता दिखा दिया ।

यह सुनकर मुहम्मद (सल्ल॰) ने अपनी शहादत की उंगुली आसमान की ओर उठाई और लोगों की ओर इशारा करते हुए तीन बार फ़रमाया, ऐ अल्लाह, गवाह रहना ! ऐ अल्लाह, गवाह रहना ! ऐ अल्लाह, गवाह रहना ।

**इस्लाम में मानव-अधिकारों की अस्ल हैसियत**

जब हम इस्लाम में मानवाधिकार की बात करते हैं तो इसके मायने अस्ल में यह होते हैं कि ये अधिकार ख़ुदा के दिये हुए हैं । बादशाहों और क़ानून बनाने वाले संस्थानों के दिये हुए अधिकार जिस तरह दिये जाते हैं, उसी तरह जब वे चाहें वापस भी लिए जा सकते हैं । डिक्टेटरों के तस्लीम किये हुए अधिकारों का भी हाल यह है कि जब वे चाहें प्रदान करें, जब चाहें वापस ले लें, और जब चाहें खुल्लम-खुल्ला उनके ख़िलाफ़ अमल करें । लेकिन इस्लाम में इन्सान के जो अधिकार हैं, वे ख़ुदा के दिये हुए हैं । दुनिया की कोई विधानसभा और दुनिया की कोई हुकूमत उनके अन्दर तब्दीली करने का अधिकार ही नहीं रखती है । उनको वापस लेने या ख़त्म कर देने का कोई हक़ किसी को हासिल नहीं है । ये दिखावे के बुनियादी हुक़ूक़ भी नहीं हैं, जो काग़ज़ पर दिये जाएं और ज़मीन पर छीन लिए जाएं। इनकी हैसियत दार्शनिक विचारों की भी नहीं है, जिनके पीछे कोई लागू करने वाली ताक़त (Authority) नहीं होती । संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार्टर, एलानात और क़रारदादों को भी उनके मुक़ाबले में नहीं लाया जा सकता । क्योंकि उन पर अमल करना किसी के लिए भी ज़रूरी नहीं है । इस्लाम के दिये हुए अधिकार इस्लाम धर्म का एक हिस्सा है । हर मुसलमान इन्हें हक़ तस्लीम करेगा और हर उस हुकूमत को इन्हें तस्लीम करना और लागू करना पड़ेगा जो इस्लाम की नामलेवा हो और जिसके चलाने वालों का यह दावा हो कि "हम मुसलमान" हैं । अगर वह ऐसा नहीं करते और उन अधिकारों को जो ख़ुदा ने दिये हैं, छीनते हैं, या उनमें तब्दीली करते हैं या अमलन उन्हें रौंदते हैं तो उनके बारे में क़ुरआन का फ़ैसला यह है कि "जो लोग अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ फ़ैसला करे वही काफ़िर है" (5:44)। इसके बाद दूसरी जगह फ़रमाया गया, "वही ज़ालिम है" (5:45)। और तीसरी आयत में फ़रमाया, "वही फ़ासिक है" (5:47)। दूसरे शब्दों में इन आयतों का मतलब यह है कि अगर वे ख़ुद अपने विचारों और अपने फ़ैसलों को सही-सच्चा समझते हों और ख़ुदा के दिये हुए हुक्मों को झूठा क़रार देते हों तो वे काफ़िर हैं । और अगर वह सच तो ख़ुदाई हुक्मों ही को समझते हों, मगर अपने ख़ुदा की दी हुई चीज़ को जान-बूझकर रद्द करते और अपने फ़ैसले उसके ख़िलाफ़ लागू करते हों तो वे फ़ासिक और ज़ालिम हैं । फ़ासिक उसको कहते हैं जो फ़रमाबरदारी से निकल जाए, और ज़ालिम वह है जो सत्य व न्याय के ख़िलाफ़ काम करे । अतः इनका मामला दो सूरतों से ख़ाली नहीं है, या वे कुफ़्र में फंसे हैं, या फिर वे फिस्क और ज़ुल्म में फंसे हैं। बहरहाल जो हुक़ूक़ अल्लाह ने इन्सान को दिये हैं, वे हमेशा रहने वाले हैं, अटल हैं । उनके अन्दर किसी तब्दीली या कमीबेशी की गुंजाइश नहीं है ।

ये दो बातें अच्छी तरह दिमाग़ में रखकर अब देखिए कि इस्लाम मानव-अधिकारों की क्या परिकल्पना पेश करता है ।




हज़रत मुआविया बिन हैदा (रज़ि॰)
कहते हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के
रसूल (सल्ल॰), हममें से किसी की स्त्री
का उस पर क्या हक़ है ? आपने कहा :
"यह कि जब तुम खाओ, तो उसे भी खिलाओ
और जब तुम कपड़े पहनो, तो उसे भी पहनाओ और
उसके मुंह पर न मारो और न उससे यह कहो
कि अल्लाह तुझे अच्छाई से वंचित रखे
और न उसे अलग करो किन्तु इस
तरह कि वह घर ही में रहे ।"
(अबू दाऊद)

---


*A Well Wisher*

**PRINCE INDIA**

**GOA**

# हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) : पर्यावरण विशेषज्ञ

◆ मुशर्रफ़ अली

सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप में आरंभ हुई औद्योगिक क्रान्ति ने पूरे विश्व को यूरोप के अनुकरण पर मजबूर कर दिया। पश्चिमी राष्ट्र जिस तीव्रता से आधुनिक विज्ञान तथा टेक्नॉलोजी के सहारे भौतिक उन्नति प्राप्त करते गये उसी तीव्रता से नैतिक पतन का शिकार भी होते गये। धार्मिक ग्रंथों में भी अपनी इच्छानुसार फेर-बदल करके उन्होंने अपने आपको प्रकृति से ऊपर समझ लिया। तमाम प्राकृतिक संसाधनों को वश में करके उन पर क़ब्ज़ा कर लेने की भूख दिन-ब-दिन बढ़ती ही चली गयी।

आज इन्सान संसार के तमाम प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित उपयोग करके दुनिया को तबाही के कगार पर पहुंचा देने के बाद चांद और दूसरे ग्रहों की ओर अपनी लालच भरी नज़रों से देख रहा है। आश्चर्य और दुख की बात यह है कि संसार की सभी क़ौमें पश्चिम के अंधानुकरण में अपने नैतिक मूल्यों को स्वयं ही रौंद डालने में एक-दूसरे से आगे निकल जाना चाहते हैं। तमाम रुकावटों को पार करते हुए वे तमाम प्राकृतिक संसाधनों को केवल अपने लिए वशीभूत कर लेना चाहते हैं।

वर्तमान समय में इस्लाम ही वह एकमात्र जीवन व्यवस्था है जो न केवल यह कि पर्यावरण के साथ लोगों के दायित्व को तय करता है, बल्कि उसके लिए व्यावहारिक तरीक़े भी बताता है। इस्लाम के मुताबिक़ आख़िरत में एक आदमी की नजात (मुक्ति) इस बात पर भी निर्भर है कि उसने प्राकृतिक संसाधनों के साथ कितनी ज़िम्मेदारी निभाई। क़ुरआन में वातावरण के साथ मित्रवत रवैया अपनाने का आदेश इतना स्पष्ट है कि उन्हें वे लोग भी महसूस करते हैं जिनका क़ुरआन पर ईमान नहीं है। यही कारण है कि अदूरदर्शी लोग पश्चिमी सभ्यता की झूठी चकाचौंध से अंधे हो चुके लोगों को भी इस्लाम की Eco-friendly अपनी तरफ़ खींच रही है। यह मात्र संयोग नहीं है कि विकास के नाम पर पर्यावरण की तबाही के विरुद्ध सबसे पहले आवाज़ उठाने वालों में मुस्लिम स्कॉलर्स आगे-आगे थे।

मानता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को पर्यावरण विशेषज्ञ बताना लोगों को पहली नज़र में आश्चर्यचकित कर देगा, क्योंकि पर्यावरण और उससे संबंधित शब्दावली जैसे Ecology, Environmental Protection and Sustainability आदि वर्तमान समय का आविष्कार है, लेकिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन पर दृष्टि डालें तो यह हक़ीक़त सामने आती है कि आप Environmental protection के सबसे बड़े समर्थक थे। आप (सल्ल०) सही अर्थों में एक पर्यावरण विशेषज्ञ (Environmentalist) थे। आप Ustainable Development and Resource Management के संस्थापक थे।

आप (सल्ल०) इन्सान और प्रकृति के दरमियान सुखद संबंध बनाना चाहते थे। आप (सल्ल०) के विचार एवं व्यवहार का अध्ययन करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आप (सल्ल०) न केवल पशुओं बल्कि पेड़-पौधों के जीवन का भी सम्मान करते थे। आप (सल्ल०) ने खेती और सिंचाई के ऐसे नियम बनाए जिनको अगर व्यवहार में लाया गया होता तो आज की दुनिया के समक्ष भूमि के कटाव या बंजर हो जाने जैसी समस्याएं उत्पन्न न होतीं। मवेशी और पक्षियों के अधिकार जो नबी (सल्ल०) ने दिये और उनका प्रयोग करने वालों पर जो दायित्व डाला उनको यदि निष्ठापूर्वक व्यवहार में लाया गया होता तो आज संसार का नक़्शा ही कुछ और होता।

नबी (सल्ल०) का पर्यावरण दर्शन पूरी तरह पूर्ण है। यह तमाम प्राकृतिक तत्वों के मौलिक संबंधों तथा उनकी परस्पर निर्भरता को स्वीकार करता है। इसके अनुसार यदि इन्सान किसी एक तत्व का अनुचित प्रयोग करता है तो उसके अनिवार्य परिणामस्वरूप समस्त संसार को नुक़सान उठाना पड़ता है। नबी (सल्ल०) ने एक वाक्य या कुछ वाक्यों में इसकी शिक्षा नहीं दी, बल्कि आप जीवन भर इन्हीं सिद्धांतों के अनुरूप व्यवहार करते रहे। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने समस्त इन्सानों को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी, जिसके अनुसार "आकाशों और धरती में जो कुछ भी है,

अल्लाह का है और अल्लाह हर चीज़ को घेरे में लिए हुए है ।" (कुरआन, 4:126)

इन्सान को दुनिया में अल्लाह का प्रतिनिधि बनाकर पैदा किया गया है । तमाम चीज़ें उसके प्रयोग में दे अवश्य दी गयी हैं, लेकिन उसे उनका मालिक नहीं बनाया गया है, बल्कि अल्लाह की ओर से मात्र उन्हें इस्तेमाल करने की अनुमति है और जिसके लिए उसे परलोक में जवाबदेही करनी पड़ेगी । कुरआन ईमान वालों को चेतावनी देता है कि वे घमंड या अकड़ का शिकार न हों, "आकाशों और धरती का पैदा करना इन्सान को पैदा करने की तुलना में निश्चय ही अधिक बड़ा काम है, मगर अधिकांश लोग जानते नहीं हैं ।" (कुरआन, 40:57)

प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की अनुमति के सिद्धांत के आधार पर ही आप (सल्ल०) ने लोगों को शिक्षा दी कि कोई भी इन्सान केवल उतनी भूमि रख सकता है, जिसका वह उपयोग कर सके । यदि किसी व्यक्ति के पास उपयोग से अधिक भूमि है तो उसे चाहिए कि वह उसे उन लोगों में बांट दे जो उसके वास्तविक हक़दार हैं, क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की अपनी सीमाएं हैं और इन्सान इसके लिए ज़िम्मेदार है कि वह किसी भी सीमा का उल्लंघन न करे । इसी प्रकार अन्य प्राकृतिक संसाधनों के न्याय पर आधारित विभाजन के लिए भी आपने लोगों को प्रोत्साहन दिया ।

आप (सल्ल०) ने बताया कि पानी, चरागाह और आग पर उन तमाम लोगों के अधिकार समान हैं जो सृष्टि के रचयिता की इच्छा के आगे सिर झुका देते हैं । यहां तक कि आपने किसी प्यासे पर पानी रोकने को गुनाह बताया है ।

मानवता उपकारक (सल्ल०) ने बताया कि धरती के भी अपने अधिकार हैं और इसी प्रकार इस पर पाये जाने वाले पशु-पक्षियों, पेड़-पौधे तथा जड़ वस्तुओं के भी । आप धरती को लोगों की सहायक के रूप में देखते थे और उसके अनुचित उपभोग से मना करते थे । धरती के अधिकारों को अदा करने की आपने बहुत ताकीद की है ।

इस्लाम के पैग़म्बर (सल्ल०) ने न केवल जीवित तथा उपजाऊ भूमि के उपभोग को प्रोत्साहन ही नहीं दिया, बल्कि बेजान और बंजर भूमि को भी उपजाऊ बनाने की प्रेरणा दी, बल्कि बंजर भूमि पर सिंचाई करके उस पर पेड़-पौधे लगाने को एक सत्कर्म बताया और परलोक में उसके बदले अज्र (प्रतिदान) मिलने का विश्वास दिलाया । मदीना में इस्लामी राज्य स्थापित हो जाने के पश्चात आप (सल्ल०) ने स्वयं बहुत से निर्जन भू-भाग ज़रूरतमन्दों में वितरित कर दिये ताकि उन भू-भागों का हक़ अदा किया जा सके । इस क्रम में हज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) को भूमि देने की घटना हदीसों में वर्णित है । भूमि की सिंचाई के भी आपने नियम बनाए ताकि समस्त खेतों को आवश्यकतानुसार पानी मिल सके चाहे उसका उपयोग करने वाला कोई भी हो ।

"और हमने (अल्लाह ने) पानी से तमाम जीवित वस्तुएं पैदा कीं ।" (कुरआन, 21:30) जल प्रकृति का एक ऐसा उपहार है जिसे संसार में जीवन का समानार्थी समझा जा सकता है । आप (सल्ल०) ने पानी की सुरक्षा पर बहुत ज़ोर दिया, उसकी बरबादी से सख़्ती से मना किया, यहां तक कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि भरपूर पानी जैसे झरना, बहती नदी आदि से भी वुज़ू करते समय वुज़ू के अंगों को तीन के बजाय चार बार धोना उचित नहीं है । आप (सल्ल०) की जीवनी और आपकी हदीसें इन्सानों को जिस नागरिक संवेदना की शिक्षा देती हैं, दुर्भाग्यवश आपके अनुयायी होने का दावा करने वालों में इसका सबसे अधिक अभाव पाया जाता है । पानी के भंडार को गन्दा करने से आपने सख़्ती से मना किया और इसको गुनाह ठहराया । नदी के पानी में पेशाब, पाख़ाना करने या उसमें घरों की नालियां मिलाने से आपने रोका है । यहां तक कि मवेशियों को नहलाने और कपड़े धोने की भी सीमाएं हैं । पानी के भंडारों के पास आपने 'हराम' भाग बनाए, जहां 'ओवर पम्पिंग' पर प्रतिबंध होता है और पानी के हर प्रकार के प्रदूषण से सुरक्षा की जाती है । पानी केवल ज़रूरत भर प्रयोग करने की आपकी शिक्षा का उस समय दुनिया ने बड़ा मज़ाक़ उड़ाया और आपके सख़्त मरुस्थलीय वातावरण में पैदा होने को इसका कारण बताया, परन्तु आज वही लोग "पानी की एक-एक बूंद क़ीमती है", "जल ही जीवन है", "जल बचाओ, जीवन बचाओ" जैसे नारे लगाते नहीं थकते । यदि संसार को उस समय आपकी बातें समझ में आ गयी होतीं तो आज हम निश्चय ही इस संकट से बचे रहते ।

इसी प्रकार भूमिगत भंडार खनिज पदार्थों आदि के उपयोग के भी आप (सल्ल०) ने नियम बनाए । किसी इन्सान या सरकार को उसके कितने उपयोग की अनुमति है, इस अनुमति की अपेक्षाएं क्या हैं ? इन तमाम बातों की ओर

परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से संकेत हमें हदीसों में मिलते हैं । धुएं और विषैली गैसों से वायुमंडल को प्रदूषित करके औरों के रहने के अयोग्य बना देना कितना बड़ा अपराध हो सकता है इसे इससे समझा जा सकता है कि पड़ोसियों के अधिकारों का उल्लेख करते हुए नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "किसी भी इन्सान को इस बात का हक़ नहीं है कि वह अपने पड़ोसी की अनुमति के बिना अपने घर की दीवार को इतना ऊंचा कर ले कि उससे पड़ोसी के घर की हवा और धूप रुकने लगे ।"

आप (सल्ल०) ने पशुओं के अधिकार भी लोगों को बताए । सवारी के पशुओं का उपयोग करते हुए अत्यंत सावधान रहने को कहा । उसने उनकी शक्ति एवं क्षमता से तनिक भी अधिक काम न लिया जाए । उनके आराम का विशेष ध्यान रखा जाए और उनके चारे-पानी में तनिक भी कमी न की जाए । आप (सल्ल०) प्राय: अपने पास आने वाले सहाबा (रज़ि०) के ऊंटों और घोड़ों का अवलोकन करते और यदि उन्हें कमज़ोर और थका हुआ पाते तो नाराज़ होते और उन सहाबा को पशुओं के अधिकारों का आभास दिलाते । यहां तक कि पशुओं को ज़ब्ह करते समय भी आपने उनके साथ अत्यंत नर्मी का व्यवहार करने की शिक्षा दी और कहा कि इस बात का पूरा ध्यान रखा जाए कि पशुओं को कम से कम कष्ट हो । आप (सल्ल०) ने एक जानवर के सामने दूसरे जानवर को ज़ब्ह करने या जानवर के सामने छुरी तेज़ करने से भी मना किया और इसे जानवर को दोबार ज़ब्ह करने जैसा बताया ।

जानवरों के साथ दुर्व्यवहार इस्लाम की दृष्टि में एक गुनाह है । किसी इन्सान के क़ब्ज़े में जो जानवर है वह वस्तुत: उसके पास अल्लाह की धरोहर है, जिसके लिए उसे परलोक में उत्तर देना पड़ेगा । यदि किसी ने दुनिया में जानवरों के साथ दुर्व्यवहार किया, उसका हक़ अदा न किया तो नबी (सल्ल०) के अनुसार वह जानवर परलोक में उसके विरुद्ध गवाही देगा । आप (सल्ल०) ने जानवरों को कोड़ा मारने और ख़ास तौर पर उसके मुंह पर मारने को बहुत बुरा कृत्य बताया है ।

आप (सल्ल०) ने पक्षियों के अधिकारों को भी स्पष्ट किया, उन्हें क़ैद करने या उन्हें किसी प्रकार का नुक़सान पहुंचाने से मना किया है । आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अगर किसी अवैध ढंग से एक गौरैया को भी मार डाला तो वह अल्लाह के सामने जवाबदेही से नहीं बच सकता । फ़सलों को क्षति पहुंचाने वाले कीड़े-मकोड़ों के साथ भी आपने सहानुभूति का व्यवहार करने की ताकीद की है, बल्कि एक हदीस के अनुसार अनाज का जो हिस्सा कीड़े-मकोड़े और पक्षी खा जाते हैं वह भी सदक़ा है ।

बिल्लियों को आप (सल्ल०) ने इन्सान का मित्र बताया और उनके साथ हमदर्दी से पेश आने की शिक्षा दी । बिल्ली पर अत्याचार करने वाली एक स्त्री को आपने जहन्नम की पूर्वसूचना दी थी । इसी प्रकार कुत्ते को आपने नापाक अवश्य बताया है, लेकिन दुर्व्यवहार की अनुमति उसके साथ भी नहीं दी । अबू हुरैरा (रज़ि०) से उल्लिखित दो अलग-अलग हदीसों में आपने अपने सहाबियों को प्यास से तड़पते कुत्ते की प्यास बुझाने पर बख़्श दिये जाने की शुभ सूचना दी है ।

नबी (सल्ल०) की शिक्षाओं के अनुसार अल्लाह ने सृष्टि की तमाम चीज़ें इन्सान के उपयोग के लिए बनायी हैं, उनके दुरुपयोग के लिए नहीं । इसलिए आवश्यक है कि हम अपने दायित्व को पहचानें क्योंकि "जिसने कण भर भी भलाई की होगी, वह उसको देख लेगा और जिसने कण भर भी बुराई की होगी वह भी उसको देख लेगा ।"

(क़ुरआन, 99:7-8)


25 yrs. Service (Regd.)

**AL KAUSAR HOLY HERBAL**

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

*Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)*

*Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)*
*By faith of ALLAH*
*Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112*
*(Jharkhand) India*

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com

Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871

IFS Code No. BKID 0004461

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "बड़े गुनाह ये हैं : अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, माता-पिता की अवज्ञा करना, किसी व्यक्ति की हत्या करना और झूठी क़सम खाना।"

(बुख़ारी)

---

*A Well Wisher*

**AL-AMAN CONSTRUCTION**

**MUMBAI**

# क़ैदियों के संतोष से ग्वांतानामो जेल का गार्ड प्रभावित

टेरी होल्ड्ब्रूक्स, जो अब मुस्तफ़ा अब्दुल्लाह के नाम से जाने जाते हैं, क्यूबा में स्थित अमेरिका की कुख्यात ग्वांतानामो जेल पर लिखी गयी प्रसिद्ध पुस्तक 'ट्रेटर' के लेखक और अमेरिका के मुस्लिम लीगल फंड नामी संस्था के प्रवक्ता हैं । सन 2003 में वह ग्वांतानामो जेल में एक गार्ड के रूप में नियुक्त किये गये थे और छह माह के अन्दर ही वहां के क़ैदियों से प्रभावित होकर इस्लाम स्वीकार कर लिया था ।

1983 में फेओनिक्स, एरिजोना में जन्मे होल्ड्ब्रूक्स को अपना बचपन दादा-दादी के साथ गुज़ारना पड़ा था, क्योंकि सात वर्ष की आयु में ही उनके मां-बाप में अलगाव हो गया था । अपनी युवावस्था में सत्य की खोज में उन्होंने कई धर्मों का अध्ययन किया पर संतुष्टि न होने के कारण अपने लिए उन्होंने नास्तिकता को चुन लिया और शराब, संगीत और टैटूज में अपने जीवन को व्यस्त कर दिया । 2002 में ग़रीबी से तंग आकर वह फ़ौज में भरती हो गये और एक वर्ष बाद ही उन्हें एक गार्ड के रूप में ग्वांतानामो जेल भेज दिया गया ।

इस नये स्थान पर भेजे जाने से पहले उन्हें दो हफ़्ते के प्रशिक्षण से गुज़ारा गया जिसमें, उनके अनुसार, उन्हें बताया गया कि, "वहां के क़ैदियों का संबंध अल-क़ायदा से है और वह अमेरिका और वहां की स्वतंत्रता से नफ़रत करते हैं ।"

होल्ड्ब्रूक्स ने यह भी बताया कि प्रशिक्षण में "उन्हें सितम्बर 11 की फ़िल्में दिखायी गयीं और बताया गया कि यह दुनिया के सबसे ख़राब लोग हैं जो बिन-लादेन के साथी हैं और अवसर मिलते ही वह तुम्हारी हत्या कर देंगे ।" जेल में उन्हें क़ैदियों को पूछताछ के लिए लाने ले जाने, वहां की सफ़ाई और उन पर पहरा देने का कार्य दिया गया था जिससे उन्हें उनसे बात करने का अवसर मिल जाता था ।

अपने अतीत में झांकते हुए होल्ड्ब्रूक्स बताते हैं कि अपने साथी अमेरिकी सैनिकों के हाथों वहां उन्होंने वह अत्याचार देखें हैं जिन्हें वह कभी संभव नहीं मानते थे । क़ैदियों को आठ-आठ घंटों तक अत्यंत कष्ट की स्थिति में रखा जाता था यहां तक की उनका मल निकल जाता था । अत्यंत ठंडे कमरों में बांधकर उन्हें ठंडे पानी से भिगा दिया जाता था और उनके चेहरों पर ख़ून डाल कर इसी स्थिति में घंटों पड़ा रहने दिया जाता था ।

ग्वांतानामो जेल के सैनिकों के बारे में उनका कहना था की समस्त सुविधाओं के उपरांत भी सैनिक अत्यंत दुखी रहा करते थे और अपने अन्दर की पीड़ा को दबाने के लिए वह शराब, संगीत, पॉर्न और खेल में स्वयं को व्यस्त रखते थे । इसके विपरीत मुस्लिम क़ैदी इतने अत्याचार के बाद भी प्रसन्न और संतोष की स्थिति में नज़र आते थे । उन्हें अपने धर्म से अत्यधिक लगाव था और वह उसके रस्म-रिवाज में ही लीन रहते थे । होल्ड्ब्रूक्स बताते हैं कि वह क़ैदियों के इस आचरण से अत्यधिक प्रभावित हुए थे और सोचा करते थे कि, "इतने कष्ट के बाद भी यह लोग मुस्कुराते हुए पांच वक़्त उपासना में लीन कैसे रहते हैं ? और एक मैं हूं कि सारी स्वतंत्रता के बाद भी दुखी रहता हूं ।"

उन्हीं क़ैदियों में मोरक्को का अहमद अर-रशीदी नाम का क़ैदी भी था जिससे, अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए, होल्ड्ब्रूक्स ने धीरे-धीरे बात करना आरंभ कर दिया। वह कहते हैं कि, "इस्लाम के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं थी इसलिए मैं इसे समझने के प्रयत्न में रात-रात भर उससे बात करता रह जाता था ।" अर-रशीदी 18 वर्षों तक इंग्लैंड में रह चुका था और अल-क़ायदा से संबंध के शक में उसे बंदी बनाया गया था परन्तु सुबूत के अभाव में उसे बाद में रिहा कर दिया गया था ।

उन्होंने आगे बताया कि, "इस बीच में इस्लाम को समझने के प्रयत्न में मैंने नेट पर अध्ययन भी शुरू कर दिया था और धीरे-धीरे मुझे इस्लाम की ख़ूबियां समझ में आने लगी थीं ।" उनके अनुसार, "कुरआन दुनिया की सरलतम किताब है । न इसमें कोई जादू है, न विरोधाभास । यह तो इन्सानों के लिए एक अनुदेश पुस्तिका है ।" होल्ड्ब्रूक्स को उन क़ैदियों में नज़र आता था कि किस प्रकार कुरआन अत्यंत विषम परिस्थितियों में भी मानने वालों पर अपना असर रखती है । जब उन्हें इस्लाम की सच्चाई का पूरा विश्वास हो गया तो वह स्वयं को रोक नहीं पाये और दिसम्बर 2003 में एक दिन उन्होंने अर-रशीदी के समक्ष कलिमा शहादत पढ़कर इस्लाम स्वीकार कर लिया ।

# पर्यावरण संरक्षण : इस्लाम का दृष्टिकोण

◆ वारिस हुसैन

मानवजाति अनिवार्य रूप से प्रकृति या पर्यावरण पर निर्भर है, क्योंकि यह उसकी जीविका, विकास और जीवन-यापन के सभी साधनों का श्रोत है । लेकिन मानव सभ्यता के विकास और प्रगति की दौड़ ने पर्यावरण और पृथ्वी की प्राकृतिक धरोहर को विनाश के बिंदु पर ला खड़ा किया है । हमारा पर्यावरण अब हमें अनेक संकेत दे रहा है कि यह बहुत तनाव में है और इसके संरक्षण के लिए यदि तात्कालिक रूप से कुछ क्रान्तिकारी उपाय न किये गये तो इस पृथ्वी पर मानव जीवन भारी आपदा का शिकार हो जाएगा । इन्सानों का भविष्य इसी पर निर्भर करता है । आज का इन्सान जिन समस्याओं से जूझ रहा है और जो उसके जीवन पर विपरीत और अत्यंत हानिकारक और कष्टदायक प्रभाव डाल रहे हैं, और जिनका सामना हमें हर समय करना पड़ता है, उनको सूचीबद्ध करना एक कठिन कार्य है, पर उनमें से कुछ महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं–

(1) ग्लोबल वार्मिंग (2) जलवायु परिवर्तन (3) ओज़ोन परत का अवक्षेपण (4) वायु प्रदूषण (5) विषाक्त सामग्री (6) पानी की कमी (7) जैव विविधता का नुक़सान (8) अम्लीय वर्षा (9) वनों का विनाश (10) रोग (11) प्रकृति में हस्तक्षेप : क्लोनिंग, समलैंगिकता, गर्भपात आदि। (12) परमाणु, जैविक और रासायनिक हथियार ।

### बिगाड़ का मुख्य कारण

यह सभी समस्याएं आज भयावह रूप धारण कर चुकी हैं और इन पर नियंत्रण पाने के अनगिनत और निरंतर प्रयत्न के उपरांत भी मनुष्य को सफलता मिलती प्रतीत नहीं हो रही है । यदि यह कहा जाए की असफलता का मुख्य कारण बीमारी का सही आकलन न कर पाना और अपनी सारी शक्ति को ग़लत दिशा में केन्द्रित कर देना है, तो बात ग़लत न होगी । दुनिया में की जाने वाली सभी कोशिशों से

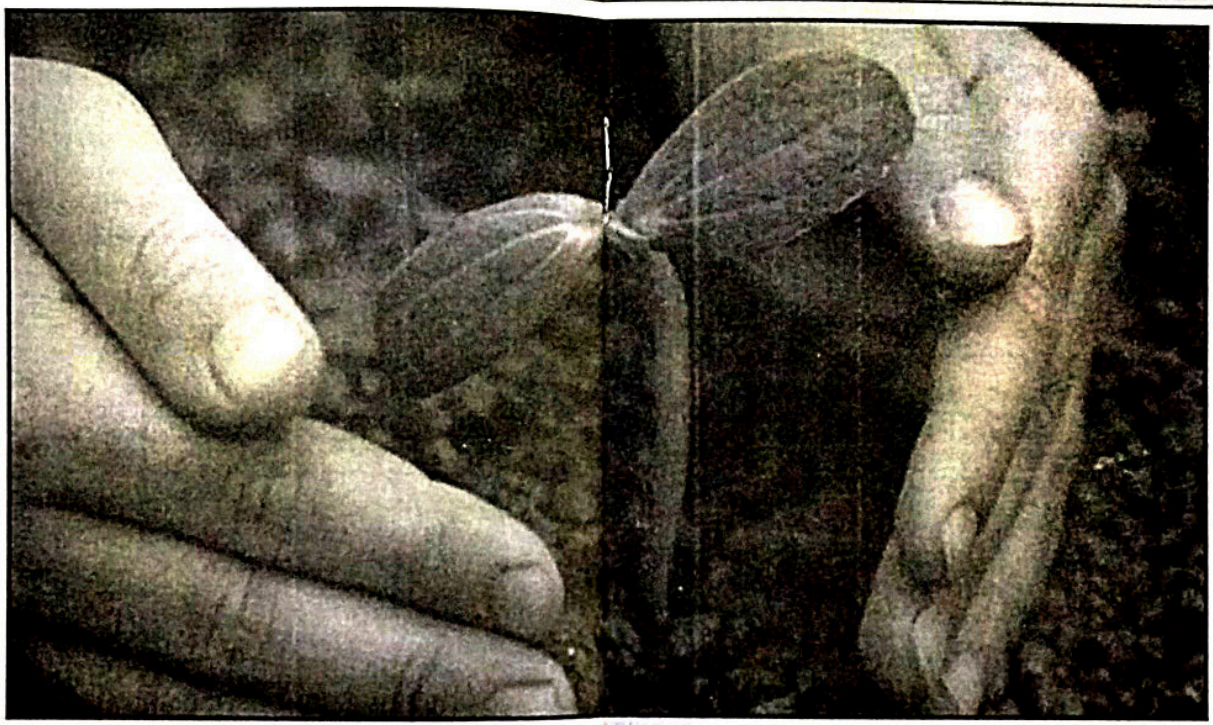

हट कर इस संबंध में इस्लाम अपना एक अलग दृष्टिकोण रखता है और पूरा दावा करता है कि यदि उन आधारों के अनुरूप जीवन व्यतीत किया जाए तो इन समस्त समस्याओं पर क़ाबू पाया जा सकता है ।

इन समस्याओं का इन्सानों को घेरना तब से आरंभ हुआ है जब से इन्सान ने स्वयं को इस संसार का मालिक समझना शुरू किया है और अल्लाह द्वारा प्रदान किये गये संसाधनों के उपयोग में उसके मार्गदर्शन के उल्लंघन में हर सीमा को तोड़ डाला है । इस संसार की रचना इन्सान ने नहीं की है और न वह इसका मालिक हो





सकता है । परम-दयालु ईश्वर अल्लाह ने इस संसार में इन्सानों को अपने प्रतिपादक और ट्रस्टी के रूप में बसाया था और मानवता के हित में इन समस्त संसाधनों का उपयोग उसके लिए संभव, सुलभ व सरल बना दिया था और उसे भली-भाँति यह ज्ञात भी करा दिया था कि उसका सुख, शान्ति और सफलता इसी में निहित है कि वह अपनी इस स्थिति को सदा याद रखते हुए जीवन व्यतीत करे तथा ईश्वर अल्लाह द्वारा बनाए गये प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ने से बचे । क़ुरआन में स्पष्ट रूप से यह आदेश दिया गया था–

"रहमान ने क़ुरआन सिखाया, उसी ने मनुष्य को पैदा किया, उसे बोलना सिखाया, सूर्य और चन्द्रमा एक हिसाब के पाबन्द हैं, और तारे और वृक्ष सजदा करते हैं, उसने आकाश को ऊंचा किया और संतुलन स्थापित किया, कि तुम भी तुला में सीमा का उल्लंघन न करो । न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो और तौल में कमी न करो ।"

(क़ुरआन 55:1-9)

### मुसलमानों की ज़िम्मेदारी

पर्यावरण संरक्षण इस्लाम का एक महत्वपूर्ण अंग है । पृथ्वी के प्रबंधक होने के नाते वैसे तो यह समस्त इन्सानों की ज़िम्मेदारी है कि वे पर्यावरण की देखभाल सक्रिय तरीक़े से करें और उसे नष्ट होने से बचाएं, परन्तु अधिकतर लोग स्वयं को इस धरती पर अल्लाह का प्रतिपादक और ट्रस्टी स्वीकार नहीं करते, इसलिए मुसलमानों पर यह ज़िम्मेदारी विशेष रूप से आ जाती है । अल्लाह ने निरुद्देश्य कुछ भी पैदा नहीं किया है । इस उद्देश्य से हटकर या उसके विपरीत किसी भी चीज़ का उपयोग ही असंतुलन और विनाश का मुख्य कारण है । मुसलमानों को इस संसार में अल्लाह की समस्त जीवित-अजीवित सृष्टि और उनके पर्यावरण के बीच संबंधों पर चिंतन करने और अल्लाह द्वारा बनाए गये Ecological संतुलन को बनाए रखने के लिए भरपूर रोल निभाने की आवश्यकता है । इस्लाम इसमें उनका भरपूर प्रोत्साहन करता है । पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण के लिए इस्लाम ने दो आधार दिये हैं–

(1) दुरुपयोग से बचना (2) संतुलित विकास

पवित्र क़ुरआन कहता है–

"वही है जिसने तुम्हें धरती में ख़लीफ़ा (अधिकारी, उत्तराधिकारी) बनाया और तुममें से कुछ लोगों के दर्जे कुछ लोगों की अपेक्षा ऊंचे रखे, ताकि जो कुछ उसने तुमको दिया है उसमें वह तुम्हारी परीक्षा ले ।" (क़ुरआन 6:165)

"ऐ आदम की संतान, इबादत के प्रत्येक अवसर पर अपनी शोभा धारण करो, खाओ और पियो, परन्तु हद से आगे न बढ़ो । निश्चय ही, वह हद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता ।" (कुरआन 7:31)

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) ने पेड़ों के रोपण और कृषि को एक अच्छा कार्य माना और इसको सदा प्रोत्साहित किया–"कोई भी मुसलमान यदि पेड़ लगाता है या कोई बीज बोता है, और फिर इन्सान, पक्षी या एक जानवर इसे खाता है, तो यह उसके लिए एक धर्मार्थ उपहार के रूप में माना जाता है । (बुख़ारी)

**इस्लाम का दृष्टिकोण**

पर्यावरण पर इस्लामी दृष्टिकोण इस आधार पर टिका हुआ है कि अल्लाह ही ब्रह्माण्ड का निर्माता और निर्वाहक है । संपूर्ण ब्रह्माण्ड को और उसमें कार्यरत समस्त शक्तियों को उसने पूर्ण ज्ञान (हिकमत) के साथ एक निश्चित उद्देश्य और योजना के अंतर्गत अस्तित्व प्रदान किया है । इसमें फैली हुई हर वस्तु व हर संसाधन की संख्या, मात्र और गुणवत्ता ईश्वरीय योजना द्वारा ठीक-ठीक निर्धारित की जाती है और इनमें से प्रत्येक अपनी निर्धारित भूमिका निभाता है । पवित्र कुरआन, इस बिंदु पर प्रकाश डालते हुए कहता है–

"हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के मध्य है उसे केवल हक़ के साथ और एक नियत अवधि तक के लिए पैदा किया है । किन्तु जिन लोगों ने इन्कार किया है, वे उस चीज़ को ध्यान में नहीं लाते हैं जिससे उन्हें सावधान किया गया है ।' (कुरआन 46:3)

अल्लाह ने संसाधनों की एक निश्चित मात्रा रखी है जो दुनिया की समस्त आवश्यकता के अनुरूप है और जो मांग और आपूर्ति में संतुलन को जन्म देती है । इसलिए, इस्लाम पर्यावरण को संतुलन के दृष्टिकोण से ही देखता है । कुरआन इस सत्य को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है–

"और हमने धरती को फैलाया और उसमें अटल पहाड़ डाल दिये और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अंदाज़ में उगाई । और उसमें तुम्हारे गुज़र-बसर के सामान निर्मित किये, और उनको भी जिनको रोज़ी देने वाले तुम नहीं हो ।"

(कुरआन, 15:19-20)

**प्रकृति : इस्लाम की निगाह में**

प्रकृति वास्तव में इन्सानों के लिए 'अल्लाह का उपहार' है जो इस पृथ्वी पर सबको जीवित रखती है । कुरआन में 750 से अधिक छंद हैं जो प्रकृति से संबंधित हैं, इनमें से निम्नलिखित का वर्णन कुरआन में बार-बार आया है ।

**पानी :** इस्लाम में पानी को बहुत महत्व दिया गया है और इसे समस्त जीवन के मूल-स्रोत के रूप में पेश किया गया है । उदाहरण के लिए कुरआन कहता है : 'और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनायी, तो क्या वे मानते नहीं?' (कुरआन, 21:30) कुरआन में यह भी कहा गया है कि, 'अल्लाह ने पानी से पैदा किया हर उस जानदार को जो अपने पेट के बल चलता है, जो दो पैरों पर चलता है या चार पैरों पर । पानी शुद्ध और शुद्धता प्रदान करने वाला है ।' (कुरआन, 25:48) पानी की इतनी महत्वता को देखते हुए ही पानी को बर्बाद करने से मना किया गया है । हज़रत मुहम्मद ने फ़रमाया है कि, "पानी को बर्बाद मत करो, चाहे तुम बहते हुए दरिया के पास ही क्यों न हो ।" कुरआन में यह भी बहुत विस्तार से बताया गया है कि किस प्रकार अल्लाह ने ज़मीन पर पानी के संतुलन को बनाए रखने की व्यवस्था की है ।

"अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है । फिर वे बादलों को उठाती हैं, फिर जिस तरह चाहता है उन्हें आकाश में फैला देता है और उन्हें परतों और टुकड़ियों का रूप दे देता है । फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से वर्षा की बूंदें टपकी चली आती हैं । फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है, उसे बरसाता है । तो क्या देखते हैं कि वे हर्षित हो उठे ।"

(कुरआन, 30:48)

"और हमने आकाश से एक अंदाज़े के साथ पानी उतारा । फिर हमने उसे धरती में ठहरा दिया, और उसे विलुप्त करने की सामर्थ्य भी हमें प्राप्त है । फिर हमने उसके द्वारा तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये । तुम्हारे लिए उनमें बहुत-से फल हैं । (जिनमें तुम्हारे लिए कितने ही लाभ हैं) और उनमें से तुम खाते हो ।"

(कुरआन 23:18-19)

**पृथ्वी :** कुरआन में पृथ्वी के तत्वों से ही मानव की रचना की बात कही गयी है । अल्लाह कहता है : "उसी से हमने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटाते हैं और उसी से तुम्हें दुबारा निकालेंगे ।" (कुरआन 20:55)। इतना ही नहीं अल्लाह ने इस धरती को बिछौने के रूप में विकसित किया है जिससे इन्सान यहां सुकून से जीवन बिता

सके । "और अल्लाह ने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया, ताकि तुम उसके विस्तृत मार्गों पर चलो'।" (कुरआन, 71:18-19)। इसी तरह पृथ्वी को मानव के लिए एक 'मां' के रूप में पेश किया गया है । हज़रत मुहम्मद कहते हैं– "पृथ्वी को संरक्षित करो, यह तुम्हारी मां है ।"

**वनों की कटाई :** इस्लाम अनावश्यक रूप से पौधों और पेड़ों को काटने या नष्ट करने के ख़िलाफ़ है । हज़रत मुहम्मद का स्पष्ट आदेश है कि, "जो बिना स्पष्ट कारण के पेड़ काटता है, अल्लाह उसे नरक में डाल देगा ।" इस्लाम मुसलमानों को अधिक से अधिक पेड़ लगाने और उनकी रक्षा करने के लिए प्रेरित करता है और इसे इबादत की संज्ञा देता है । अल्लाह के पैग़म्बर का कहना है : "बिना मजबूरी के पेड़ मत काटो ।"

**जानवरों का संरक्षण :** इस्लाम बताता है कि इस पृथ्वी पर इन्सान के अतिरिक्त दूसरे जीव-जंतु के समूह भी हैं और वह सब सम्मान योग्य हैं । इसलिए हमारे हृदय में जानवरों के प्रति दयालुता होनी चाहिए और हमें सभी प्रजातियों के संरक्षण को सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए । कुरआन में अल्लाह कहता है, "धरती में चलने-फिरने वाला कोई भी प्राणी हो या अपने दो परों से उड़ने वाला कोई पक्षी, ये सब तुम्हारी ही तरह के गिरोह हैं ।"

(कुरआन, 6:38)

**संसाधन अमानत हैं :** अल्लाह सभी संसाधनों का वास्तविक मालिक है, इन्सान नहीं । संसार के समस्त संसाधन इन्सान को अमानत के रूप में सौंपे गये हैं इसलिए इनका सही और उचित उपयोग करना इन्सान का कर्तव्य है । उसे संसाधनों को बर्बाद करने से हर हाल में बचना चाहिए । अमानतदार होने के नाते उसका यह कर्तव्य बनता है कि वह प्रकृति का संरक्षण करे और पर्यावरण को ख़राब और प्रदूषित होने से बचाए । अल्लाह ने कुछ भी अनावश्यक, निरुद्देश्य और व्यर्थ नहीं बनाया है । कुरआन कहता है, "हमने आकाश और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, व्यर्थ नहीं पैदा किया ।" (कुरआन, 38:27)

अल्लाह की समस्त रचनाओं का संरक्षण हर मुसलमान का कर्तव्य है । वह ऐसे लोगों को पसन्द करता है और उन्हें पुरस्कृत करने का वादा करता है जो पर्यावरण के संरक्षण का प्रयत्न करते हैं । इन्हीं आदर्शों को सामने रखते हुए हज़रत मुहम्मद ने फ़रमाया कि, "जो कोई भी पेड़ लगाता है और लगन से उसकी देखभाल करता है यहां तक कि वह परिपक्व हो जाए और उसमें फल-फूल आ जाए, अल्लाह उसे पुरस्कृत करता है ।" प्रथम ख़लीफ़ा, हज़रत अबू-बक्र ने पत्र के माध्यम से अपने सैनिकों को इसी का आदेश दिया था । उन्होंने लिखा था, "पेड़ को मत काटना, नदी के पानी को बर्बाद मत करना, जानवरों को नुक़सान मत पहुंचाना और अल्लाह की समस्त सृष्टि के साथ हमेशा दयालुता और मानवता का व्यवहार करना, यहां तक कि अपने दुश्मनों के साथ भी ।"

वास्तविक पर्यावरण संरक्षण के यही आधार हैं जिन पर चलने का आदेश इस्लाम देता है ।

**समाधान**

इस्लाम इन्सानों को इस दुनिया में सादा और सरल जीवन जीने की दावत देता है और अपने मानने वालों के लिए सारी कठिनाइयों को दूर करने का भी वादा करता है । एक ऐसा जीवन जो अल्लाह की स्थापित सीमाओं के अन्दर रहते हुए व्यतीत किया जाए, जिसमें न अंधी भौतिकता की दौड़ हो, न एक-दूसरे पर अत्याचार और शोषण की कोई भावना मन में जगह बनाने पाये । पर्यावरण में आया हुआ असंतुलन इन्सानों के अपने कर्मों का फल है, न कि प्रकृति का प्रकोप । कुरआन स्पष्ट रूप से कहता है–

"थल और जल में बिगाड़ फैल गया स्वयं लोगों ही के हाथों की कमाई के कारण, ताकि वह उन्हें उनकी कुछ करतूतों का मज़ा चखाए, कदाचित वे बाज़ आ जाएं ।"

(कुरआन, 30:41)

सादा और सरल जीवन पर्यावरण संरक्षण के पूर्णत: अनुकूल है । एक ओर जहां इससे खपत में कमी आएगी और परिणामस्वरूप संसाधनों में बढ़ोत्तरी होगी वहीं दूसरी ओर ऐसे पदार्थों के उत्पादन की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी जो आज मानव जीवन के लिए अभिशाप बनते जा रहे हैं । पर्यावरण संरक्षण पर हो रही विश्वव्यापी बहस और प्रयत्न के बीच एक मार्ग इस्लाम भी सुझाता है और इस दावे के साथ की सफलता सुनिश्चित है । ऐसे में इन्सानियत से मुहब्बत करने वाले और उसकी पीड़ा को महसूस करने वाले हर व्यक्ति के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह इस विकल्प पर भी ग़ौर करे । इस धरती पर इन्सान ही सबसे महत्वपूर्ण है और उसके जीवन को बचाने के हर विकल्प का स्वागत होना ।

हज़रत अनस ( रज़ि॰ )
से रिवायत है कि नबी
(सल्ल॰) ने कहा : "तुममें से कोई
व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जब
तक कि अपने भाई के लिए भी वही
चीज़ पसन्द न करे जिसे वह अपने
लिए पसंद करता है ।"
( बुख़ारी, मुस्लिम )


*A Well Wisher*

**INSIGHT INTERNATIONAL SCHOOL**

**HYDERABAD**

# वर्तमान पर्यावरण समस्या और मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाएं

◆ अब्दुर्रशीद अगवान

कुरआन करीम की लगभग 300 आयतों और 40 हदीसों में पर्यावरण संबंधी अनुकम्पाओं, उनमें बिगाड़ पैदा करने के प्रभावों और कारणों तथा एक अच्छे वातावरण वाली ज़िन्दगी के लिए मार्गदर्शन पाया जाता है, जो इस्लाम के पर्यावरण संबंधी पक्ष को नुमायां करता है । इन आयतों एवं हदीसों का सार यह है कि अल्लाह ने धरती और आकाश की हर वस्तु के बीच मात्रा के निर्धारण के साथ संतुलन रखा है, जिसे बनाए रखना इन्सान का कर्तव्य है । इसके अतिरिक्त यह कि इस संतुलन में विघ्न डालना और प्रदूषण अपराध ही नहीं गुनाह भी है । इस लेख में हम कुछ चुनी हुई हदीसों के द्वारा इस्लाम के पैग़म्बर (सल्ल॰) के उस उत्तम आदर्श को समझने का प्रयास करेंगे जिनका संबंध प्रत्यक्ष रूप से वर्तमान पर्यावरण संबंधी बिगाड़ से है ।



### प्राकृतिक संसाधन

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "तीन चीज़ें मुसलमानों के बीच समान हैं, पानी, चरागाह और आग । इस हदीस में प्राकृतिक रूप से प्राप्त पानी, जानवरों के इस्तेमाल की जगहों और आग को समाज के संयुक्त संसाधन बताया गया है । यहां आग को उन तमाम ऊर्जाओं (Energies) का प्रतिनिधि मानते हुए सोलर इनरजी और हवा को भी संयुक्त संसाधनों में गिना जाएगा । इस आदेश का तात्पर्य यह हुआ कि इन संसाधनों का इस्तेमाल आम हितों को प्रभावित न करे और न केवल वर्तमान नस्लों, बल्कि आने वाली नस्लों के लिए भी इन प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धत निश्चित की जाए । इन संसाधनों पर किसी का स्वामित्व तथा उनके अनुचित उपयोग को निषिद्ध ठहराया गया है । प्राकृतिक रूप से उपलब्ध पानी जो तालाबों, नदियों, धरती के अन्दर एक्वाफ़र्स या समुद्रों में पाया जाता है । इसका उपयोग इस प्रकार किया जाए कि इसकी उपलब्धता और लाभ सभी के लिए आम हों और जारी रहें । आग के तमाम रूपों यथा लकड़ी, कोयला, पेट्रोल, बिजली, सोलर इनरजी आदि भी संयुक्त होंगी और उन पर सरकार का कंट्रोल होगा ।

### पाकी और सफ़ाई-सुथराई

इस्लाम में सफ़ाई-सुथराई और पारदर्शिता और पाकी (पवित्रता) पर बहुत बल दिया गया है और इस संबंध में निम्नलिखित हदीसें नक़्ल की जाती हैं–

✍ "सफ़ाई आधा ईमान है ।"

✍ "सफ़ाई-सुथराई ईमान को दावते देती है और ईमान जन्नत में ले जाता है ।"

✍ "शैतान गन्दगी और नापाकी को पसन्द करता है ।"

✍ "पूरी धरती को नमाज़ के लिए पाक किया गया है ।"

✍ "अल्लाह पाक है और पाक चीज़ों को पसन्द करता है ।"

✍ "अपने आंगन साफ़ रखो और यहूदियों की तरह मत हो जाओ ।"

✍ "रास्ते पर हानिकारक चीज़ों को हटाना ईमान का हिस्सा है ।"

इन चुनी हुई कुछ हदीसों से यह बात उभर कर सामने आती है कि ईमान वालों की ज़िन्दगी में पाकी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है और किसी प्रकार की नापाकी (गन्दगी) की वहां कोई जगह नहीं । वुज़ू के दौरान बदन के खुले हिस्से नापाक न भी हों तो धूल-मिट्टी के कणों को दिन में कम से कम पांच बार हटाया जाता है मानो थोड़ी-सी भी गन्दगी सहन नहीं है ।

इन निर्देशों से जो समाज अस्तित्व में आता है, वहां पाकी और सफ़ाई-सुथराई पर ज़ोर होगा और प्रदूषण से घृणा और विरक्ति, अर्थात स्वच्छ भोजन, साफ़ पानी, साफ़ हवा एक ईमान वाली ज़िन्दगी का अनिवार्य अंग होगा और ऐसे तमाम तत्व जो उन्हें प्रदूषित और हानिकारक बनाएं वे एक अच्छे समाज में अनुपयोगी समझे जाएंगे, चाहे उनसे किसी का कोई हित ही क्यों न जुड़ा हो ।

### गन्दगी और प्रदूषण

उपर्युक्त पंक्तियों में इस्लाम में पवित्रता एवं स्वच्छता का उल्लेख हुआ । यहां नीचे उन हदीसों को दिया जा रहा है, जिसमें इस्लाम के पैग़म्बर ने स्पष्ट रूप से कुछ प्रकार के प्रदूषणों से मना किया गया है–

✍ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि हम से अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "दो घृणित कामों से बचो ।" हमने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल ! वे घृणित काम क्या हैं ?" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "रास्तों या छायादार वृक्ष के नीचे मल-मूत्र त्यागना ।"

✍ तबरानी ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से उद्धृत किया है कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से सुना है, "जो कोई सार्वजनिक उपयोग की जगहों में मल-मूत्र त्यागता है उस पर अल्लाह, फ़रिश्तों और इन्सानों की ओर से फिटकार होती है ।"

मल-मूत्र वह न्यूनतम प्रदूषण है जो इन्सान अनजाने में सार्वजनिक उपयोग की जगहों, छांवदार वृक्षों और पानी में फैला सकता है । जब इस प्रकार का प्रदूषण से मना किया गया है तो फिर गंभीर प्रकार के प्रदूषणों को जिनमें विषैले रासायनिक पदार्थों को ज़मीन, पानी और वातावरण में फैलाना सम्मिलित है, बिल्कुल असहनीय ठहरेंगी ।

### प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में सीमोल्लंघन

वर्तमान पर्यावरण संबंधी संकट का एक पहलू यह भी है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित उपयोग नहीं करते, इसमें सीमाओं का उल्लंघन कर जाते हैं । मगर इसमें इस्लाम के पैग़म्बर के निर्देश पर विचार किया जाए तो शायद एक बेहतर स्थिति पैदा हो । इस संबंध में यहां दर्ज हदीस हमारा भरपूर मार्गदर्शन करती है–

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) किस समय हज़रत सअद (रज़ि॰) के पास से गुज़रे जो नमाज़ के लिए वुज़ू कर रहे थे । आपने उन्हें देखकर फ़रमाया, "ऐ सअद ! सीमा का उल्लंघन किया है ?" हज़रत सअद ने पूछा, "क्या वुज़ू करने में भी सीमोल्लंघन है ?" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "हां, चाहे तुम बहती नदी के किनारे क्यों न हो ।"

इस हदीस में एक पसन्दीदा और नेक काम के लिए भी आवश्यकता से अधिक पानी के प्रयोग से मना किया गया है और प्रचुर मात्रा में पानी उपलब्ध होने के बावजूद ऐसा करने से रोका गया है । आज हम देखते हैं कि जिन चीज़ों की हमारी ज़िन्दगी में सबसे अधिक नाक़द्री होती है उनमें पानी भी एक है । आने वाले समय में उपलब्ध स्वच्छ पानी की कमी निश्चित है, क्योंकि अधिकतर पीने योग्य पानी प्रदूषित हो गया है ।

वर्षा की व्यवस्था बिगड़ गयी है और भूमि के नीचे पानी के स्रोत भी सूख रहे हैं । ऐसे में इस हदीस का बड़ा महत्व है । यह हदीस हमसे मांग करती है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सोच-समझकर करें चाहे उनकी प्रचुर मात्रा ही क्यों न उपलब्ध हो । इसी सावधानी के तहत पहले

वुज़ू के लिए टोंटी दार लोटों का इस्तेमाल होता था, मगर नये ज़माने में उसका इस्तेमाल छोड़ दिया गया है जिसने पानी के अपव्यय की राहें खोल दी हैं। हमें उपर्युक्त हदीस की रोशनी में आत्म-मंथन करना चाहिए।

### जीवों पर दया

पर्यावरण संबंधी संकट का एक पहलू यह भी है कि विभिन्न प्रकार के जीव मानव के हाथों समाप्त हो रहे हैं। इन जीवों से प्रकृति को जो लाभ थे इससे इन्सान तथा अन्य प्राणी वंचित होते जा रहे हैं। इसके कारणों में बड़े पैमाने पर जंगलों की कटाई, एक ही प्रकार की खेती पर ज़ोर, महानगरों के लिए जगह उपलब्ध होना आदि हैं। नीचे अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की वे शिक्षाएं दी जा रही हैं जो एक ओर आप (सल्ल॰) को मानवता उपकारक सिद्ध करती हैं, दूसरी ओर जीवों को एक-दूसरे के लिए लाभदायक बनाती हैं।

✍ "दया करने वालों पर सबसे अधिक दया करने वाला दया करेगा।"

✍ "तुम धरती वालों पर दया करो, आकाश वाला तुम पर दया करेगा।"

✍ "भीगी आंखों के साथ किसी जीव के साथ की गयी एक नेकी प्रदान का कारण होती है।"

✍ "किसी जीव को अकारण मत मारो और उन्हें अपने खेल-तमाशों का निशाना मत बनाओ।"

### पेड़-पौधों का महत्व

पेड़-पौधों का अस्तित्व धरती पर जीवन की ज़मानत है। इनसे इन्सान और अन्य जीवों को भोजन ही नहीं मिलता बल्कि अन्य चीज़ों के अतिरिक्त ऑक्सीजन भी मिलता है। ऐसे में यदि हरियाली की हरी चादर ज़मीन से समाप्त होने लगे तो इसका नुक़सान जीवों और पेड़-पौधों दोनों को होगा।

वर्तमान समय में यही हो रहा है। ज़मीन पर पायी जाने वाली हरी चादर जो जंगलों और खेत-खलियान बनाते हैं, पिछले 50 वर्षों में एक तिहाई से अधिक समाप्त हो गयी है। ऐसे में ग्रीन हाउस इफ़ेक्ट तथा अन्य कारकों से मौसम की व्यवस्था में भारी बदलाव हो रहा है। वर्षा का बिगड़ा सिस्टम कहीं अकाल लाता है, तो कहीं बाढ़ का क़हर।

इन हालात में इस्लाम के पैग़म्बर की इन शिक्षाओं का महत्व कई गुना बढ़ जाता है जो आप (सल्ल॰) ने पेड़-पौधें की सुरक्षा के संदर्भ में दी हैं–

✍ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "कोई मुसलमान जब एक ऐसा वृक्ष लगाता है या फ़सल उगाता है जिसमें से चिड़िया या अन्य जीव कुछ खाते हैं तो उसे सदक़े का अज्र (प्रतिदान) मिलता है।"

(बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी)

आप (सल्ल॰) ने पेड़-पौधों और पत्तों को अकारण तोड़ने से मना किया है।

✍ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "अगर क़ियामत सामने हो और किसी के हाथ में खजूर का पौधा लगाने के लिए मौजूद हो और उसे उसको लगाने की क्षमता हो तो उसे चाहिए कि उसे लगा दे।"

इन कथनों की रोशनी में एक ओर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पेड़-पौधों को अकारण काटने या उन्हें नुक़सान पहुंचाने से मना किया गया है और दूसरी ओर उनके लगाने को पुण्य कार्य बताया गया है।

### जीवों और पेड़-पौधों की सुरक्षा

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मदीना के आसपास 'हरीम' बनाने का आदेश दिया जो ऐसे क्षेत्र थे जहां जानवरों और पेड़-पौधों का काटना मना था। आम तौर पर युद्ध के अवसर पर पेड़-पौधों और जानवरों की कोई परवाह नहीं की जाती, मगर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने युद्ध की स्थिति में भी उनकी सुरक्षा का आदेश दिया है। आपने पाले हुए मवेशियों को जंग के दौरान मारने, खेतों को नष्ट करने, पेड़ों को काटने से मना किया है और यदि कोई ऐसा करता है तो उसके कृत्य को धरती में बिगाड़ की संज्ञा दी है।

(अबू दाऊद, अल-मुग़नी)

उपर्युक्त तथ्यों की रोशनी में यह स्पष्ट हो जाता है कि क़ुरआन और हदीस में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जो शिक्षाएं दी गयी हैं उनका वर्तमान समय में कितना महत्व है और स्वयं मुहम्मद (सल्ल॰) का आदर्श जीवन इसकी प्रेरणा देता है।

# ڈائریاں اور کیلنڈر 2020

## شب وروز (ڈائری) عام اور ڈیلکس ایڈیشن

- ہر صفحے پر قرآنی آیات و احادیث رسولؐ، انبیاء کرام، صحابۂ عظام اور بزرگان سلف کے سبق آموز اقوال • شروع و آخر کے ۳۸ صفحات پر اہم و دل چسپ معلومات • مسنون دعائیں • خطبات جمعہ و نکاح، قربانی، عقیقے، نماز جنازہ اور استخارے کی ماثورات • نقشہ اوقات نماز • اہم سفارت خانے • جماعت اسلامی ہند کے مرکزی و صوبائی دفاتر • لوک سبھا اور راجیہ سبھا کے مسلم ممبران کے پتوں کے علاوہ بہت ساری دوسری معلومات سے مزین ایک دل چسپ و مفید ڈائری۔
- صفحات ۳۲۸، نفیس کاغذ، PVC کور۔

**نوٹ:** شب وروز ڈائری حسب معمول انگریزی میں بھی شائع ہو رہی ہے۔

## اسلامی ڈائری (پاکٹ سائز)

- ہر صفحہ قرآنی آیات، احادیث رسولؐ، بزرگوں کے اقوال سے مزین • ۲۵ صفحات پر مشتمل اہم اور ضروری معلومات • کل صفحات: ۲۲۴ نفیس اور عمدہ کاغذ۔

## کیلنڈر

- چار رنگوں پر مشتمل سفید آرٹ پیپر پر نفیس طباعت
- اردو ہندی اور انگریزی تراجم کے ساتھ ایک دیدہ زیب کیلنڈر
- 15x20 سائز میں ۳ ورقی دو طرفہ طباعت، ماحولیات کے تحفظ پر دیدہ زیب ڈیزائن اور ہر مہینے کی تاریخیں نمایاں حروف میں۔

## نوٹ

اسلامی کیلنڈر اور شب و روز ڈائری پر اپنے ادارے کا نام چھپوانے کے لیے ۱۵/ اکتوبر ۲۰۱۹ تک تفصیلات لازماً ارسال فرمادیں۔
شب وروز اور کیلنڈر کے لیے کم از کم مطلوبہ تعداد بالترتیب 100 اور 1000 ہے۔


**MMI PUBLISHERS** | مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵
D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi - 110025
Phone: 26981652,26984347 Mob: 7290092401
E-mail: info@mmipublishers.net Website: www.mmipublishers.net
Customer Care No : 7290092403 E-mail: info@mmipublishers.net :آرڈر کے لیے رابطہ کریں

# पर्यावरण और हमारा दायित्व

पर्यावरण (Environment) व्यक्ति के आस-पास की वह स्थान या परिस्थिति है, जिसका व्यक्ति के अस्तित्व, जीवन-निर्वाह, विकास आदि पर प्रभाव पड़ता है । सामान्य अर्थों में आप इसे 'वायुमंडल' भी कह सकते हैं ।



**वायुमंडल प्रकृति का वरदान**

हमारा वायुमंडल हमारे लिए प्रकृति का वरदान है । यह हमारा पालनकर्ता और जीवन का आधार है । हमें स्वस्थ और सुखमय रखने का रक्षा कवच है । आप यह सोचकर देखिये कि यदि आपका यह रक्षा कवच ही यदि यह विषाक्त हो जाए तो यह अभिशाप बनकर मानव-जीवन का संहारक बन जाता है । इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा का दायित्व हम सबका है ।

आज़ादी से पहले जब बड़े-बड़े उद्योगों का विस्तार नहीं हुआ था, हमारा पर्यावरण बिल्कुल शुद्ध था । शुद्ध वायु हमारा आलिंगन करती थी । शुद्ध जल हमारा अभिषेक करता था । उर्वर भूमि हमें स्वास्थ्यप्रद अन्न प्रदान करती थी । जीवन में न अधिक भाग-दौड़ थी, न हाय-हाय । संतुष्टि पूर्ण शान्तिप्रद जीवन हम सबके लिए पर्यावरण का वरदान था ।

**शस्य श्यामला धरती और हम**

भारत भूमि शस्य श्यामला थी, वन उपवनों से हरी-भरी थी । वे पेड़-पौधों, वृक्ष-लताओं से समृद्ध थी, इसलिए वायुमंडल शुद्ध था । हवा की पावन सुगंध जन-जीवन को सुरभित कर रही थी । जनसंख्या बढ़ी । इसकी गति तीव्र हुई । इस बढ़ी हुई जनता के निवास के लिए भूमि चाहिए थी । दूसरी ओर, बढ़ती जनसंख्या की भूख मिटाने और अधिकाधिक सुख-सुविधाएं प्रदान करने के लिए उत्पादन बढ़ाने की ज़रूरत थी । उत्पादन बढ़ाने के लिए कारख़ाने, फैक्ट्रियां तथा औद्योगिक संस्थान स्थापित किये गये । इनके लिए भूमि की मांग हुई । इसकी मांग पूरी की वन-उपवनों ने, खेत-खलिहानों ने । जहां भूमि शस्य श्यामला थी, वहां गगन चुम्बी इमारतों का निर्माण हो गया, भूमि को skyscrappers से भर दिया, वायु मार्ग को अवरुद्ध कर दिया और हमने प्राणदायिनी वायु को अपने ही हाथों कुछ सीमा तक अवरुद्ध कर अपने लिए अनेक असाध्य रोगों को निमंत्रण दे दिया ।

**बढ़ता उद्योग और पर्यावरण**

जन-सुख-सुविधा के लिए औद्योगिक संस्थानों नयी वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी ने उत्पादन तो बढ़ाया, किन्तु पर्यावरण को तीन रूपों में प्रभावित कर दिया । (1) कारख़ानों की चिमनियों से जो धुआं निकला, उसने वायु को प्रदूषित कर दिया । उत्पादन के अवशेष तथा व्यर्थ पदार्थों को जलाया और भराव के काम लिया गया । दोनों ने वायु को प्रदूषित किया (2) उद्योगों के दूषित रासायनिक द्रवित पदार्थ को पास की नदी में प्रवाहित कर दिया । जिससे पेय-जल दूषित हो गया । (3) वन के वृक्ष कटने से मौसम का मिज़ाज बिगड़ा, वर्षा का वर्शन बेसमय हुआ । वर्षा का जल जो पहले वृक्षों के कारण बहने से रुकता था, बेरोक-टोक बहने लगा, फलतः भूमि की उर्वरा शक्ति घटने लगी । कुछ

औद्योगिक उत्पादनों के लिए वनों का भी निर्ममता ने विनाश किया गया, इससे भी पर्यावरण दूषित हुआ ।

**वायु प्रदूषण और पर्यावरण**

वायु प्रदूषण का प्रथम कारण था वन-उपवन की कटाई। कटाई का कारण था जनसंख्या की वृद्धि के साथ निवास के लिए भवनों का निर्माण और औद्योगिक संस्थानों की स्थापना । इसलिए वायु प्रदूषण रोकने के लिए जनसंख्या वृद्धि को रोकना हमारा कर्तव्य होना चाहिए । दो से अधिक बच्चे उत्पन्न करना, अपराध मानना होगा । दूसरी ओर, औद्योगिक संस्थानों को शहर से बाहर, आबादी से दूर स्थानांतरित करवाना होगा । उच्च न्यायालयों तथा सर्वोच्च न्यायालयों के निर्णयों के मानने के लिए बाध्य करना होगा। तीसरी ओर, औद्योगिक कचरे का वैज्ञानिक हल ढूंढ़वाना, हमारी ज़िम्मेदारी है । वाहनों के पाइपों से जो गैस सरेआम जीवन में विष घोल रही हैं, उनको रोकें । हम अपने वाहनों को 'प्रदूषण-मुक्त' प्रमाण-पत्र मिलने पर ही चलें । धूम्रपान जो हमारे शौक़ की विवशता है, उसे यथासंभव क़म करें प्रदूषित स्थलों पर नाक पर रूमाल रखने का स्वभाव बनाएं।

**वनीकरण समय की मांग**

भूमि को पुन: उर्वर बनाना होगा, इसके लिए वन-उपवनों का विकास करना होगा तथा वनों के विनाश को रोकना होगा। असंख्य पेड़-पौधों लगाकर उनको पल्लवित-पुष्पित करना हमारा दायित्व होगा । राजमार्गों तथा अत्यधिक व्यस्त मार्गों के बीच या दोनों ओर जैसे भी संभव हो । वृक्षों की पंक्तियां सुशोभित करवाना भी हम अपना धर्म समझें । जब भी एक पेड़ काटे उसके स्थान पर पहले एक पेड़ ज़रूर लगा दें ।

जीवन की दूसरी आवश्यकता है, जल औद्योगिक-संस्थानों ने तो जल को विषाक्त किया ही, किन्तु हमने अपनी अव्यवस्था से भी जल को दूषित कर दिया, कपड़े-बरतन-हाथ धोने, स्नान करने तथा फ़र्श साफ़ करने पर जो अशुद्ध जल बहता है, उसे हमने पास के जाल स्रोत में बहा दिया । उसमें अपना मल और मूत्र भी प्रवाहित करते रहे जिससे जल और भी प्रदूषित हो गया ।

**बिन पानी सब सून**

शुद्ध-जल पीने को मिले, यह हमारा अधिकार है, पर जल प्रदूषण से बचना भी हमारा दायित्व है । शहर के गन्दे जल का पास की नदी में प्रवाहित करने के स्थान पर आबादी से दूर उसके विसर्जन की व्यवस्था करवानी होगी। दूसरे, औद्योगिक रासायनिक द्रव को जल में प्रवाहित करने पर पूर्ण प्रतिबंध लगवाना होगा । तीसरे, रासायनिक प्रक्रिया द्वारा जल के परिशोधन को निश्चित करना होगा । चौथे, जल के अपव्यय को रोकें तथा पेय जल को फिल्टर करके या उबाल कर प्रयोग में लाएं ।

**ध्वनि प्रदूषण और हमारा जीवन**

पर्यावरण को प्रदूषित करने का एक और माध्यम है-'शोर' । ऐसे 'ध्वनि प्रदूषण' कहा जाता है । ऊंची, तीखी और कर्ण कटु ध्वनियां जीवन के लिए हानिप्रद हैं । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की ऊंची आवाज़ तो घर की चारदीवारी में गूंजती है, जो घर के वातावरण को दूषित करती हैं । धार्मिक स्थानों पर लगे लाउडस्पीकर, दुकानों पर लगे रेडियो, बैंस की आवाज़, जलसे-जुलूसों की नारेबाज़ी अनचाहे हमें झेलनी पड़ती हैं । इसी प्रकार सड़कों पर चलते वाहनों के 'हार्नों' की आवाज़ तथा उनकी गड़गड़ाहट भी भयंकर शोर उत्पन्न करती हैं । 'शोर' से उत्पन्न होना है । ध्वनि प्रदूषण से प्रभावित होती है हमारी श्रवण-शक्ति । ध्वनि प्रदूषण से न सिर्फ़ हमारी सुनने की शक्ति समाप्त हो जाती है, बल्कि इससे और भी कई रोग हो जाते हैं ।

**पर्यावरण की रक्षा हमारा संकल्प**

हम अपने रोज़मर्रा की चीज़ों को पाने में या यूं कहें कि अपने लालच में अपने ही पर्यावरण को हानि पहुंचा रहे हैं । पावन वायु, शुद्ध जल तथा शक्तिवर्धक भोजन हमारे जीवन जीने के लिए अनिवार्य हैं । इनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना हमारा दायित्व है । यदि हमने अपने दायित्व से मुख मोड़ा तो सृष्टि के विनाश के अपराधी हम स्वयं होंगे, प्रकृति या जगत-नियंता नहीं । इसलिए हमें अपने पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी बनाना पड़ेगा । आज विश्व पर्यावरण को लेकर चिंतित है । प्रदूषक तत्वों की मात्रा निरंतर बढ़ती जा रही है । यह सम्पूर्ण मानवता के लिए ख़तरनाक है । इसलिए हम सबको मिलकर इसके ख़िलाफ़ मोर्चा खोलना होगा और इसे अपनी ज़िम्मेदारी मानते हुए इस दिशा में ठोस पहल करना होगा । (बेहतर लाइफ़ डॉट कॉम)

# हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा अल-सहमी (रज़ि०)

❖ अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा

हमारी इस कहानी के हीरो वह महान सहाबी हैं जिनका नाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा अल-सहमी (रज़ि०) है। हो सकता था कि अरब के लाखों लोगों की तरह इनको भी इतिहास अपने दामन में छिपाकर गुमनाम कर देता, मगर इस्लाम के सौजन्य से उनको दो ऐसे शुभ अवसर प्राप्त हुए जिनमें वे परस्पर अपने समय के दो शहंशाहों–फ़ारस के बादशाह किसरा और रोम के तानाशाह क़ैसर से मिले और दोनों के साथ मुलाक़ातों में साहस, विवेक एवं वीरता का ऐसा कीर्तिमान रच गये जिसे इतिहास क़ियामत तक याद करता रहेगा।

जहां तक अब्दुल्लाह (रज़ि०) की फ़ारस के बादशाह किसरा से मुलाक़ात की घटना का ताल्लुक़ है तो वह छह हिजरी में घटित हुई जब उनको ईरान के बादशाह किसरा के पास इस्लाम का दावती ख़त ले जाने का भार सौंपा गया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) इस मुहिम के ख़तरों से पूरी तरह अवगत थे, क्योंकि आपके संदेशवाहकों को ऐसे देशों और नगरों का सफ़र करना था जिनसे वे क़रीब-क़रीब पूरी तरह अपरिचित थे। वे उन मुल्कों की भाषाएं भी नहीं जानते थे और न उन देशों के बादशाहों के मिज़ाज से वाक़िफ़ थे। फिर उन्हें तो उन देशों के बादशाहों को, उनके धर्म को, उनके सम्मान और प्रतिष्ठा को छोड़कर एक ऐसी क़ौम का धर्म क़बूल करने की दावत देनी थी जो ख़ुद कल तक उनमें से कुछ बादशाहों के अधीन भी रह चुकी थी। यह यात्रा वास्तव में एक ऐसी यात्रा थी जिसमें जाने वाले को गुमशुदा और उससे लौटकर आ जाने वाले को नवजात समझा जाता था। यही कारण था कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपने सहाबियों को जमा किया और उनके सामने अपनी तक़रीर (भाषण) में अल्लाह की प्रशंसा करने के बाद फ़रमाया : मैं तुममें से कुछ लोगों को अजम (अरब से बाहर के देश) के बादशाहों के पास भेजने वाला हूं। मतभेद के शिकार न बन जाना, जिस प्रकार बनू इसराईल बिन मरयम के पुत्र हज़रत ईसा (अलैहि०) के सिलसिले में मतभेद के शिकार हो गये थे। यह सुनकर आप (सल्ल०) के सहाबियों ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! हम वही करेंगे जिसकी आज्ञा आप हमें देंगे। आप हमें जहां चाहें भेज सकते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपने छह सहाबियों को इस मुहिम के लिए चुना, जिनमें से एक हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा अल-सहमी (रज़ि०) भी थे। उनको फ़ारस के बादशाह किसरा के पास इस्लामी दावत का ख़त ले जाने का भार सौंपा गया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा (रज़ि०) ने अपनी सवारी को तैयार किया। अपने बीवी-बच्चों को अलविदा कहा और अपनी मंज़िल की ओर अकेले केवल अल्लाह के

**अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–"जो व्यक्ति अस्र की नमाज़ से चूक जाता है, उसके सारे काम निरर्थक हो जाते हैं।" (बुख़ारी)**

A WELL WISHER
PATNA

भरोसे रवाना हो गये । कई दिनों की लगातार यात्रा के बाद फ़ारस पहुंचे, बादशाह के साथ मुलाक़ात करने की इच्छा जतायी और दरबार के लोगों को उस पत्र की सूचना दी जो वे बादशाह को देने के लिए ले गये थे । किसरा ने रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के एलची के आने की सूचना पाकर अपने महल को ख़ूब सजाने-संवारने के आदेश जारी किये और फ़ारस के बड़े-बड़े लोगों को अपने दरबार में बुला भेजा । जब सारे लोग आ गये तो किसरा ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा (रज़ि॰) को दरबार में बुला भेजा । हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) फ़ारस के बादशाह के सामने अपनी फटी-पुरानी चादर और खुरदुरा चोग़ा पहनकर उपस्थित हुए । उनके मुखड़े से अरब की सादगी टपक रही थी । लेकिन सिर उठाये हुए और अपना शरीर सीधा किये हुए ऐसी शान से दरबार में दाख़िल हुए कि उनके अंग-अंग से इस्लाम की शान टपक रही थी तथा उनके दिल में ईमान का सुनहला द्वीप प्रकाशमान था ।

किसरा ने उनको आते हुए ज्यों ही देखा, अपने एक आदमी को उनके हाथ से ख़त लेने का इशारा किया । परन्तु उन्होंने उसके हाथ को झटकते हुए कहा : नहीं, मुझे रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने अपना ख़त तुम्हारे हाथ में नहीं, बल्कि बादशाह के हाथों में देने का आदेश दिया है । मैं आप (सल्ल॰) के किसी भी आदेश की अवज्ञा नहीं कर सकता ।

किसरा ने यह सुनकर अपने आदमियों को हुक्म दिया कि उसे मेरे पास आने दो । हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) किसरा के क़रीब आ गये तो उसने वह पत्र आपसे ले लिया । उसके बाद किसरा ने हेयरा के रहने वाले एक अरबी जानने वाले व्यक्ति को बुलाया और ख़त उसे देकर आदेश दिया कि उसके सामने ख़त को पढ़कर सुनाए और बताए कि उसमें क्या लिखा है ? उसने ख़त को खोलकर पढ़ना शुरू कर दिया । उसमें लिखा था–

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा दयावान, अति कृपालु है । यह ख़त मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से फ़ारस के शासक किसरा के लिए है, उस पर सलामती है जिसने हिदायत की पैरवी की ।

इतना सुनना था कि किसरा क्रोध की आग में जल उठा । उसका चेहरा लाल भभूका हो गया और उसकी रगें ग़ुस्से से तन गयीं, क्योंकि नबी करीम (सल्ल॰) ने अपना नाम पहले और उसका नाम बाद में लिखवाया था । फिर अपने अरबी दूत के हाथों से ख़त छीन लिया और यह जाने बिना कि उसमें क्या लिखा है, फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करता जा रहा था और कहता जा रहा था कि मेरे दास की यह हिम्मत कि मुझे इस प्रकार का पत्र लिखे । उसके बाद उसने हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) के बारे में आदेश दिया कि उनको दरबार से निकाल बाहर कर दिया जाए । अतएव उन्हें बाहर कर दिया गया ।

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) किसरा के दरबार से इस हाल में निकले कि उनको यह भी मालूम न था कि उनके साथ क्या होने वाला है । वे क़त्ल कर दिए जाएंगे या उनको आज़ाद छोड़ दिया जाएगा ? लेकिन वे भयभीत नहीं हुए बल्कि यह कहते हुए कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की अमानत अदा कर दी है, अब जो भी होगा देखा जाएगा, अपनी सवारी पर सवार हुए और चलते बने ।

उधर जब किसरा के क्रोध की आग ठंडी हुई तो उसने अब्दुल्लाह (रज़ि॰) को दोबारा दरबार में प्रस्तुत करने का आदेश दिया, लेकिन उनका कुछ अता-पता नहीं मिला । आख़िर में किसरा के हरकारों ने उनको अरब जाने वाले रास्ते में ढूंढ़ा लेकिन वे फिर भी हाथ नहीं आये । जब हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) नबी करीम (सल्ल॰) के पास पहुंचे और किसरा के दरबार में जो कुछ हुआ था उसकी कहानी आप (सल्ल॰) को कह सुनाई तो आप (सल्ल॰) ने केवल इतना कहा : अल्लाह तआला ने उसके देश को टुकड़े-टुकड़े कर दिया ।

रही किसरा की बात तो उसने यमन में नियुक्त अपने उत्तराधिकारी बाजान को लिखा कि हिजाज़ में ज़ाहिर होने वाले व्यक्ति के पास अपने दो अतिविशिष्ट आदमी को भेजो और उनको यह हुक्म दो कि वे उस आदमी को मेरे पास हाज़िर करे । आदेशानुसार बाजान ने अपने दो श्रेष्ठ आदमी को रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के पास एक पत्र देकर भेजा जिसमें लिखा था कि आप (सल्ल॰) विलम्ब किये बिना उन दोनों के साथ किसरा के दरबार में उपस्थित हो जाएं । बाजान ने उन दोनों को यह भी हुक्म दिया कि वे आप (सल्ल॰) के बारे में सूचनाएं इकट्ठी करके उसे बताएं ।

बाजान के भेजे हुए दोनों आदमी तेज़ी से सफ़र करके ताइफ़ पहुंचे और उन्होंने क़ुरैश के कुछ व्यापारी से मुहम्मद (सल्ल॰) के संबंध में पूछा । उन्हें बतला दिया गया कि वे यसरिब में मिलेंगे । इतना कहकर वे व्यापारी ख़ुशी-ख़ुशी

मक्का की ओर चल दिये और मक्का पहुंच कर लोगों में शोर मचाना शुरू किया : खुश हो जाओ । किसरा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पीछे पड़ गया है और तुम्हें उसकी बुराई से निजात दिलाने को आतुर है ।

इधर, बाजान के हरकारों ने मदीना की राह ली और वहां पहुंचकर नबी करीम (सल्ल०) से मिले और बाजान का पत्र आप (सल्ल०) को थमाते हुए कहा कि बादशाहों के बादशाह किसरा ने हमारे आक़ा बाजान को लिखा है कि वे आदमी भेजकर आपको मंगाएं और किसरा के दरबार में पेश करें । अगर आप हमारे साथ चलें तो हम किसरा से गुज़ारिश करेंगे कि वे आपको दंडित न करें । यदि आप इन्कार करते हैं तो फिर आपको मालूम ही है कि वे कितने कठोर हैं और यह भी आपको मालूम है कि वे आपको और आपकी क़ौम को हलाक करने में सक्षम हैं ।

यह सुनकर आप (सल्ल०) ने मुस्कराते हुए कहा कि अभी जाओ और कल फिर मिलो ।

कल जब वे आप (सल्ल०) के पास आये तो कहा : क्या आप किसरा के पास जाने को तैयार हैं ? आप (सल्ल०) ने उत्तर दिया : आज के बाद तुम कभी भी किसरा से नहीं मिल सकोगे, क्योंकि अल्लाह ने खुद उसके बेटे शीरवैह के हाथों उसे क़त्ल करा दिया है और यह घटना फ़लां महीने की अमुक रात में घटी है । यह सुनते ही उन दोनों ने दहशत के मारे आप (सल्ल०) के चेहरे पर अपनी निगाहें गड़ा दीं और कहा : आप होश में तो हैं । यह आप क्या कह रहे हैं ? और क्या, आप जो कुछ कह रहे हैं, उसे हम बाजान के पास लिख भेजें ? आप (सल्ल०) ने जवाब दिया : अवश्य लिख भेजो और उसे यह सूचना भी दे दो कि अल्लाह का धर्म वहां तक पहुंचेगा जहां तक किसरा का साम्राज्य फैला हुआ है । अगर तुम ईमान ले आओगे तो हम तुमको तुम्हारी क़ौम का बादशाह बना देंगे ।

वे दोनों घबड़ाए हुए रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास से निकल कर बाजान के पास पहुंचे और उसे पूरे घटनाचक्र की सूचना दी । घटना का ब्योरा सुनकर उसने कहा कि अगर मुहम्मद (सल्ल०) ने जो कुछ कहा है सही है तो अवश्य ही वह नबी है, अगर नहीं तो हम उसके बारे में कोई दूसरा फ़ैसला लेंगे ।

थोड़े ही दिन गुज़रे थे कि बाजान के पास शीरवैह का ख़त आ गया जिसमें उसने लिखा था कि मैंने अपनी क़ौम का बदला लेने के लिए किसरा की हत्या कर दी है । उसने शरीफ़ों को क़त्ल करना, उनकी औरतों को क़ैद करना और उनकी जायदाद को लूट लेना अपना पेशा बना लिया था ।

जब मेरा ख़त तुम्हारे पास पहुंचे तो तुम वहां के लोगों से मेरी बादशाहत के लिए शपथ ले लो । बाजान ने ख़त पढ़ते ही उसे एक तरफ़ फेंकते हुए इस्लाम क़बूल करने की घोषणा कर दी और उसके साथ यमन में जितने भी पारसी थे, सबने इस्लाम क़बूल कर लिया ।

यह था हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) का फ़ारस के बादशाह किसरा के साथ पेश आने वाला क़िस्सा ।

उनकी रोम के शहंशाह क़ैसर से मुलाक़ात का क़िस्सा क्या है ? उनकी क़ैसर से मुलाक़ात का क़िस्सा हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) की ख़िलाफ़त के ज़माने का है । 19 हिजरी में हज़रत उमर (रज़ि०) ने रोम को फ़तह करने के लिए एक मुस्लिम सैन्य दल भेजा जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा (रज़ि०) भी थे । रोम के बादशाह को मुसलमानों के ईमान की सच्चाई, अक़ीदे की पुख़्तगी और अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के रास्ते में अपनी जान तक हंसते हुए लुटा देने की क्षमता की ख़बर पहले ही मिल चुकी थी, इसलिए उसने अपने फ़ौजी कमांडर को आदेश दे रखा था कि यदि मुसलमान फ़ौजी गिरफ़्तार हों तो उसके सामने उनको ज़िन्दा पेश करे ।

अल्लाह का करना, हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा (रज़ि०) रोमियों के हाथों गिरफ़्तार हो गये । रोमी फ़ौजियों ने उन्हें क़ैसर के सामने पेश कर दिया । क़ैसर उनकी ओर बड़े ग़ौर से देर तक देखता रहा फिर बोला : मैं तुमसे एक बात कहता हूं और वह बात यह है कि तुम ईसाई धर्म क़बूल कर लो, मैं तुम्हें आज़ाद करके किसी ऊंचे पद पर नियुक्त कर दूंगा । हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) ने जवाब दिया : जिस चीज़ की दावत तुम मुझे दे रहे हो उससे हज़ार गुना बेहतर मेरे नज़दीक मौत है । क़ैसर ने कहा : मेरा ख़याल है कि तुम बड़े दिल-गुर्दा वाले इन्सान हो । अच्छा चलो, अगर तुमने मेरी बात मान ली तो मैं तुम्हें अपनी आधी बादशाहत दे दूंगा ।

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) ने मुस्कराते हुए कहा : अल्लाह की क़सम, आधा राज्य क्या ? अगर तुम मुझे मुहम्मद (सल्ल०) के धर्म को एक पल के लिए छोड़ने के बदले अपना पूरा राज्य दे दो, तो भी मैं ऐसा नहीं कर

सकता । क़ैसर ने कहा : तब तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा । शौक़ से, हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने जवाब दिया । उसके बाद क़ैसर ने उन्हें सूली पर खड़ा कर दिया और अपने तीरअंदाज़ को हुक्म दिया कि उनके हाथ के क़रीब तीर मारो । वैसा ही किया गया । साथ ही साथ क़ैसर ने उनको ईसाई बन जाने का परामर्श दिया, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया । अबकी बार उनके पैर के क़रीब तीर मारा गया और ईसाई धर्म ग्रहण करने का मश्विरा दिया गया परन्तु उन्होंने फिर सख़्ती से इन्कार कर दिया । इतना कुछ होने के बाद क़ैसर ने हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) को सूली से उतारने का आदेश दिया और यह भी हुक्म दिया कि एक बड़ी-सी देग में तेल डालो और उसे इतना गर्म करो कि तेल खौलने लगे । वैसा ही किया गया । जब तेल खौलने लगा तो क़ैसर ने दो मुसलमान क़ैदियों को हाज़िर करने का हुक्म दिया । जब क़ैदी आ गये तो उनमें से एक को खौलते हुए तेल में डाल दिया गया । एक ही पल में गोश्त गलकर पानी हो गया और हड्डियों का ढ़ांचा तेल में तैरता नज़र आया । अब क़ैसर हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) की ओर मुड़ा और उनको ईसाई बनने की दावत दी, लेकिन उन्होंने पहले से ज़्यादा सख़्ती से इन्कार कर दिया । जब क़ैसर बिल्कुल निराश हो गया तो उसने हुक्म दिया कि उनको भी उसी तरह खौलते हुए तेल में डालकर भून दिया जाए, जिस तरह उनके दोनों साथियों को भून दिया गया है । जब हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) को देग के पास ले जाया गया तो वे रो पड़े । इसकी सूचना क़ैसर को मिली तो उसने सोचा कि शायद वह मौत से डर गये हैं । यह सोचकर क़ैसर ने आदेश जारी किया कि उनको मेरे पास लाओ । जब हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) क़ैसर के सामने प्रस्तुत किये गये तो एक बार फिर क़ैसर ने उनको ईसाई बन जाने की दावत दी, मगर उन्होंने इस बार और अधिक सख़्ती से इन्कार कर दिया । क़ैसर ने कहा : तुम्हारा बुरा हो, अगर तुम्हें ईसाई नहीं बनना है तो फिर किस लिए रो रहे थे ?

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने उत्तर दिया : इसलिए कि मेरे दिल ने मुझसे कहा कि तुम देग में डाले जा रहे हो, तुम्हारी जान निकल जाएगी, जबकि मेरी तमन्ना यह है कि मेरे शरीर में जितने बाल हैं उतनी मेरी आत्माएं होतीं और तमाम आत्माएं एक-एक करके अल्लाह के रास्ते में इस देग में डाल दी जातीं ।

यह सुनकर कैसर ने कहा : क्या तुम मेरे सर का बोसा ले सकते हो, अगर तुमने ऐसा कर लिया तो मैं तुमको रिहा कर दूंगा ।

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने कहा : और सारे मुसलमान क़ैदियों को भी आज़ाद कर दोगे ? क़ैसर ने इस प्रस्ताव को भी क़बूल कर लिया । हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने दिल में सोचा कि यदि अल्लाह के एक दुश्मन के सिर का बोसा लेता हूं और उससे सारे मुसलमान क़ैदियों को रिहाई मिल जाती है तो इसमें क्या ख़राबी है । यह सोचकर आप क़ैसर के समीप गये और उसके सर पर एक बोसा ले लिया । क़ैसर ने अपने वादे के अनुसार सारे मुस्लिम क़ैदियों को रिहा कर दिया ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा अल-सहमी (रज़ि॰) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) के पास वापस आये और पूरी कथा कह सुनायी । हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) बहुत खुश हुए और कहा : हर मुसलमान पर वाजिब है कि वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा (रज़ि॰) के सिर को बोसा दे, और इसकी शुरुआत मैं करता हूं । यह कहकर हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) खड़े हुए और उनके सिर का एक बोसा ले लिया ।


0291-2658786

HOTEL
Crown Plaza

A/C & Non A/C Air Cooled
Rooms & Dormitory

Opp. Minerva Centre,
Railway Station Road, Jodhpur-342001 (Raj.)
Cell : 9784856007, 9414110345

½ km from the railway station

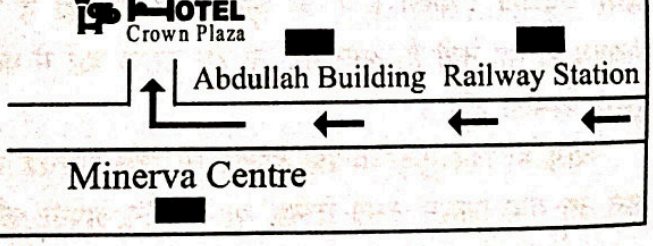

# इस्लाम का इतिहास

आमतौर पर यह समझा जाता है कि इस्लाम 1400 वर्ष पुराना धर्म है और इसके 'प्रवर्तक' पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) हैं । लेकिन वास्तव में इस्लाम 1400 वर्षों से काफ़ी पुराना धर्म है । उतना ही पुराना जितना धर्ती पर स्वयं मानवजाति का इतिहास और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) इसके प्रवर्तक (Founder) नहीं, बल्कि इसके आह्वाहक हैं । आपका काम उसी चिरकालीन (सनातन) धर्म की ओर, जो सत्य धर्म के रूप में आदिकाल से 'एक' ही रहा है, लोगों को बुलाने, आमंत्रित करने और स्वीकार करने के आह्वान का था । आपका मिशन, इसी मौलिक मानव धर्म को इसकी पूर्णता के साथ स्थापित कर देना था ताकि मानवता के समक्ष इसका व्यावहारिक रूप साक्षात् रूप में आ जाए ।

इस्लाम का इतिहास जानने का अस्ल माध्यम स्वयं इस्लाम का मूल ग्रंथ 'क़ुरआन' है । और क़ुरआन, इस्लाम का आरंभ प्रथम मनुष्य 'आदम' से होने का ज़िक्र करता है । इस्लाम धर्म के अनुयायियों के लिए क़ुरआन ने 'मुस्लिम' शब्द का प्रयोग हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के लिए किया है जो लगभग 4000 वर्ष पूर्व एक महान पैग़म्बर (संदेष्टा) हुए थे ।

हज़रत आदम (अलैहि॰) से शुरू होकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) तक हज़ारों वर्षों पर फैले हुए इस्लामी इतिहास में असंख्य ईशसंदेष्टा ईश्वर के संदेश के साथ, ईश्वर द्वारा विभिन्न युगों और विभिन्न क़ौमों में नियुक्त किये जाते रहे । उनमें से 26 के नाम क़ुरआन में आये हैं और बाक़ी के नामों का वर्णन नहीं किया गया है । इस अतिदीर्घ शृंखला में हर ईश-संदेष्टा ने जिस सत्य धर्म का आह्वान दिया वह 'इस्लाम' ही था, भले ही उसके नाम विभिन्न भाषाओं में विभिन्न रहे हों । बोलियों और भाषाओं के विकास का इतिहास चूंकि क़ुरआन ने बयान नहीं किया है इसलिए 'इस्लाम' के नाम विभिन्न युगों में क्या-क्या थे, यह ज्ञात नहीं है ।

इस्लामी इतिहास के आदिकालीन होने की वास्तविकता समझने के लिए स्वयं 'इस्लाम' को समझ लेना आवश्यक है । इस्लाम क्या है, यह कुछ शैलियों में क़ुरआन के माध्यम से हमारे सामने आता है, जैसे–

1. इस्लाम, अवधारणा के स्तर पर 'विशुद्ध एकेश्वरवाद' का नाम है । यहां 'विशुद्ध' से अभिप्राय है–ईश्वर के व्यक्तित्व, उसकी सत्ता व प्रभुत्व, उसके अधिकारों (जैसे उपास्य व पूज्य होने के अधिकार आदि) में किसी अन्य का साझी न होना । विश्व का...बल्कि पूरे ब्रह्माण्ड और अपार सृष्टि का यह महत्वपूर्ण व महानतम सत्य मानवजाति की उत्पत्ति से लेकर उसके हज़ारों वर्षों के इतिहास के दौरान अपरिवर्तनीय, स्थायी और शाश्वत रहा है ।

2. इस्लाम शब्द का अर्थ 'शान्ति व सुरक्षा' और 'समर्पण' है । इस प्रकार इस्लामी परिभाषा में इस्लाम नाम है, ईश्वर के समक्ष, मनुष्यों का पूर्ण आत्मसमर्पण और इस आत्मसमर्पण के द्वारा व्यक्ति, समाज तथा मानवजाति के द्वारा 'शान्ति व सुरक्षा' की उपलब्धि का । यह अवस्था आरंभकाल से तथा मानवता के इतिहास हज़ारों वर्ष लंबे सफ़र तक, हमेशा मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता रही है ।

इस्लाम की वास्तविकता, एकेश्वरवाद की हक़ीक़त, इन्सानों से एकेश्वरवाद के तक़ाज़े, मनुष्य और ईश्वर के बीच अपेक्षित संबंध, इस जीवन के पश्चात (मरणोपरांत) जीवन की वास्तविकता आदि जानना एक शान्तिमय, सफल तथा समस्याओं, विडम्बनाओं व त्रासदियों से रहित जीवन बिताने के लिए हर युग में अनिवार्य रहा है । अतः ईश्वर ने हर युग में अपने सन्देष्टा (ईशदूत, नबी, रसूल, पैग़म्बर) नियुक्त करने (और उनमें से कुछ पर अपना 'ईशग्रंथ' अवतरित करने) का प्रावधान किया है । इस प्रक्रम का इतिहास, मानवजाति के पूरे इतिहास पर फैला हुआ है ।

4. शब्द 'धर्म' (Religion) को, इस्लाम के लिए क़ुरआन ने शब्द 'दीन' से अभिव्यक्त किया है । क़ुरआन में कुछ ईशसन्देष्टाओं के हवाले से कहा गया है (42:13) कि ईश्वर ने उन्हें आदेश दिया कि वे 'दीन' को स्थापित (क़ायम) करें और इसमें भेद पैदा न करें, इसे (अनेकानेक

धर्मों के रूप में) टुकड़े-टुकड़े न करें ।

इससे सिद्ध हुआ कि इस्लाम 'दीन' हमेशा से ही रहा है । उपरोक्त संदेष्टाओं में हज़रत नूह (अलैहि०) का उल्लेख भी हुआ है और हज़रत नूह (अलैहि०) मानवजाति के इतिहास के आरंभिक काल के ईश-सन्देष्टा हैं । कुरआन की उपरोक्त आयत (42:13) से यह तथ्य सामने आता है कि अस्ल 'दीन' (इस्लाम) में भेद, अन्तर, विभाजन, फ़र्क़ आदि करना सत्य-विरोधी है—जैसा कि बाद के ज़मानों में ईश-सन्देष्टाओं का आह्वान व शिक्षाएं भुलाकर, या उनमें फेर-बदल, कमी-बेशी, परिवर्तन-संशोधन करके इन्सानों ने अनेक विचारधाराओं व मान्यताओं के अन्तर्गत 'बहुत से धर्म' बना लिए ।

मानव प्रकृति प्रथम दिवस से आज तक एक ही रही है । उसकी मूल प्रवृत्तियों में तथा उसकी मौलिक आध्यात्मिक, नैतिक, भौतिक आवश्यकताओं में कोई भी परिवर्तन नहीं आया है । अतः मानव का मूल धर्म भी मानवजाति के पूरे इतिहास में उसकी प्रकृति व प्रवृत्ति के ठीक अनुकूल ही होना चाहिए । इस्लाम इस कसौटी पर पूरा और खरा उतरता है । इसकी मूल धारणाएं, शिक्षाएं, आदेश, नियम...सबके सब मनुष्य की प्रवृत्ति व प्रकृति के अनुकूल है । अतः यही मानवजाति का आदिकालीन तथा शाश्वत धर्म है ।

कुरआन ने कहीं भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को 'इस्लाम धर्म का प्रवर्तक' नहीं कहा है । कुरआन में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का परिचय नबी (ईश्वरीय ज्ञान की ख़बर देने वाला), रसूल (मानवजाति की ओर भेजा गया), रहमतुल्लिल-आलमीन (सारे संसारों के लिए रहमत व साक्षात अनुकंपा, दया), हादी (सत्य पथ-प्रदर्शक) आदि शब्दों से कराया है ।

स्वयं पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने इस्लाम धर्म के 'प्रवर्तक' होने का न दावा किया, न इस रूप में अपना परिचय कराया । आप (सल्ल०) के एक कथन के अनुसार 'इस्लाम के भव्य भवन में एक ईंट की कमी रह गयी थी, मेरे (ईशदूतत्व) द्वारा वह कमी पूरी हो गयी और इस्लाम अपने अन्तिम रूप में सम्पूर्ण हो गया' (आपके कथन का भावार्थ ।) इससे सिद्ध हुआ कि आप (सल्ल०) इस्लाम धर्म के प्रवर्तक नहीं हैं । (इसका प्रवर्तक स्वयं अल्लाह है, न कि कोई भी पैग़म्बर, रसूल, नबी आदि)। आप (सल्ल०) ने उसी इस्लाम का आह्वान किया जिसका, इतिहास के हर चरण में दूसरे रसूलों ने किया था । इस प्रकार इस्लाम का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना मानवजाति और उसके बीच नियुक्त होने वाले असंख्य रसूलों के सिलसिले (शृंखला) का इतिहास ।

यह ग़लतफ़हमी फैलने और फैलाने में कि इस्लाम धर्म की उम्र कुल 1400 वर्ष है दो-ढाई सौ वर्ष पहले लगभग पूरी दुनिया पर छा जाने वाले यूरोपीय (विशेषतः ब्रिटिश) साम्राज्य की बड़ी भूमिका है । ये साम्राज्यी, जिस ईश-संदेष्टा (पैग़म्बर) को मानते थे ख़ुद उसे ही अपने धर्म का प्रवर्तक बना दिया और उस पैग़म्बर के अस्ल ईश्वरीय धर्म को बिगाड़ कर, एक नया धर्म उसी पैग़म्बर के नाम पर बना दिया । (ऐसा इसलिए किया कि पैग़म्बर के आह्वाहित अस्ल ईश्वरीय धर्म के नियमों, आदेशों, नैतिक शिक्षाओं और हलाल-हराम के क़ानूनों की पकड़ से स्वतंत्र हो जाना चाहते थे, अतः वे ऐसे ही हो भी गये ।)

यही दशा इस्लाम की भी हो जाए, इसके लिए उन्होंने इस्लाम को 'मुहम्मडन-इज़्म (Muhammadanism)' का और मुस्लिमों को 'मुहम्मडंस (Muhammadans)' का नाम दिया जिससे यह मान्यता बन जाए कि मुहम्मद 'इस्लाम के प्रवर्तक (Founder)' थे और इस प्रकार इस्लाम का इतिहास केवल 1400 वर्ष पुराना है। न कुरआन में, न हदीसों (पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल० के कथनों) में, न इस्लामी इतिहास-साहित्य में, न अन्य इस्लामी साहित्य में...कहीं भी इस्लाम के लिए 'मुहम्मडनइज़्म' शब्द और इस्लाम के अनुयायियों के लिए 'मुहम्मडन' शब्द प्रयुक्त हुआ है, लेकिन साम्राज्यों की सत्ता-शक्ति, शैक्षणिक तंत्र और मिशनरी-तंत्र के विशाल व व्यापक उपकरण द्वारा, उपरोक्त मिथ्या धारणा प्रचलित कर दी गयी ।

भारत के बाशिन्दों में इस दुष्प्रचार का कुछ प्रभाव भी पड़ा, और वे भी इस्लाम को 'मुहम्मडन-इज़्म' मान बैठे। ऐसा मानने में इस तथ्य का भी अपना योगदान रहा है कि यहां पहले से ही सिद्धार्थ गौतम बुद्ध जी, ''बौद्ध धर्म'' के और महावीर जैन जी ''जैन धर्म'' के 'प्रवर्तक' के रूप में सर्वपरिचित थे । इन 'धर्मों' (वास्तव में 'मतों') का इतिहास लगभग पौने तीन हज़ार वर्ष पुराना है । इसी परिदृश्य में भारतवासियों में से कुछ ने पाश्चात्य साम्राज्यों की बातों (मुहम्मडन-इज़्म, और इस्लाम का इतिहास मात्र 1400 वर्ष की ग़लत अवधारणा) पर विश्वास कर लिया ।

# सोशल मीडिया! नियमों एवं निजता के मध्य संतुलन होना चाहिए

❖ जुनैद अली

प्रत्येक दौर में अपने विचारों को व्यक्त करने, भावनाओं को प्रकट करने और अपने अनुभव से लोगों को परिचित कराने की विशिष्ट पद्धति रही हैं, जिसमें समय के साथ व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता रहा है । सदैव मानव जाति इस जतन में रहीं हैं कि अपने विचारों को अधिक से अधिक प्रभावपूर्ण रूप से प्रसारित कर सकें ।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि मोबाइल व इंटरनेट ने संयोजकता (Connectivity) के अद्‌भुत प्रयोग हमारे सामने रखें जिसके बल पर आज सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भी सहजता से संपर्क साधा जा सकता है और इसी क्रांति का परिणाम यह है कि भारत की एक सौ तीस करोड़ की जनसंख्या के बीच लगभग एक सौ सोलह करोड़ की संख्या में सेलफ़ोन की जीवित जोड़ मौजूद हैं, हालांकि इन आंकड़ों में उन उपभोक्ताओं की संख्या सम्मिलित हैं जो दोहरी सिम का उपयोग करते हैं । इसी के साथ सोशल मीडिया का सशक्त मंच भी अपने अस्तित्व में आया जिसने इन्सानी ताना-बाना को पुनः परिभाषित करते हुए निर्माण व विध्वंस के दो वृहद पक्षों के आधार पर संपूर्ण मानवजाति को विभक्त कर दिया । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया का आंतरिक प्रभाव इतना गहरा हो चुका है कि इससे कोई भी समुदाय अछूता रहा हो ? यह लगभग असंभव है, बल्कि इसके सफ़ेद व स्याह पक्षों से निरंतर प्रभावित होता आ रहा है ।

एक तरफ़ जहां दूरसंचार के नवीन तकनीकी आयामों ने आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक विकास को गति देने के साथ इस माध्यम का सकारात्मक उपयोग लोगों के जीवन को सहज व सशक्त बनाने का श्रेष्ठ औजार बन चुका है, वहीं इसका नकारात्मक प्रभाव व्यक्तिगत व सामाजिक स्तरों एवं राष्ट्रीय सुरक्षा व हितों को लेकर बड़ी चुनौती पेश कर रहा है । इस माध्यम ने सामाजिक स्तरों पर उन्मादी, कृत्रिम व घृणा युक्त भड़काऊ संदेशों को बेलगाम तरीक़े से प्रसारित किया । अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर मनगढ़ंत तर्कों से परिपूर्ण भाषणों, फेक न्यूज़, राष्ट्र-विरोधी गतिविधियां, मानहानि संबंधी प्रविष्ठियां, सामुदायिक एवं जातिगत आक्षेपों व अन्य ग़ैर-क़ानूनी गतिविधियों को अंजाम देने के मामलों में ख़ासा वृद्धि हुई है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय पटल पर सोशल मीडिया के उपयोग के संदर्भ में निजता एवं राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर बहस छिड़ी हुई है । पूर्व में सुप्रीम कोर्ट ने सोशल मीडिया के लिए नियम बनाने को लेकर समय सीमा तय करने के लिए 24 सितम्बर को सरकार से तीन हफ़्ते के भीतर शपथ पत्र जमा करने के लिए कहा था । कोर्ट ने यह भी कहा था कि नियमों को राज्यों की संप्रभुता और लोगों की निजता के मध्य समन्वय बनाने वाला होना चाहिए । इस बारे में केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में कहा है कि वह जनवरी 2020 तक सोशल मीडिया और डिजिटल मीडिया मंचों के लिए


**ANSARI STONE KOTA**

*Deals in :*
ALL TYPES OF SAND STONE
(RED, BLUE, BROWN ETC.)

**MACHINE CUT & HAND CUT SAND STONE**




**KOTA STONE**

*Address :*
RAM NAGAR NEW STONE MANDI
KOTA RAJASTHAN

Mobile : 9829039190, WhatsApp : 9660853702

नये नियमों को अंतिम रूप दे देगी और इन्हें अधिसूचित भी करेगी । सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि इस बारे में नियमों का मसौदा तैयार है, लेकिन अभी अन्य मंत्रालयों से संदर्भित पक्ष को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा किये जाने की आवश्यकता है ।

सोशल मिडिया व इंटरनेट से जुड़े मामलों को अत्यधिक उपयोगी एवं व्यावहारिक बनाने को लेकर इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा दायर शपथ पत्र में कहा गया है कि नये नियमों को लेकर सलाह व सुझाव आमंत्रित किये जा रहे हैं । इस संबंध में मंत्रालय ने यह भी कहा कि सोशल मीडिया संगठनों सहित अन्य हितधारकों के साथ ही कई दौर की बैठक भी हो चुकी है ।

पिछले वर्ष जुलाई 2018 में मद्रास उच्च न्यायालय के समक्ष याचिका दायर करने के साथ इस मामले में कई जनहित याचिकाएं दायर की गयी हैं । याचिकाकर्ता एंटनी क्लेमेंट रुबिन ने सोशल मीडिया ख़ाका के प्रमाणीकरण के लिए इसे आधार या किसी अन्य सरकारी अधिकृत पहचान पत्र से जोड़ने के लिए अदालत से निर्देश मांगा था और इसी तरह की अन्य जनहित याचिकाओं में कहा गया है कि किसी भी व्यक्ति को खाता खोलने की अनुमति देने से पहले फेसबुक, वाट्सएप एवं अन्य सोशल मीडिया मंचों के प्रबंधकों को कुछ इसी तरह के प्रमाण लेने चाहिए ताकि उपयोगकर्ता की सही पहचान साबित हो सकें ।

यदि सोशल मीडिया के उपयोग व उसके परिचालन संबंधित नियमों को कठोर बनाएं जाते हैं तो फिर इस बात की आशंका प्रबल हो जाएगी कि अभिव्यक्ति की आज़ादी पर किसी न किसी रूप में अंकुश लगाया जा सकता है । इसी के साथ निजता को सुरक्षित रख पाना अपने आप में जटिल हो सकता है और आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्य प्रतिस्पर्धात्मक स्तरों पर यह माध्यम उठा-पटक का औज़ार भी बन सकता है ।

यह स्पष्ट है कि सायबर व सोशल मीडिया के व्यावहारिक स्तर को बनाए रखने के लिए योग्य नियमों व शर्तों की आवश्यकता लंबे समय से महसूस हो रही थी लेकिन नियमों व शर्तों के आधार पर अभिव्यक्ति की आज़ादी व निजता के मध्य संतुलन बनाए रखना चाहिए क्योंकि जनतंत्र में जनता की आवाज़ सर्वोपरि होती है और बनाएं गये नियमों के बनिस्बत सभी स्तरों पर जनता के अधिकारों की सुरक्षा होनी चाहिए ।

# त्योहार है

त्योहार है
बीच राह में तम्बू लगा लो
जाम कर दो आम रास्ता
आदमी का निकलना बन्द हो जाए
ढूंढ़े कोई लंबा रास्ता
या बैठा रहे घर में
हमारा तो त्योहार है
पंडाल भी लगेगा
झंडे, बैनर, पोस्टर भी
धर्म के मामले में
दख़ल दिया तो जान पर
बन सकती है ।
इतने कमदिमाग़ होते हैं ये
तथाकथित धर्मान्ध
या जान-बूझकर करते हैं परेशान
न बीमार को ले जा सकते हैं
न खुद ज़रूरी काम से
निकल सकते हैं ।
उस पर चंदा भी चाहिए
वो भी मनमांगा
पूछो तो कहते
धर्म का मामला है, धर्म की होड़ है
इनका धर्म पंडालो, चन्दो और
आम रास्तों पर है
विरोध करो तो कहते हैं
तुम्हारा धर्म क्या है ?
बाक़ी सब भी मौन रहते हैं
डरकर, छिपकर पड़े रहते हैं
भगवान का अता-पता नहीं
इनके लिए ईश्वर डी०जे०
लाउड स्पीकर, पंडाल और रास्ते का घेराव है ।
इनकी पाखंडी भक्ति
कौओं की कांव-कांव है ।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
छिन्दवाड़ा (म०प्र०)

# रक्षक

❖ अबरार मुहसिन

क़स्बे के सिरे पर जहां ऊंची-नीची, कच्ची-पक्की इमारतों का बेतरतीब सिलसिला ख़त्म होता था वहीं मरहूम ज़मींदार रहीम बख़्श की पक्की हवेली सबसे अलग-थलग खड़ी थी । ज़मींदार साहब की ज़िन्दगी में हवेली की सज-धज ही निराली थी । मेहमानख़ाने में सारा दिन क़स्बे वालों की भीड़ किसी न किसी ज़रूरत से ज़मींदार साहब को घेरे रहती थी । कोई लगान में कमी कराने आता, तो कोई रुपये क़र्ज़ मांगता । ज़मींदार साहब दिल के बादशाह थे । वे हर आदमी की ज़रूरत पूरी किया करते थे । रुपये पानी की तरह बहाते । आम ज़मींदारों की तरह उन्होंने काश्तकारों पर कभी कोई ज़ुल्म-ज़्यादती नहीं की, बल्कि उनके दुख-सुख का हमेशा ख़याल रखा । उनकी बीवी अक्सर शिकायत करतीं–

"अगर तुम्हारे यही ढंग रहे तो कौड़ी-कौड़ी को मुहताज हो जाओगे । आख़िर हमारे दो बच्चे हैं, उनके लिए भी तो कुछ इकट्ठा कर लो ।"

रहीम बख़्श हमेशा मुस्कराकर एक ही जवाब देते– "हमारे पैदा करने वाले को वे लोग सख़्त नापसन्द हैं जो सिर्फ़ अपनी ही झोली भरना जानते हैं । देखो हमारे पास जो कुछ भी है वह हमारा नहीं, बल्कि ख़ुदा का दिया हुआ है । इसलिए इसमें ख़ुदा के बन्दों का बराबर का हिस्सा है । उसने हमें इस क़ाबिल बनाया है कि हम दूसरों की ज़रूरतें पूरी करें । ख़ुदा फ़ैयाज़ (दानी) है । उसकी नेमतें हवा, धूप, फल-फूल सबके लिए हैं । चांद-सूरज पूरी फ़राख़दिली के साथ अपनी रौशनी लुटाते हैं । फूलों की भीनी-भीनी ख़ुशबू सबके लिए आम है । न फूल ख़ुशबू देने में कंजूसी करते हैं और न चांद-सूरज रौशनी देने में तंगदिली से काम लेते हैं । फिर इनसान कंजूस क्यों बने ? याद रखो जिसने पैदा किया है वही पालेगा भी, यह जहान उसका है, मेरा नहीं । फिर मैं क्यों कल की परवाह करूं ?" बीवी यह दलील सुनकर चुप हो जाती ।

ज़मींदार साहब जिस क़द्र दौलत ख़र्च करते थे उससे कहीं ज़्यादा आ जाती थी–जिस तरह नदी का पानी हमेशा बहता रहता है, फिर भी उसमें कोई कमी नहीं आती । कुछ वक़्त के लिए पानी ज़रूर घट जाता है, मगर बरसात के मौसम में फिर इतना हो जाता है कि किनारों से सिमटता तक नहीं ।

रात को अंधेरा फैलते ही हवेली में मशालें जल उठती थीं । उसमें दिन-रात क़हक़हे गूंजते थे । मगर वक़्त को चैन नहीं, यह हमेशा करवटें बदलता रहता है । दिन के बाद रात और धूप के बाद छांव–दुनिया का यही दस्तूर है ।

एक बार बरसात का मौसम था । क़स्बे के पास बहने वाली नदी में ज़ोर की बाढ़ आयी हुई थी । ज़मींदार साहब बेगम के साथ नदी के उस पार वाले गांव से कश्ती में वापस लौट रहे थे । बीच में आकर कश्ती उलट गयी और दोनों डूब गये । दोनों बच्चे यतीम हो गये । बच्चों की दुनिया अंधेरी हो गयी । एक साथ मां और बाप दोनों की अचानक मौत का ग़म उन पर पहाड़ बनकर टूटा था । भरी-पूरी दुनिया में अकेले रह गये थे, कोई अपना न था ।

ज़मींदार साहब के ख़त्म होते ही ख़ुदग़र्ज़ लोगों ने बच्चों को कमसिन (कम उम्र) और बेबस समझकर उनके साथ बेगाना (पराया) जैसा सुलूक करना शुरू कर दिया । कुछ ऐसे भी निकले जिन्होंने ज़मींदारी के तमाम काग़ज़ात पार कर लिए । ज़मींदार साहब की ज़िन्दगी भर की सारी इनायतें भुला बैठे । अब मेहमानख़ाने में कोई भीड़ नहीं होती थी । शमा के बुझते ही ख़ुदग़र्ज़ परवाने भी अपनी राह लेते हैं । अब उस हवेली में दिन छिपने के बाद शमाओं का मेला नहीं लगता था, बल्कि हवेली किसी यतीम की तरह अंधेरे में डूबी गुम-सुम खड़ी रहती ।

क़स्बे वाले हमेशा हवेली के बारे में सोचते रहते थे, और इसकी वजह वह दौलत थी जो कुछ भरोसे के लोगों के कहने के मुताबिक़ ज़मींदार साहब ने बच्चों के आड़े वक़्त के लिए हवेली में किसी जगह ज़मीन में छिपाकर रख दी थी । किस जगह ? यह किसी को मालूम न था । हर किसी की यही तमन्ना थी कि वह दौलत उसके हाथ लग जाए ।

उस इलाक़े में बदलू डाकू का बड़ा ज़ोर था । जिस

तरफ़ निकल जाता क़त्ल व ख़ून का बाज़ार गर्म कर देता, जो कुछ हाथ लगता ले जाता । कहा जाता कि "उसके सीने में दिल के बजाय पत्थर का टुकड़ा है ।" दौलत की ख़ातिर उसने न जाने कितने ख़ून बहाए थे । उसे आज तक किसी पर रहम नहीं आया था । लोग उसका नाम सुनकर ही कांप जाते थे । माएं अपने बच्चों को उसका नाम लेकर डराया करती थीं । ज्यों ही रात का अंधेरा गहरा होने लगता, क़स्बे वालों के दिलों की धड़कनें बढ़ जातीं । किसी को मालूम न था कि किस अंधेरे ने बदलू को छुपा रखा है, न जाने कब वह मौत बनकर क़स्बे पर आन पड़े । आस-पास के देहातों में बदलू और उसके साथियों ने बड़ी तबाही मचा रखी थी । बदलू को भी आख़िर ज़मींदार साहब की छुपाई हुई दौलत का पता हो ही गया ।

क़स्बे वालों ने उड़ती-उड़ती ख़बर सुनी कि बदलू इस दौलत के लिए किसी रोज़ हवेली पर डाका मारने वाला है ।

"खुदा हमें अपनी हिफ़ाज़त में ही रखे ।" क़स्बे वालों ने कहा, "कहीं उसका रुख़ हमारी तरफ़ हो गया तो ग़ज़ब हो जाएगा ।"

"वह दोनों बच्चों को क़त्ल कर देगा और हवेली खुदवा डालेगा," एक शख़्स बोला । "खुदा हमारे बच्चों और हमारे घरों की हिफ़ाज़त करे ।" लोगों ने सहम कर दुआएं मांगीं ।

वह बरसात की एक डरावनी रात थी । मूसलाधार बारिश हो रही थी । काले-काले बादल गरज रहे थे । बिजली बार-बार चमक रही थी । चारों तरफ़ गहरा अंधेरा छाया हुआ था । क़स्बे में कोई आवाज़ सुनाई न देती थी सिवाय बारिश के शोर और बिजली के कड़ाकों के ।

ज़मींदार साहब की हवेली के पास कई परछाइयां आकर ठहर गयीं । यह बदलू का गरोह था ।

"तुम लोग यहीं ठहरो ।" बदलू ने अपने साथियों से कहा और चेहरे पर से पानी की बूंदें पोंछने लगा । उस वक़्त उसका चेहरा वाक़ई भयानक लग रहा था ।

वह हवेली की तरफ़ देखता हुआ बोला–

"वह रोशनी देख रहे हो । ज़मींदार के बच्चे उसी तरफ़ हैं । मैं अन्दर दाख़िल होते ही सबसे पहले उन्हें ख़त्म कर दूंगा और रोशनी गुल कर दूंगा, बस तुम भी अन्दर आ जाना । हम हवेली खोद डालेंगे । इस वक़्त कोई भी इधर नहीं आ सकता । इत्मीनान से रात भर दौलत तलाश करेंगे, सुना है काफ़ी माल है ।"

"जो हुक्म सरदार !" साथियों ने सिर हिला दिये ।

"याद रखना ! रोशनी ग़ायब होते ही हवेली में घुस पड़ना । रात अंधेरी है और बच्चे अकेले हैं । बस चन्द लम्हों में उन्हें ठिकाने लगा दूंगा ।" बदलू ने चलते वक़्त कहा, और अंधेरों में गुम हो गया ।

उसके साथी उस कमरे की तरफ़ नज़रें गड़ाए ध्यान लगाकर देखने लगे जिसमें रोशनी नज़र आ रही थी ।

बदलू दीवार पर चढ़कर अन्दर कूद गया और रोशनी वाले कमरे की तरफ़ बढ़ने लगा । वह जानता था कि बच्चों की चीख़-पुकार बारिश के शोर से दब जाएगी । इसके अलावा बदलू के सामने आने की हिम्मत कौन कर सकता था ? बच्चे बिलकुल तनहा थे । उनकी हिफ़ाज़त करने वाली सिर्फ़ हवेली की बेजान दीवारें थीं, जिन्हें वह फांद चुका था । अब बेशुमार माल व दौलत का मालिक वह होगा । उस दौलत का, जो यतीम बच्चों के लिए किसी जगह छिपी हुई थी ।

कमरे के पास पहुंचकर उसके क़दम ठहर गये । अन्दर से बच्चों की बातें करने की आवाज़ें आ रही थीं । एक कोने में चिराग़ जल रहा था ।

दोनों मासूम बच्चे जिनमें एक आठ साल का लड़का और दूसरी छोटी बहन थी, एक-दूसरे से लिपटे हुए थे । बदलू ने जेब से एक लम्बा-सा चाक़ू निकाल लिया ।

"भैया !" बहन डरते हुए बोली–"मुझे छुपा लो, डर लग रहा है । अंधेरी रात है । बड़े ज़ोर से बारिश हो रही है, बादल गरज रहे हैं ।"

"डरो नहीं !" भाई ने इत्मीनान दिलाया हालांकि उसकी आवाज़ भी ख़ौफ़ से कांप रही थी ।

"अगर ऐसे में बदलू यहां आ जाए तो क्या होगा ?" बहन ने फिर कहा, हमारी तो हिफ़ाज़त करने वाला भी कोई नहीं, क़स्बे वाले सब सो रहे हैं ।"

"ऐसा न कहो । हमारी हिफ़ाज़त करने वाला वह है जिसने हमें पैदा किया है, जो बादलों को बरसने का हुक्म देता है । मुन्नी ! वह हमें भूल नहीं सकता । कभी किसी को नहीं भूलता । अम्मां कहा करती थीं कि आदमी खुद अपने आपको भूल सकता है, लेकिन वह सब कुछ देखता रहता है । न उसे ऊँघ आती है और न वह सोता है । उसे इन अंधेरों में भी साफ़-साफ़ नज़र आता है । अब्बा कहा करते थे कि हमें कभी डरना नहीं चाहिए, क्योंकि हमारा रखवाला खुदा है, जो सबसे ज़्यादा ताक़तवर है । इस दुनिया

का हक़ीक़ी बादशाह वही है, हम सब उसके ग़ुलाम हैं। वह हमेशा हमारे साथ रहता है। हमें कभी अकेला नहीं छोड़ता। दिन और रात में, अंधेरों और उजालों में वह हमारे बहुत नज़दीक है। फिर हम क्यों डरें ? जो लोग उस पर यक़ीन नहीं रखते वही अंधेरों से डरते हैं।''

बदलू उनकी बातचीत का एक-एक लफ़्ज़ सुन रहा था। उसके हाथ में खुला हुआ चाक़ू था और दिमाग़ में कौंदे लपक रहे थे। कमरे के अन्दर चिराग़ की लौ कांप रही थी।

''ख़ुदा के अनगिनत फ़रिश्ते हैं। जब ख़ुदा हमारे साथ है तो उसके अनगिनत फ़रिश्ते भी हमारे साथ हैं। हम अकेले कहां हैं !'' लड़का बोला, ''बस अब उसका नाम लेकर सो जाओ। कुछ भी नहीं होगा, हम सो जाएंगे, मगर वह जागता रहेगा, हमेशा से जाग रहा है।''

''यह चिराग़ बुझने वाला है।'' बहन ने कहा।

''उसे भी वही जलाएगा।'' भाई की आवाज़ आयी। ''क्या तुमने नहीं देखा आसमान पर उसने लाखों चिराग़ जला रखे हैं, जो कभी नहीं बुझते। इन काले बादलों के पीछे वे इस वक़्त भी जल रहे हैं। क्या वह हमारे नन्हें से चिराग़ को एक रात भी नहीं जला सकता ?''

बदलू के ज़ेहन में बादल गरज़ रहे थे, दिल में तूफ़ान उठ रहा था और चाक़ू वाला हाथ कांप रहा था।

बच्चे ख़ामोश हो गये। थोड़ी देर में वे नींद की गोद में चले गये। बदलू गुम-सुम खड़ा चिराग़ को देख रहा था जो बस बुझने ही वाला था। बदलू जल्दी से कमरे में दाख़िल हुआ और चिराग़ के पास पहुंच गया। बत्ती जल चुकी थी। उसने चाक़ू की नोक से बत्ती ऊपर की तरफ़ सरका दी। रोशनी एकदम बढ़ गयी। बदलू की आंखों से आंसुओं के दो मोती लुढ़क पड़े, फिर न जाने क्यों आंसुओं की झड़ी लग गयी।

उसने सोते हुए बच्चों के मासूम चेहरों की तरफ़ देखा। वे बेख़बर थे। उन्हें अंधेरी रात की परवाह न थी और न बदलू का ही डर था। बदलू कांप गया। उसे महसूस हुआ कि वे अकेले नहीं उनके साथ फ़रिश्तों की एक लम्बी क़तार मौजूद है।

उसने आगे बढ़कर चाक़ू जेब में रख लिया और झुककर दोनों की पेशानियां चूम लीं।

''मेरे बच्चो !'' धीरे से बड़-बड़ाया। ''सुकून की नींद सोते रहो हज़ार बदलू भी तुम्हारा बाल बाका नहीं कर सकते। बदलू के पास सिर्फ़ ज़ुल्म की ताक़त है, मगर तुम्हारे साथ वह सबसे ज़बरदस्त ताक़त है जो अंधेरों में चिराग़ जलाती है। उस सबसे बड़ी ताक़त ने आज बदलू को ख़त्म कर दिया। इत्मीनान से सोते रहो। तुम बिलकुल महफ़ूज़ हो। मैं जानता हूं कि क़स्बे के लोग भी इस दौलत को हासिल करना चाहते हैं, जो तुम्हारे बाप ने कहीं छिपा दी है। हो सकता है कुछ शैतान इस अंधेरी रात में वह दौलत हासिल करने इधर आ निकलें। मगर तुम बेफ़िक्र सोते रहना। बदलू सारी रात तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा। आगे भी हर अंधेरी रात में वह हवेली के आस-पास मौजूद रहेगा, ताकि यतीम बच्चों की दौलत महफ़ूज़ रहे।''

यह कहकर वह दबे पांव बाहर निकल आया। बिजली चमकी तो उसने देखा कि एक छोटी-सी दीवार में से कुछ ईंटें बारिश के ज़ोर से उखड़कर गिर पड़ी थीं। वहीं चांदी के बहुत से सिक्के भी बिखरे पड़े थे। दौलत उसी दीवार में छिपी थी। बदलू ने वे सिक्के दीवार में जमाकर उन ईंटों को मज़बूती के साथ उसी जगह लगा दिया।

उसके साथी सारी रात बारिश में खड़े कमरे की रोशनी बुझने का इन्तिज़ार करते रहे। एक बार रोशनी बिलकुल ही धीमी हुई, मगर फिर तेज़ हो गयी थी। वे हैरान थे कि बदलू, इतना ज़बरदस्त डाकू, दो बच्चों को ख़त्म नहीं कर सका। जब बारिश थमी तो क़स्बे में मुर्ग़ों की बांग सुनायी देने लगी। उन्होंने देखा कि बदलू दीवार फलांगकर बाहर आ रहा है।

''वे अकेले नहीं हैं !'' बदलू साथियों के नज़दीक आकर बोला, ''उनके साथ बहुत बड़ी ताक़त है। कमरे वाली रोशनी भी कभी नहीं बुझेगी। चलो, भाग चलें। उस सबसे बड़ी ताक़त ने बदलू का क़त्ल कर दिया।''

डाकू हैरानी से बदलू का मुंह तकते हुए उसके साथ चले गये।

क़स्बे वाले भी हवेली से डरने लग गये, क्योंकि उन्होंने अंधेरी रातों में उसके आस-पास एक साया मंडराते देखा है, जिसे वे भूत या शैतान समझते हैं और दोनों बच्चों को यक़ीन है कि वह कोई फ़रिश्ता है, जो उनके चिराग़ को रात के वक़्त बुझने नहीं देता। उस दिन के बाद से उस दीवार की ईंटें कभी नहीं गिरीं जिसने उन यतीम बच्चों की अमानत छुपा रखी है।

लोगों का कहना है कि बदलू मर गया, क्योंकि अब कभी डाका नहीं पड़ता और बदलू जानता है कि लोग ठीक ही कहते हैं।

हज़रत अबू मूसा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "बूढ़े मुसलमान का आदर करना और क़ुरआन के हाफ़िज़ जो न क़ुरआन में अतिश्योक्ति से काम ले और न उसके विरुद्ध उसका आचरण हो और न्यायशील शासक का आदर करना वास्तव में अल्लाह तआला के प्रताप एवं गरिमा के आदर करने का एक हिस्सा है ।"
(अबू दाऊद)


***A Well Wisher***

**ARARIA**

# वाइल्ड ब्रूक : जंगल के बीच से गुज़रती अल्हड़ नदी

जंगल के बीचों बीच बहती एक छोटी पहाड़ी नदी, 'वाइल्ड ब्रूक' का यही तो अर्थ है और अपने इस अर्थ के स्वप्निल दृश्य प्रस्तुत करता है 'वाइल्ड ब्लू रिट्रीट'। बेहद ख़ूबसूरत नलानी वादी में हिमालय की तलहटियों में स्थित, हरिद्वार से महज़ 24 किलोमीटर दूर स्थित यह 'इकोलॉज' या रिसॉर्ट 'इको टूरिज़्म' की परिभाषाओं पर खरा उतरता है। 'इको टूरिज़्म', पर्यटन का एक बेहद उत्कृष्ट स्वरूप है । ऐसा मित्रवत पर्यटन जो उस इलाक़े की संस्कृति और पर्यावरण को भ्रष्ट किये बिना, उस इलाक़े की प्राकृतिक और आर्थिक समृद्धि में इज़ाफ़ा करे । ऐसा पर्यटन जो उस क्षेत्र के लिए फलदायी हो, मगर वहां के निवासियों के जीवन और संस्कृति में छेड़छाड़ किये बिना । भारत में इको टूरिज़्म के नाम से अभी बस आरंभिक प्रयास ही चल रहे हैं, अगर हमें अपने पर्यावरण को संवारते हुए अपनी विविध सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखते हुए पर्यटन का मज़ा लेना है तो हमें अपना दृष्टिकोण बदलने की ज़रूरत है ।

वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट इको टूरिज़्म की दिशा में एक बड़ा क़दम है । अनछुए जंगलों से घिरे इस रिसॉर्ट के क़रीब से एक नदी की धारा गुज़रती है । निस्संदेह यह बहुत आदर्श स्थान है अपने सप्ताहांतों या छुट्टियों को यादगार बनाने का। प्रकृति के क़रीब बल्कि प्रकृति की गोद में रहने की मनुष्य की चिरप्राचीन चाहत को अगर आप ताज़ा करना चाहते हैं तो एक बार वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट में ज़रूर जाएं । जंगली-पहाड़ी नदी के मनमोहक दृश्य और उसके पीछे अलसाया घना हरा जंगल आपका मनमोह लेगा ।

भंवरों की गुंजन, नदियों की कलकल, हवाओं की गुनगुनाहटें, चिड़ियों की चहचहाहटें, जंगल की अलसायी करवट, ये सारे स्वर जो आपने महज़ गीतों, कविताओं में सुने होंगे यहां वादी में प्रतिगूंज बनकर उभरते हैं ।

ऋषिकेश यहां से सबसे क़रीबी रेलवे स्टेशन है । नयी दिल्ली का इंदिरा गांधी एयरपोर्ट सबसे नज़दीक इंटरनेशनल एयरपोर्ट है और दिल्ली के पालम एयरपोर्ट से घरेलू उड़ानों द्वारा देहरादून के जॉली ग्रांट एयरपोर्ट तक भी आया जा सकता है । हालांकि हमें हरिद्वार सबसे सुविधाजनक लगा था क्योंकि दिल्ली से हरिद्वार तक पांच घंटे का कार का आरामदेह सफ़र रहा था । बीच-बीच में मनोरम दृश्य भी देखने को मिले थे । दिल्ली हाईवे से हरिद्वार के निकट भूमानंद चौक तक पहुंचकर हम बाईं ओर चंडीदेवी पुल पर मुड़ गये थे, जो कि गंगा नदी पर बना है, फिर हम चिला के लिए बाईं ओर मुड़े और नहर के किनारे ड्राइव करते हुए कौड़िया गांव तक पहुंचे, वहां हमने विंध्यवासिनी मंदिर के लिए पूछा । आधा किमी 'टेडों नदी' के किनारे चलते हुए हमें दाईं तरफ़ स्थित 'वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट' दिख़ गया था ।

यहां पहुंच कर अब आप चाहें तो जंगल के बीच बनी कॉटेजेज में रहें या जंगल की आहटों करवटों का आनन्द लेना चाहते हैं तो टेंट का लुत्फ़ लें ।

यहां के टेंट और कॉटेजेज बड़े और आरामदेह हैं, इनमें आधुनिक उपकरणों सहित सारी सुविधाएं हैं, जो कि जंगल के बीचों बीच आपके निवास को आरामदेह बनाती हैं । अटैच्ड बाथरूम्स, फायरप्लेस । बाहर प्राकृतिक छटा और भीतर पारंपरिक आंतरिक सज्जा ।

जंगल के बीचों-बीच आप भारतीय और कांटिनेंटल दोनों तरह के खानों का मज़ा ले सकते हैं । सर्दियों की शामों में बारबेक्यू और बॉनफायर पुराने दिनों का आनन्द लौटा लाती हैं । खाने के आनन्द को दुगुना करती है, जंगल की पुकारें, चाहे वह हिरणों की ख़तरे के लिए आगाह करती पुकार हो या खुद बाघ या तेंदुए की । इस रिट्रीट में छोटी-सी लाइब्रेरी भी, जो वन, प्रकृति और पर्यटन से सम्बद्ध किताबों से लैस है ।

वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट आकर आप ख़ाली नहीं बैठ सकते, आप ख़ाली बैठकर केवल प्रकृति का संसर्ग चाहें तो अलग बात है । अन्यथा यहां आप बहुत-सी रोमांचक गतिविधियों का मज़ा ले सकते हैं ।

सुबह-सुबह का वक़्त जीप सफारी और एलीफेंट सफारी के लिए बेहतरीन है, क्योंकि वाइल्ड ब्रूक राजाजी नेशनल पार्क के चिला गेट से महज़ 15 किमी की दूरी पर स्थित है । नेशनल पार्क के गेट से घुसते ही जंगल की हरकतें और वन्य जीवन की झांकियां दिखायी देने लगती है। जीप सफारी के लिए जिप्सी का इस्तेमाल होता है जिसमें आपके साथ में एक प्रशिक्षित प्रकृतिविद् भी रहता है । ये

'सफारी' आपके आग्रह पर मोतीचूर, चिला या राजाजी नेशनल पार्क की दूसरी रेंजेज में भी आपके लिए आयोजित की जा सकती है। एलीफेंट सफारी की सुविधा 'चिला गेट' से है, जो कि हाथियों के उपलब्ध होने पर निर्भर करती है।

राजाजी नेशनल पार्क 15 नवम्बर से 30 जून तक खुला रहता है, लेकिन दूसरे मौसमों का अपना लुत्फ़ है सो वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट पूरे साल अपने मेहमानों के स्वागत में तत्पर रहता है।

वाइट वाटर राफ्टिंग यह पवित्र गंगा की लहरों पर आयोजित किया जाता है, जो कि वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट से 38 किमी दूर से आरंभ होकर ऋषिकेश पर जाकर समाप्त होती है। यहां पर नौसीखियों और दक्ष रिवर राफ्टर्स दोनों के लिए रिवर राफ्टिंग की सुविधा है। यहां सुरक्षित, सुविधाजनक और उच्च स्तरीय उपकरणों का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि सुरक्षा के साथ-साथ रोमांचक अनुभव भी लिया जा सके। आस-पास के इलाक़े में बहुत से ऐसे नदी के सूखे किनारे हैं जहां पर सायकिल चलाने का मज़ा भी आप ले सकते हैं। पहाड़ों पर स्थित एकांत, शांत सुन्दर मंदिर हमारी अस्तित्व को आध्यात्मिक पुकार से भर देते हैं, तो यहां पहाड़ी की चोटी पर मंदिर भी है और एक पनचक्की भी जिससे गेहूं पीसा जाता है। इन दोनों स्थानों तक आप पैदल चलकर पहुंच सकते हैं।

बर्ड वाचिंग, वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट की सबसे दिलअज़ीज़ गतिविधि है। यहां 400 क़िस्म के पक्षी देखने को मिलते हैं। किसी ख़ास वर्ग के पक्षियों को देखने के लिए विशेष आग्रह पर आपके लिए ट्रिप भी आयोजित हो जाती है। हॉर्नबिल्स, रेड जंगल फाउल, सनबर्डस और जंगली उल्लू तो वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट के स्थायी मेहमान हैं।

यहां से हरिद्वार और ऋषिकेश 24 और 18 किमी दूरी पर है, इसलिए आप अपनी आध्यात्मिक क्षुधा शांत करने के लिए वहां भी जा सकते हैं। दोनों पवित्र स्थानों पर सुन्दर प्राचीन मंदिर और स्वच्छ धवल गंगा के सुन्दर घाट हैं, पवित्र स्नान के लिए।

इस सबके अतिरिक्त, वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट के होस्ट आपको हिमालय की ट्रेकिंग, नाइट सफारी, जंगल कैम्पिंग, पहाड़ी सैर की सुविधा के अतिरिक्त भी बहुत-सी रोमांचक गतिविधियां उपलब्ध करवाते हैं।

इस इकोलॉज के प्रबंधक और ऑनर मनोज कुलश्रेष्ठ हैं, जो कि एक अनुवांशिकी वैज्ञानिक हैं, प्लांट ब्रीडिंग के विशेषज्ञ हैं, मगर वन्य-जीवन और ख़ास तौर पर पक्षियों के प्रति प्रेम उन्हें पर्यावरण संरक्षण तथा इकोटूरिज़्म की तरफ़ ले आया। वे बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, आर॰एस॰पी॰बी॰, बर्ड लाइफ़ इंटरनेशल जैसी बड़ी और कुछ स्थानीय पर्यावरण संस्थाओं से भी जुड़े रहे हैं। उन्होंने कई जरनल्स और अख़बारों, पत्रिकाओं में इस विषय पर लेख लिखे हैं। इस पक्षी अन्वेषण शौक़ तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति निष्ठा के चलते उन्हें भारत के महत्वपूर्ण पक्षी बहुल इलाक़ों में जाने का अवसर मिला है, यह यायावरी करते हुए उन्हें महसूस हुआ कि अब समय आ गया है कि ईको टूरिज़्म जैसे जागरूक पर्यावरण पर्यटन को हमारे देश में भी शुरू किया जाए ताकि लोग जंगली इलाक़ों की तरफ़ रुख़ करें और अस्ली जंगल से परिचित हों साथ ही इनमें जंगलों और पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा हो। इससे स्थानीय जंगलों और संस्कृतियों को अधिक से अधिक इनके प्राकृतिक स्वरूप में संरक्षित किया जा सके और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी सुधारा जा सके, बिना प्रकृति और संस्कृति के साथ छेड़छाड़ किये। इसी विचार ने उन्हें प्रेरित किया और राजाजी नेशनल पार्क के निकट, हिमालय की गोद में, गंगा नदी के किनारे ऋषिकेश और हरिद्वार के निकट 'वाइल्ड ब्रूक रिट्रीट' की स्थापना की।

**वाइल्ड ब्रूक** : जंगल के बीच से गुज़रती अल्हड़ नदी।

(प्रस्तुति : **मनीषा कुलश्रेष्ठ**)

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित। फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

**संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद**

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

**KANTI**
**Current A/c. No. :0990839195**
IFS Code : IDIB000J029
Indian Bank, Jamia Millia Islamia branch
New Delhi 110025
कृपया पैसा जमा करने के बाद फोन न. 011-26949430, मोबाइल न. 9818799223 या ई मेल : managerkantidelhi@gmail.com पर अवश्य सूचित करें।

رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا

اپنے بچوں کو ایسی تعلیم دیجیے

جو انھیں اس دنیا میں سر اٹھا کر جینے کا سلیقہ سکھائے

اور آخرت میں جنّت الفردوس کا وارث بنائے!

اسلامی ماحول میں عصری تعلیم

کے لیے

# الحراء پبلک اسکول شریف کالونی، پٹنہ

*Contemporary Education in Islamic Atmosphere*

# AL-HIRA PUBLIC SCHOOL

A unit of Iqra Educational & Welfare Trust

★ CLASSES-I TO VIII & HIFZ
★ ENGLISH MEDIUM
★ CBSE CURRICULUM
★ HOSTEL FACILITY

**SHARIF COLONY, PATNA - 800006**

Ph. No.: 0612-2660644 & 6531127

www.alhirapatna.net email: alhirapatna@gmail.com

Posted on 20-21 November 2019
December 2019
Posted Delhi RMS Delhi-110006
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.11.2019
Total pages 52 with Cover

हिन्दी भाषियों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति
NEW DELHI-110025

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

VISION 2026
Creating Partnership with the Needy

MAKE A WARM WINTER
FOR POOR & NEEDY

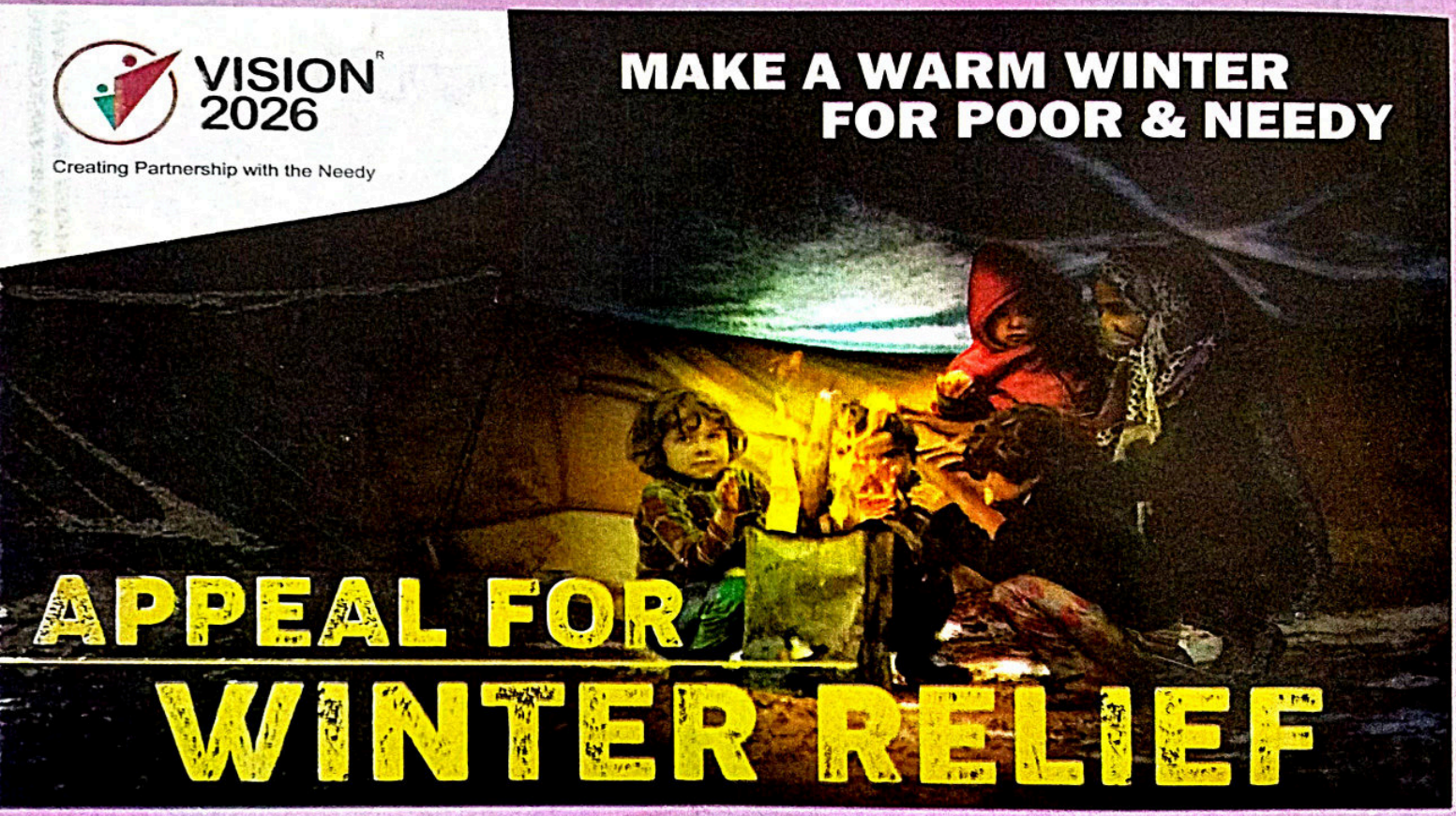

APPEAL FOR
WINTER RELIEF

BLANKET
DISTRIBUTION
PROGRAM 2019-20

DONATE A BLANKET
500 INR

DEPOSIT YOUR CONTRIBUTION
SOCIETY FOR BRIGHT FUTURE

CURRENT A/C NO.
6318812353

BANK
INDIAN BANK
JAMIA MILLIA ISLAMIA, NEW DELHI-25

IFSC
IDIB000J029

(EMAIL US THE DETAIL OF TRANSACTION WITH POSTAL ADDRESS AT ACCOUNT@HWFINDIA.ORG OR WHATSAPP 7042892026)

SOCIETY FOR BRIGHT FUTURE
E-89, 4th Floor, Hari Kothi Lane, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi - 110025 (India)
Email : info@sbfindia.org, Phone : +91 11 29945999 | Mb : +91 70428 98307 | 70428 98310

vision2026in
www.vision2026.org.in